प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-३

प्रथम संस्करण, विक्रमाब्द २०१५; शकाब्द १८८०; खृष्टाब्द १९५८

मूल्य सजिल्द २.५०

मुद्रक
तारा प्रकाशन प्राइवेट लि०
गया

वक्तव्य

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से अबतक प्रकाशित हुई अनूदित पुस्तकों में प्रस्तुत पुस्तक का चौथा स्थान है। परिषद् की अनुवाद-योजना के अन्तर्गत जिन पुस्तकों के अनुवाद की व्यवस्था की गई थी, उनमें अँगरेजी के तीन थीसिसों के अनुवाद प्रकाशित[1] हो चुके हैं और एक थीसिस[2] का अनुवाद हो रहा है। संस्कृत के एक ग्रंथ[3] का अनुवाद निकल चुका है और दूसरे के अनुवाद में हाथ लग गया[4] है। जर्मन से अनूदित एक ग्रंथ छप रहा है[5] और फ्रेंच से अनूदित यह नाटक हिन्दी-संसार के सामने उपस्थित है। इनके अतिरिक्त अँगरेजी के एक ग्रंथ[6] और दक्षिण-भारत के चार प्रमुख भाषाओं के रामायण-ग्रन्थों के अनुवाद का काम चालू है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अभावों की पूर्त्ति और उसके साहित्य-भाण्डार की समृद्धि-वृद्धि के लिए भारतवर्ष और विदेशों की प्रमुख भाषाओं के महत्त्व-शाली ग्रंथों का अनुवाद होना परमावश्यक है। यदि अनुवाद प्रामाणिक और बोधगम्य हो, तथा अनुवादक वस्तुतः मूल विषय के विशेषज्ञ एवं अधिकारी विद्वान् हों, तो मौलिक ग्रन्थ से अनूदित ग्रंथ का महत्त्व कम नहीं है।

परिषद् ने देशी-विदेशी भाषाओं के कई चुने हुए ग्रंथों के अनुवाद का काम सुयोग्य विद्वानों को सौंपा, पर उनमें से कुछ ग्रंथों के अनुवाद भी तैयार न हो सके। अनुवाद-कार्य में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि समर्थ अनुवादकों को, सौंपा हुआ काम पूरा करने के लिए, यथेष्ट अवकाश नहीं मिलता। अबतक का अनुभव यही बतलाता है कि अनुवाद का काम बड़े परिश्रम का है और श्रमसाध्य कार्य में अनुभवी विद्वानों की प्रवृत्ति या दिलचस्पी न होने से अनुवाद के काम में सन्तोषप्रद प्रगति नहीं हो पाती।

यदि अनुवाद का काम कराने के लिए अनुभवी विद्वानों पर निर्भर न रहकर नवसिख अनुवादकों से काम लिया जाय, तो भी अनुवाद की प्रामाणिकता की जाँच के लिए उन्हीं विद्वानों का सहारा ढूँढना पड़ेगा। अनुवाद का निरीक्षण-परीक्षण और विधिवत् संशोधन-सम्पादन भी बड़ा उत्तरदायित्वपूर्ण काम है। वह काम भी जिम्मेदारी के साथ करनेवाले सज्जन बहुत कम हैं। इस तरह अनुवाद-कार्य में कई तरह की ऐसी बाधाएँ हैं,

---

१. सन्त दरिया : एक अनुशीलन—डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। शैवमत—डा० यदुवंशी। प्राङ्मौर्य बिहार—डॉ० देवसहाय त्रिवेद।
२. भोजपुरी भाषा का ध्वन्यात्मक तत्त्व—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद।
३. काव्य-मीमांसा (राजशेखर)—पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत।
४. कथा-सरित्सागर— ,, ,, ,, ,,।
५. प्राकृत-भाषाओं का व्याकरण (पिशल)—डॉ० हेमचन्द्र जोशी।
६. प्रिन्सिपुल्स अफ् लिटररी क्रिटिसिज्म (रिचर्ड्स)—प्रो० नलिनविलोचन शर्मा।

जिनके कारण तेजी से काम आगे नहीं बढ़ने पाता। अनुवाद के कितने ही नमूने परिषद् में ऐसे आये हैं, जो हिन्दी-पाठकों के लिए दुर्बोध प्रतीत हुए। वैसे अनुवादों का सम्पादन होना भी कठिन ही है। ग्रंथ-सम्पादन-कार्य कराने में परिषद् को जो कटु अनुभव हुए हैं, वे प्रकाश में लाने योग्य नहीं हैं।

हिन्दी में ऐसे अनुवादों की आवश्यकता है, जो हिन्दी-पाठकों को मूल विषय से सुगमतापूर्वक परिचित करा सकें। केवल हिन्दी के माध्यम से अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक पाठक के सामने यदि अनुवाद एक उलझनदार समस्या बनकर रह गया, तो उस अनुवाद से कोई लाभ नहीं। इसलिए मौलिक ग्रंथ लिखने से भी अधिक कठिन-कठोर अनुवाद-कार्य है। परिषद् ने शुरू से ही इस बात पर ध्यान रखा है कि अनुवाद जो प्रकाशित हों वे विश्वसनीय हों, अधिकारी व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किये गये हों और केवल हिन्दी जाननेवाले वाचकवृन्द के लिए भी सुबोध हों।

प्रस्तुत नाटक का अनुवाद परिषद्-सदस्य डॉक्टर कामिल बुल्के ने ऐसी सरल भाषा में किया है कि हिन्दी-मात्र के ज्ञाता पाठक भी मूल नाटककार की प्रतिभा के चमत्कार का आनन्द भलीभाँति उपलब्ध कर सकते हैं। विद्वान् अनुवादक ने मूल फ्रेञ्च-भाषा से इस नाटक का अनुवाद किया है, अँगरेजी अनुवाद से नहीं। उन्होंने इस प्रतीकात्मक नाटक का भारतीकरण करने में बड़े कौशल का परिचय दिया है। योरप के पशु पक्षी, वृक्ष-लता-पुष्प आदि के भारतीय नाम देने में उनकी सावधानता और सफलता सचमुच सराहनीय है। उन्होंने अपने 'प्राक्कथन' में इस नाटक पर संक्षेप में जो कुछ लिखा है, वह पाठकों के लिए संकेत-मात्र है। यदि नाटक पढ़ने से पहले ही पाठकों को इसकी सारी विशेषताएँ बतला दी जातीं तो संभवतः इसके अध्ययन से उनका स्वयमुपलब्ध आनन्द कुछ कम हो जाता।

पाठकों की जिज्ञासा-शान्ति के लिए अनुवादक का सचित्र परिचय यथास्थान प्रकाशित है। मूल रचयिता और उनके द्वारा निर्मित साहित्य का परिचय भी अनुवादक ने अपने प्राक्कथन में दे दिया है तथा नाटककार का जो भव्य चित्र इस पुस्तक में छपा है, उसे अनुवादक ने ही फ्रांस से मँगाया था।

आशा है कि हिन्दी-पाठकों को एक विश्वविदित कृति का मनोऽनुकूल अनुवाद पढ़कर स्वाभाविक सन्तोष होगा और वे सुख की खोज में भटकने के बदले अपने चारों ओर के वातावरण को ही ऐसा बना लेने का प्रयत्न करेंगे, जिसमें सुख-शान्ति व्याप्त रह सके।

ज्येष्ठ-पूर्णिमा, शकाब्द १८८०;
१९५८ ई०

शिवपूजन सहाय
(संचालक)



ब्लू-बर्ड (नील-पंछी) के मूल लेखक—मॉरिस मेटरलिंक

प्राक्कथन

'नील-पंछी' के रचयिता मॉरिस मैटरलिंक (Maurice Maeterlinck) का जन्म सन् १८६२ ई० में २९ अगस्त को, बेलजियम के इस्ट फ्लैंडर्स प्रांत की राजधानी घेंट (Ghent) में हुआ था। उन्होंने अपनी समस्त शिक्षा अपने जन्मस्थान में ही पाई थी। पहले जेसुईट-संघ के हाइ स्कूल में और बाद में घेंट के राजकीय विश्वविद्यालय में। सन् १८८७ ई० में वे पेरिस चले आये। यद्यपि वे अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् घेंट लौटे, तथापि उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय फ्रांस में ही बिताया।

फ्लेमिश (Flemish) होते हुए भी उन्होंने फ्रेंच में ही लिखा है। वे विशेष रूप से अपने नाटकों के लिए स्मरणीय हैं, किन्तु उनकी रचनाओं में कविता-संग्रह, अनुवाद तथा दार्शनिक निबंध भी सम्मिलित हैं। सन् १९११ ई० में उन्हें साहित्य का नोबेल-पुरस्कार मिला। उनका देहान्त दक्षिण फ्रांस के 'निस' नगर में सन् १९४९ ई० में हुआ था।

सन् १८८७ ई० में पेरिस पहुँचकर वे प्रतीकवादी कवियों के संसर्ग में आये। दो साल बाद उन्होंने Serres Chaudes नामक एक कविता-संग्रह प्रकाशित कराया था। उनकी इस प्रथम रचना का कोई विशेष स्वागत नहीं हुआ। सन् १८९० ई० में वे अपने प्रथम नाटक के प्रकाशन-द्वारा प्रसिद्धि पा सके। उस ग्रन्थ के प्रकाशित होते ही एक समालोचक ने लिखा—"मैं श्री मॉरिस मैटरलिंक के विषय में कुछ भी नहीं जानता........मैं इतना ही जानता हूँ कि कोई भी मनुष्य इनसे अधिक अज्ञात नहीं है; और यह भी जानता हूँ कि उन्होंने एक ग्रंथ-रत्न की सृष्टि की है।"

उक्त ग्रंथ-रत्न सर्वप्रथम प्रतीकवादी नाटक था। बात यह थी कि प्रतीकवाद से फ्रेंच-कविता में नवजीवन का संचार तो हुआ था, किन्तु इब्सन तथा वैगनेर की लोकप्रियता के कारण अबतक किसी प्रतीकवादी को नाटक-साहित्य में पदार्पण करने का साहस नहीं हुआ था।

अपने प्रथम नाटक की सफलता से प्रोत्साहित होकर वे तीस वर्ष तक प्रतीकवादी नाटक-साहित्य की सृष्टि करते रहे। यद्यपि आजकल के समालोचक उनके नाटकों में कृत्रिमता, अत्यन्त साधारण प्रतीकों का बाहुल्य, लम्बे-लम्बे दार्शनिक संवाद, पुनरावृत्तियाँ आदि दोषों का उल्लेख करते हैं; तथापि उन नाटकों का अभिनय बहुत समय तक अत्यधिक लोकप्रिय रहा है तथा उनके निबंध-संग्रह भी पाठकों को आकर्षित करने में समर्थ सिद्ध हुए। अपने निबंध-संग्रहों में वे अपने नाटकों का विश्लेषण करते हैं तथा आध्यात्मिक जीवन की समस्याओं पर चिंतन करते हैं।

उनके नाटकों की कथा-वस्तु प्रायः कम महत्त्व रखती है। उनके नायक और नायिकाएँ नियति से संघर्ष नहीं करते, वे प्रायः नियति को समझने का निष्फल प्रयत्न करने के पश्चात् उसके सामने नतमस्तक होकर उसे स्वीकार ही कर लेते हैं।

'नील-पंछी' उनकी सबसे लोकप्रिय रचना है। सन् १९५० ई० तक इसकी एक लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी थीं। इसमें यह दिखलाया गया है कि घर में यदि सुख नहीं मिला तो यह विश्व-भूमण्डल में कहीं भी नहीं मिल सकेगा।

इस नाटक की भाषा अतीव सरल है तथा प्रतीक भी बोधगम्य हैं। अनुवाद में भी मैंने मूल रचना की सरल भाषा का पूरा ध्यान रखा है। मेरे सहयोगी श्रीराघवप्रसाद पाण्डेय, एम्० ए० ने समस्त पाण्डुलिपि पढ़कर भाषा-सम्बन्धी बहुमूल्य सुझाव दिये हैं। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

आशा है, पाठक प्रस्तुत रचना-द्वारा मैटरलिंक की कला के दर्शन कर सकेंगे। उनकी एक विशेषता यह है कि वे बच्चों को भी हँसा सकते हैं तथा साथ-साथ बड़ों को भी गंभीर चिंतन के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

वास्तव में इस नाटक के अनेक दृश्य ऐसे हैं, जिनसे सहृदय पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकेगा।

पाण्डुलिपि तैयार करने में अपने प्रिय शिष्य नृसिंह श्रीवास्तव से जो सहायता मिली थी, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूँ।

मूल लेखक की मुख्य रचनाएँ—

कविता-संग्रह—

Serres Chaudes (१८८९)
Douze Chansons (१८९६)

नाटक—

La Princesse Maleine (१८९०)
L' Intruse (१८९१)
Les Aveugles (१८९१)
Pelleas Et Melisande (१८९२)
Alladine Et Palomides; Interieur;
La Mort De Tintagiles (तीनों कठपुतली मंच के लिए रचित तथा १८९४ ई० में प्रकाशित)
Aglavaine Et Selysette (१८९६)
Ariane Et Barbe Bleue (१९०१)
Soeur Beatrice; Monna Vanna;
Joyzelle; L'oiseau Bleu (१९०७)
Marie Magdeleine (१९०९)
Le Miracle De St Antoine
Le Bourgmestre De StilMondg (१९२०)

निबंध-संग्रह—

Le Tre'sor Des Humbles (१८९६)
La Sagesse Et La Destine'e (१८९८)
La Vie Des Abeilles; L'Intelligence
Des Fleurs; La Vie De L'Espace (१९२८)
La Vie Des Fourmis (१९३०)
Devant Dieu (१९३४)

अनुवाद—

१. अँगरेजी से—Macbeth

२. फ्लेमिश से—L'Ornement Des Noces Spirituelles De Ruysbroeck.

३. जर्मन से—Les Disciples A Sais Et Les Fragments De Novalis

पटना, २८-३-५८

कामिल बुल्के



अनुवादक—डॉ० कामिल बुल्के

अनुवादक-परिचय

रेवरेण्ड डॉक्टर कामिल बुल्के का जन्म सन् १६०६ ई० में, १ सितम्बर को, बेल्जियम के वेस्ट-फ्लेण्डर्स प्रान्त में, हुआ था। अपने जन्म-स्थान के निकट के प्रसिद्ध नगर ब्रूजस (Bruges) में आपने हाइ स्कूल तक की शिक्षा पाई। सन् १६३० ई० में लुवेन (Louvain) के विश्वविद्यालय में इञ्जीनियरिङ्ग के ग्रैजुएट हुए। उसी साल जेसुईट-संघ में प्रवेश किया। यह संघ कैथोलिकों की संस्था है, जिसमें सुशिक्षित और विद्याव्यसनी विरक्त साधु रहते हैं। संघ में सम्मिलित होने के बाद जर्मनी में तीन वर्षों तक दर्शन-शास्त्र का तथा विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंस्टाइन के सापेक्षवाद को समझने के लिए उच्च गणित का भी अध्ययन किया।

आपके मन में भारत-यात्रा की तीव्र इच्छा थी। उपर्युक्त संघ के नियमानुसार भारत में आकर अध्यापन-कार्य करना ही अनिवार्य था। अतः सन् १६३५ ई० में आप भारत चले आये। दार्जिलिंग और गुमला (राँची) में रहकर अध्यापन करते रहे। उन्हीं दिनों संस्कृत और हिन्दी पढ़ने की अभिलाषा जगी। दार्जिलिंग के पास करसियाङ्ग में, सन् १६३६ ई० से १६४२ ई० तक, रहकर धर्मविज्ञान का विशेष अनुशीलन किया। इसी अवधि में हिन्दी की 'विशारद'-परीक्षा में उत्तीर्ण हुए (१६४० ई० में) और धर्मशास्त्र की शिक्षा समाप्त होने पर पुरोहिताभिषेक हुआ।

कलकत्ता-विश्वविद्यालय से संस्कृत में बी० ए० होने के बाद आपने सन् १६४५ ई० में प्रयाग-विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम्० ए० की डिग्री पाई। प्रयाग-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभागाध्यक्ष डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा के आग्रह से उत्साहित होकर शोध-कार्य करने लगे। शोध का विषय रहा—रामकथा का विकास। इसी थीसिस पर सन् १६४६ ई० में डी० फिल्० की उपाधि मिली। यह थीसिस प्रयाग-विश्वविद्यालय की हिन्दी-परिषद् से 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' के नाम से प्रकाशित है। रामकथा पर आज भी अनुसंधान करते रहते हैं। 'रामकथा' का दूसरा संवर्द्धित संस्करण तैयार हो रहा है, जो आगामी वर्ष प्रकाशित होगा।

सन् १६५० ई० से आप राँची (बिहार) के सेण्ट जेवियर्स-कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के भी सदस्य हैं। आपकी निम्नलिखित रचनाएँ अबतक प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) द थीज्म अफ् न्याय-वैशेषिक—ओरियण्टल इंस्टिट्यूट, कलकत्ता।

(२) रामकथा : उत्पत्ति और विकास—हिन्दी-परिषद्, प्रयाग।

(३) ए टेक्निकल इंगलिश-हिन्दी-ग्लासरी—धार्मिक साहित्य-समिति, राँची। *

(४) रामकथा-सम्बन्धी गवेषणात्मक निबन्ध फ्लेमिश, फ्रेंच, अँगरेजी और हिन्दी की प्रतिष्ठित शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

---

* इसका दूसरा परिवर्द्धित संस्करण राजकमल-प्रकाशन (दिल्ली) द्वारा प्रकाशित होने जा रहा है।

पात्र-पात्री-परिचय

नीलू (बालक)
नीली (बालिका)
नीलू-नीली की माँ
नीलू-नीली के पिता
नीलू-नीली के दादा
नीलू-नीली की दादी
नीलू-नीली के भाई-बहन
ज्योति
परी (विजया अथवा वैजयंती); उसकी बच्ची
शिशु, नन्हा शिशु , नील शिशु
कुत्ता (मोती), बिल्ली, खरगोश, साँड़, गाय, बैल, सूअर, भेड़, घोड़ा, गधा, भेड़िया, मुर्गा, पक्षी
रोटी, जल, चीनी, दूध
अनल, रात्रि
बड़, साल, पीपल, सेमर, देवदार, पलाश, नीम, शीशम, लता, झाड़,
सुख, स्थूल सुख, स्थूलतम सुख, मातृस्नेह, समझने-का आनंद,
न्यायी-होने-का आनंद, अप्रत्यक्ष-सौंदर्य-देखने-का आनंद
काल

नील-पंछी

प्रथम अंक

लकड़हारे का मकान

[लकड़हारे के मकान का भीतरी भाग। मामूली तथा देहाती, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि उसमें से निर्धनता झाँक रही हो। चूल्हे पर कुछ ईंधन। रसोई के बर्तन, एक आलमारी, रोटी सेंकने का तावा, जल-कल, दीवाल पर घड़ी; चर्खा आदि। एक टेबुल भी है जिसपर दीपक जल रहा है। अलमारी की बगल में एक कुत्ता और एक बिल्ली हैं। दोनों अपनी नाक और पूँछ को घुसाये सो रहे हैं। उनके बीच में एक चीनी का बड़ा टुकड़ा पड़ा है। वह नीला और श्वेत दीख रहा है। दीवाल पर एक ओर पिंजड़ा लटक रहा है। उसमें एक कपोत है। उस घर में भीतर से बन्द होनेवाली दो खिड़कियाँ भी हैं। एक खिड़की के सामने एक तिपाई रखी है। उसकी बाईं ओर मकान का दरवाजा है। उसमें एक बड़ी सिटकिनी भी है। दाहिनी ओर एक दूसरा दरवाजा है। दीवाल में लगाकर ऊपर जाने की एक सीढ़ी रखी हुई है। दाहिनी ओर बच्चों के दो पलंग हैं। दो कुर्सियाँ पड़ी हैं, जिनमें कपड़े तह कर रखे हुए हैं। परदे के उठने पर बालक नीलू और बालिका नीली दोनों खाट पर घोर निद्रा में सो रहे हैं। उनकी माता उनके अंगों पर कपड़ा ढक देती है। और वह यह दृश्य दिखलाने के लिए अपने पतिदेव को इशारे से बुलाती है, वह आकर अपना सिर कमरे के भीतर घुसाता है। माँ अपने अधरों पर उँगली रखकर उन्हें मौन रहने का संकेत कर रही है। वह दीपक बुझाकर दाईं ओर चली जाती है। क्षण-भर के लिए कमरा अंधकार से भर उठता है। पर खिड़की से शनैः-शनैः कमरे में धुँधला प्रकाश प्रवेश कर रहा है। दीपक भी पुनः जलने लगता है, परन्तु रोशनी का रंग कुछ दूसरा ही है। तत्काल नीलू और नीली जग जाते हैं, और उठकर अपनी-अपनी खाट पर बैठ जाते हैं।]

नीलू—नीली ?

नीली—नीलू ?

नीलू—तुम सो रही हो ?

नीली—और तुम ?

नीलू—मैं तो तुमसे बातें कर रहा हूँ, सो कैसे सकता ?

नीली—आज बड़ा दिन है न ?

नीलू—अभी नहीं, कल होगा। लेकिन इस वर्ष प्रभु कुछ भी नहीं लायेंगे।

नीली—क्यों ?

नीलू—माँ कह रही थीं कि मुझे शहर में उन्हें खबर देने की फ़ुरसत न मिल सकी……। अगले बरस तो आवेंगे ही……………।

नीली—अगले बरस में अभी बहुत देर है क्या ?
नीलू—काफी देर है। वे तो आज रात धनी बच्चों के पास आनेवाले ही हैं।
नीली—सचमुच ?
नीलू—देखो तो···माँ दीपक बुझाना भूल ही गई।·······मुझे एक बात सूझी है।
नीली—क्या कहा ?
नीलू—यही कि अब हमलोग उठ जायेंगे·······।
नीली—मना है जी।
नीलू—सुनो, अभी तो यहाँ कोई भी नहीं है।···खिड़की देख रही हो न···?
नीली—कितना प्रकाश है।
नीलू—यह तो उत्सव का प्रकाश है।
नीली—किस उत्सव का ?
नीलू—सामने के घर में, धनी बच्चों के उत्सव का। देखती हो वह विटप*। हम खिड़की खोल दें।
नीली—क्या ऐसा कर सकते हो ?
नीलू—जरूर, क्यों नहीं। हमलोगों को कौन रोक सकता है·······। यह संगीत की ध्वनि तुम सुन रही हो न !···चलो अब हम उठ जायें।

[दोनों बच्चे उठ जाते हैं। एक खिड़की की ओर दौड़ पड़ते हैं। एक तिपाई पर चढ़कर खिड़की खोल देते हैं। कमरा देदीप्यमान प्रकाश से प्रदीप्त हो उठता है। और बच्चे ललचाई दृष्टि से देखने लगते हैं।

नीलू—हमलोग तो अब सब कुछ देख सकते हैं·······।
नीली—(तिपाई पर इसे कम जगह मिल रही है)—मैं तो नहीं देखती·······।
नीलू—बर्फ पड़ रही है। देखो, दो रथ आ गये हैं। एक-एक में छः-छः घोड़े जुते हैं।
नीली—अरे हाँ, इनसे बारह छोटे बालक निकल रहे हैं।
नीलू—तुम मूर्ख हो नीली।···वे बालक नहीं हैं, वे तो बालिकाएँ हैं···।
नीली—वे सब पैंट-कमीज में हैं।
नीलू (तिपाई पर पूरा अधिकार जमाये हुए है)—अरे, तुम तो बहुत जगह ले रही हो !
नीली—खूब कहा तुमने। मुझे जगह कहाँ।
नीलू—अच्छा, अब चुप रहो ! मैं विटप को देख रहा हूँ···।
नीली—कौन-सा विटप···?
नीलू—क्यों, वही क्रिस्मस-विटप।··· तुम तो दीवाल को देख रही हो, तब भला कैसे जान सकोगी।···
नीली—भाई, मैं तो दीवाल की ओर इसलिए ताक रही हूँ कि मुझे जगह नहीं है···।
नीलू (तिपाई पर बहुत थोड़ी जगह उसे दे देता है)—ठीक है न···! अब तो तुम मुझसे अधिक जगह ले रही हो। उधर देखो, प्रकाश ही प्रकाश है।

---

*बड़े दिन के अवसर पर उपहार देने के लिए घर के भीतर एक वृक्ष लगाया जाता है, जिसकी डालियों में अनेक उपहार बाँधकर लटका दिये जाते हैं।

नीली—देखो तो वे लोग इतनी आवाज क्यों कर रहे हैं ?····
नीलू— वे सब तो संगीतज्ञ हैं ।
नीली—वे क्रुद्ध हैं क्या ?
नीलू— वे क्रुद्ध कहाँ हैं । उन्हें बहुत परिश्रम करना है ।
नीली—अरे, सफेद घोड़ों का दूसरा रथ ।····
नीलू— चुप ! चुप !!···· केवल देखो ।····
नीली—देखो तो डालियों से कौन-कौन-सी सुनहली चीजें झूल रही हैं ?
नीलू— खिलौने हैं । तलवार, बंदूक, सिपाही, तोप आदि····।
नीली—और गुड़िया ? बताओ तो वहाँ कोई गुड़िया भी है ?
नीलू— क्या कहा,····गुड़िया ? अरे मूर्ख ! गुड़िया कौन पूछता है ?
नीली—तब फिर टेबुल पर क्या रखी है ?
नीलू— रसगुल्ले, फल, हलवा ।
नीली—छुटपन में एक बार खाने को मिला था ।
नीलू— हाँ, मुझे भी । रोटी से अच्छा होता है । लेकिन थोड़ा ही मिलता है ।
नीली—उनके पास तो अधिक हैं । मेज उससे अच्छी तरह भरी है···· । क्या वे सब कुछ चट कर जायेंगे ?····
नीलू— जरूर, और क्या ?
नीली—शीघ्र ही चट क्यों नहीं कर देते ?····
नीलू— इसीलिए कि उन्हें भूख नहीं है ।
नीली (आश्चर्यचकित)—उन्हें भूख नहीं ? क्यों नहीं ?
नीलू— अरे भाई ! वे जब-जब चाहते हैं खा सकते हैं ।
नीली—रोज-रोज !
नीलू— कहा तो ऐसा ही जाता है ।
नीली—क्या सब-कुछ खा जायँगे । जरा सा भी नहीं देंगे ?
नीलू—किसे ?
नीली—हमलोगों को ?
नीलू—हूँ, हमलोगों को जानते भी नहीं···· ।
नीली—यदि हमलोग उनसे माँगें ?
नीलू—कतई नहीं ।
नीली—क्यों नहीं ? ····
नीलू—ऐसा करना मना है ।
नीली (ताली बजाकर)—अहो, कितने सुन्दर हैं ।
नीलू (उल्लसित)—देखो न, वे हँसी के बादल उड़ाते ही जा रहे हैं ।····
नीली—हाँ, और बच्चे नाच भी रहे हैं ।····
नीलू—हाँ, हाँ, हम भी नाचें । (हर्षोद्रेक से दोनों तिपाई पर पैर पटकने लगते हैं ।)
नीली—वाह, अच्छा तमाशा है !

नीलू—अरे, वे रसगुल्ले गपकने लगे ।....
नीली—बच्चों को भी तो देखो ! .... दो-तीन-चार मिल रहे हैं ।....
नीलू (आनन्द-विभोर)—अहा ! कितना अच्छा है !....कितना बढ़िया, कितना मीठा है ।....
नीली (काल्पनिक रसगुल्लों की गणना करती हैं)—मुझे एक दर्जन मिल गया है ।
नीलू—मेरे पास एक दर्जन को कौन कहे ! चार दर्जन हैं ! ....किन्तु तुम्हें भी दूँगा !....

[मकान के द्वार पर कोई खटखटाता है]

नीलू (स्तंभित और आतंकित)—अरे, यह क्या है ?
नीली (भयभीत मुद्रा में)—पिताजी होंगे ।

[बच्चे द्वार नहीं खोलते; वह अपने-आप खुल जाता है । और एक बुढ़िया हरे रंग की साड़ी और लाल ओढ़नी ओढ़े प्रवेश करती है । वह कुबड़ी, लँगड़ी और कानी है । उसकी लंबी-टेढ़ी नासिका ऐसी लगती है, जैसे उसकी ठुढी को स्पर्श करने के लिए आगे बढ़ रही हो । वह झुककर लाठी के सहारे चलती है । निश्चय ही वह कोई परी है ।]

परी—क्या यहाँ तुम्हारे पास गानेवाली घास है या नील-पंछी ?
नीलू—हाँ, घास हमारे पास है । पर वह गाती नहीं । ....
नीली—नीलू के पास एक पक्षी है ।
नीलू—हूँ ! मैं इसे किसी को नहीं दे सकता ।
परी—क्यों नहीं ? ....
नीलू—इसीलिए कि वह मेरा है ।
परी—इसीलिए नहीं देते । अच्छा, पक्षी कहाँ है ? ....
नीलू (पिंजड़े की ओर संकेत करता है)—पिंजड़े में .... ।
परी (पक्षी को निरखने के लिए चश्मा लगा लेती है)—ऊँ-हूँ !.... यह फीके नीले रंग का है । ऐसा मैं नहीं चाहती । मेरे मन के लायक तुम्हें खोजना होगा ।
नीलू—मैं नहीं जानता कि वह कहाँ मिलेगा .... ।
परी—मैं भी नहीं जानती । इसलिए तुम जरूर पता लगाओ । गानेवाली घास को जाने दो । लेकिन मुझे नील-पंछी की बड़ी जरूरत है । मेरी बेटी के लिए इसकी जरूरत है । वह सख्त बीमार है ।
नीलू—कौन-सी बीमारी है ?
परी—कोई भी ठीक से नहीं जानता । वह आनन्द चाहती है ।
नीलू—हूँ ।
परी—मैं कौन हूँ ? तुम जानते हो ?
नीलू—आप तो हमारी पड़ोसिन श्रीमती विजया के समान मालूम पड़ती हैं !
परी (अकस्मात् क्रुद्ध होकर)—झूठ ! .... कोई भी समानता नहीं है .... तुम्हारी बात असहनीय है । .... तुम जानते नहीं, मैं परी हूँ । मेरा नाम वैजयन्ती है ।
नीलू—ओहो ! बहुत अच्छा । ....
परी—अभी प्रस्थान करना होगा । ....
नीलू—आप भी हमलोगों के साथ चलेंगी ?

परी—मैं नहीं जा सकती; क्योंकि सुबह अंगीठी पर झोल चढ़ा चुकी हूँ। यदि एक घंटे से अधिक उसे छोड़ दूँगी तब तो उबलकर वह जायगा। (**वह क्रमशः छत, धुआँकश और खिड़की की ओर अंगुली दिखाकर पूछ रही है**) तुम इस मार्ग से, या उस मार्ग से चले जाओगे ? ····

नीलू (**संकोच से दरवाजे की ओर संकेत करते हुए**)—मैं इसी रास्ते से बाहर जाऊँगा···· ।

परी (**पुनः क्रोध से तमतमा उठती है**)—यह एकदम असंभव है। और यह बहुत बुरी आदत है। (**खिड़की की ओर संकेत करती हुई**)—हम इस रास्ते से जायँगे। अच्छा, देर क्यों लगाते हो, जल्दी कपड़े पहन लो। (**दोनों बच्चे हुक्म मानकर जल्दी कपड़े पहनने लगते हैं**) मैं नीली की सहायता करूँगी।····

नीलू—कैसे जायँ ! ···· हमारे पास जूते नहीं हैं।

परी—जूते नहीं हैं, तो क्या हुआ। मैं तुम्हें जादू की एक टोपी दूँगी। तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं ?

नीलू (**दाईं ओर के द्वार की ओर संकेत करता हुआ**)—वे वहाँ सो रहे हैं···· ?

परी—अच्छा, और तुम्हारे दादा-दादी ?

नीलू—वे तो मर गये हैं।

परी—और तुम्हारे छोटे भाई-बहन ?

नीलू—हाँ, हमारे तीन छोटे भाई हैं।

नीली—और चार बहनें भी···· ।

परी—ये सब कहाँ हैं ?

नीलू—वे भी सब-के-सब मर गये हैं।

परी—तुम उन्हें फिर देखना चाहते हो ?

नीलू—हाँ, हाँ, ! तुरंत ! उन्हें दिखलाइए।

परी—वे मेरी थैली में तो नहीं हैं। लेकिन तुम भाग्यशाली हो। जब स्मृति-प्रदेश से होकर जाने लगोगे, तब उन्हें देखोगे···· ।
नील-पंछी के रास्ते में ही तीसरे चौराहे के बाद, बाईं ओर। जब मैं द्वार खटखटा रही थी, उस समय तुम क्या कर रहे थे ?

नीलू—हमलोग उस समय खेल-खेलकर रसगुल्ले खा रहे थे···· ।

परी—तुम्हारे पास रसगुल्ले हैं ? ···· कहाँ हैं ?

नीलू—धनी बच्चों के भवन में हैं। देख लें। बहुत सुन्दर हैं।

[**वह परी को खिड़की की ओर खींचता है**]

परी (**खिड़की के समीप**)—किन्तु खानेवाले ये दूसरे हैं।

नीलू—हाँ ! लेकिन हम उन्हें खाते हुए तो देख सकते हैं।

परी—तुम उनसे वैर नहीं करते ?

नीलू—क्यों ?

परी—क्योंकि वे तो सब कुछ खा रहे हैं। मेरी समझ में उनसे भारी भूल हुई है। तुम्हें भी देना चाहिए था।

नीलू—नहीं, नहीं। वे तो अमीर हैं। कहिए, उनका मकान सुन्दर है न !

परी—तुम्हारे मकान से तो सुन्दर नहीं है।

नीलू—हाय राम ! ....यहाँ की जगह तो बहुत तंग और अन्धकारपूर्ण है। रसगुल्ला एक भी नहीं है।

परी—अरे नहीं, दोनों एक ही है। लेकिन तुम्हीं नहीं देख सकते।

नीलू—जी नहीं। मैं खूब अच्छी तरह से देख सकता हूँ। मेरी आँखें बहुत तेज हैं। घंटा-घर का समय बता सकता हूँ जिसे पिताजी भी नहीं बता पाते।

परी (एकाएक क्रुद्ध होकर)-सच कहती हूँ। तुम नहीं देख सकते। मुझे कैसा देखते हो? मैं कैसी लग रही हूँ। **(नीलू संकुचित होता है)** बताओ तो सही। तब पता लगेगा कि तुम देख सकते हो कि नहीं। मैं सुन्दर हूँ अथवा कुरूप ! **(नीलू का गहरा मौन)** उत्तर नहीं दोगे ? मैं गोरी हूँ अथवा पीली ? शायद कूबड़ भी देखते हो !

नीलू—ना, ना, यह तो कोई खास बड़ा है ही नहीं।

परी—तेरा चेहरा देखकर ऐसा लग रहा है कि वह बहुत बड़ा ही है। क्या मेरी नाक टेढ़ी दिखाई देती है ? क्या मैं बाईं आँख की कानी हूँ ?

नीलू—नहीं, मैं तो ऐसा नहीं कहता, किन्तु .... किन्तु इसे किसने निकाला है ?

परी (और क्रुद्ध बनकर)—यह तो बिलकुल ठीक है। .... ढीठ ! दुष्ट ! यह दूसरी आँख से सुन्दर है, बड़ी है, प्रकाशमान है। यह आकाश के समान नीली है। .... मेरे बाल देखते हो न ? गेहूँ के रंग के हैं—स्वर्ण के समान प्रतीत होते हैं। केश-राशि के भार से सिर झुक जाता है। चारों तरफ बिखरते हैं। उन्हें मेरे हाथों पर देखते हो न ? **(वह पके बालों की दो लटें दिखलाती है।)**

नीलू—हाँ, मैं कुछ-कुछ देख रहा हूँ।

परी (उत्तेजित)—कुछ-कुछ ! ढेर-के-ढेर हैं !! स्वर्ण की धारा है !!! मैं जानती हूँ, कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते कि वे कुछ भी नहीं देख सकते। किन्तु तुम तो उन अंधे दुष्टों में से नहीं हो।

नीलू—नहीं, नहीं, जो नहीं छिपे हैं, उन्हें खूब अच्छी तरह से देख रहा हूँ।

परी—दूसरों को भी देखने का साहस करना चाहिए। मनुष्य बड़े विचित्र हैं। परियों की मृत्यु के बाद से ही कुछ नहीं देख पाते। किन्तु उन्हें इसका पता भी नहीं है कि वे अंधे हैं। अच्छा हुआ कि मेरे पास ऐसी वस्तु है, जो बुझी हुई आँखों को प्रकाश प्रदान करती है। ....देखो, अपनी थैली से मैं क्या निकाल रही हूँ ?

नीलू—यह तो धानी रंग की टोपी है, कितनी सुहावनी है ! .... टोपी के सिरे पर क्या चमक रहा है ?

परी—आँखों को प्रकाश देनेवाली यह एक बहुमूल्य मणि है।

नीलू—वाह, वाह, ...।

परी—हाँ; टोपी पहनकर, मणि को थोड़ा-सा घुमाना चाहिए; ऐसा, दायें से बायें।

इस तरह; समझे ? तब वह तुम्हारे सिर पर कुछ दबाती है और तुम देखने लगोगे ।

नीलू—इससे चोट भी लगेगी ?

परी—उल्टे, तुम मुग्ध हो जाओगे, तुरंत ही वस्तुओं का तत्त्व देख सकोगे; जैसे रोटी, अंगूर, मिर्च आदि की आत्मा ।

नीली—क्या चीनी की आत्मा भी दिखाई देगी ? आप देख सकती हैं ?····

परी (सहसा क्रुद्ध होकर)—जरूर दिखाई देगी । मैं अनावश्यक प्रश्नों को नापसंद करती हूँ ! चीनी की आत्मा मिर्च की आत्मा से अधिक महत्व नहीं रखती ! अच्छा, जो कुछ मेरे पास है उसे दे रही हूँ, नील-पंछी का पता लगाने के लिए। अदृश्य बना देनेवाली अंगूठी या उड़न खटोले से तुम्हें और सुविधा होती, लेकिन जिस अलमारी में उन्हें रखवा दिया, उसकी चाभी खो गई है । ओ, मैं भूल रही हूँ (मणि को दिखलाती हुई) देखो, उसे इस प्रकार पकड़ने से और कुछ और घुमाने से, अतीत को देख सकोगे····। और कुछ घुमाने से भविष्य को देख सकोगे । मणि बड़ी अनोखी है । काम की चीज है और आवाज बिल्कुल नहीं करती ।

नीलू—उसे पिताजी मुझसे ले लेंगे ।

परी— नहीं, नहीं, यह उन्हें दिखाई नहीं देगी । जबतक तुम्हारे सिर पर है, उसे कोई नहीं देख सकता ।····अच्छा, तुम इसका चमत्कार देखोगे ?····(वह धानी रंग की उस टोपी को नीलू के सिर पर पहना देती है) अब मणि को घुमाओ····और कुछ घुमाओ ।

[ज्यों ही नीलू ऐसा करता है, सब वस्तुओं में आश्चर्यजनक परिवर्त्तन आ जाता है। बूढ़ी परी एकाएक एक अनुपम सुंदरी राजकुमारी बन जाती है; मकान की दीवारें बहुमूल्य रत्नों से चमकने लगती हैं । घर की चीजों में जान आ गई हैं और वे सब-की-सब कीमती दिखाई दे रही हैं । मेज़ संगमर्मर की हो जाती है । दीवाल-घड़ी कटाक्ष करने और मुस्कराने लगती है । डोलक का द्वार खुल जाता है। और घंटे हँसते हुए निकलते हैं तथा एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नाचने लगते हैं । मधुर संगीत सुनाई देता है]

नीलू (स्तंभित घंटों को दिखलाते हुए)—ये रमणियाँ कौन हैं ?

परी— डरो मत । ये तुम्हारे जीवन की घड़ियाँ हैं····उन्हें खुशी हो रही है कि एक क्षण के लिए वे स्वतंत्र और दृश्य हैं ।

नीलू—किन्तु ये दीवालें चाँदी-सी क्यों दीख रही हैं ? क्या ये चीनी या बहुमूल्य पत्थरों से बनी हैं ?

परी— सभी पत्थर समान हैं । सभी मूल्यवान् हैं । किन्तु मनुष्य उनमें से कुछ को ही देख पाता है····।

[इतने में जादू आगे बढ़ जाता है । मोटी-मोटी बड़ी-बड़ी रोटियों की आत्माएँ बौने के रूप में प्रकट होकर मेज़ के चारों ओर नाच रही हैं । उनके कपड़ों पर मैदा छिड़का हुआ है । अनल चूल्हे से निकलकर हँसता हुआ उनका पीछा करता है]

नीलू—ये नाटे कद के कुरूप मनुष्य कौन हैं ?

परी—अरे डरो मत, ये रोटियों की आत्माएँ हैं। सत्य के राज्य से लाभ उठाकर ये अपनी तंग जगह से निकली हैं।

नीलू—और यह बदबूदार लाल शैतान ?

परी—अरे ! जोर से मत बोलो। यह अनल है। क्रोधी है।

[यह कथोपकथन जादू को नहीं रोकता। अलमारी के सामने सोये हुए कुत्ता और बिल्ली अचानक जोरों की आवाज देकर एक गर्त्त में गायब हो जाते हैं। उनके स्थान पर छोटे कद के दो मनुष्य खड़े हो जाते हैं —एक कुत्ते का चेहरा पहनकर, दूसरा बिल्ली का। कुत्ते का चेहरा पहननेवाला मनुष्य, जिसे हम आगे चलकर कुत्ता कहेंगे, नीलू के पास पहुँचकर उसे जकड़कर आलिंगन में बद्ध कर लेता है; और उसका बार-बार चुम्बन करता है। बिल्ली का चेहरा पहननेवाली छोटे कद की स्त्री, जिसे हम आगे चलकर, बिल्ली कहेंगे, पहले बालों में कंघी देती है, हाथ धोती और मूँछ पर हाथ फेरती है और तब नीली की ओर आगे बढ़ती है]

कुत्ता (चिल्लाते-कूदते, चीजों को तितर-बितर करते हुए, उधम मचाते हुए)—मेरे स्वामी जी ! नमस्कार, नमस्कार, हे प्रभो ! आखिर हम दोनों बातचीत कर सकते हैं।....तुमसे बहुत-कुछ कहना है। तुम मेरा भूँकना और पूँछ हिलाना नहीं समझते थे। अब तो दूसरी बात है। नमस्कार, नमस्कार ! मैं तुम्हें प्यार करता हूँ....प्यार करता हूँ.... कुछ चमत्कार दिखला दूँ.... अपने पंजों पर चलूँ, नाच दिखाऊँ।

नीलू (परी से)—ये कौन हैं, इसका मुँह कुत्ते के समान है ?

परी—तुम देखते नहीं ? वह तो कुत्ते की आत्मा है, जिसे तुमने मुक्त किया है।

बिल्ली (नीली के पास पहुँचकर, शिष्टता से हाथ बढ़ाते हुए)—नमस्ते, नीली रानी ! आज आप बड़ी सुन्दर लग रही हैं।

नीली—नमस्ते, श्रीमती जी ! (परी से) यह कौन है ?

परी—यह तो बिल्ली की आत्मा है। अपना हाथ बढ़ा रही है। उसे गले लगाओ....।

कुत्ता (बिल्ली को धक्का देकर)—मैं भी.... मैंने स्वामी का आलिंगन किया। मैं कुमारी का आलिंगन करूँगा। मैं सबका आलिंगन करूँगा.... अच्छा तमाशा होगा। मैं बिल्ली को डराता हूँ....भूँ, भूँ-भूँ ....।

बिल्ली—महाशय ! मैं आपको जानती भी नहीं।

परी (अपनी छड़ी से कुत्ते को धमकाकर)—शान्त रहो ! नहीं तो अनन्तकाल तक चुप रहना होगा।

[जादू और भी आगे बढ़ गया है। चरखा तेजी से चल रहा है और उज्जवल प्रकाश की किरणें कात रहा है। दूसरे कोने में टोंटी गाने और मोतियों को बरसाने लगती है, जिनमें से जल की आत्मा युवक के रूप में निकलकर अनल से लड़ने जाती है]

नीलू—यह भींगा युवक कौन है ?

परी—डरो मत, यह टोंटी से निकली जल की आत्मा है ।

[दूध का बर्तन टेबुल से लुढ़क कर जमीन पर गिर जाता है । गिरे दूध से एक लम्बा, संकोची, उजले वस्त्र पहने पुरुष उठ खड़ा होता है । वह भयभीत प्रतीत होता है ।]

नीलू—यह पुरुप कौन है ? भयभीत है ।

[चीनी का टुकड़ा, जो अलमारी के सामने पड़ा था, बढ़ने लगता है; लपेटनेवाला कागज फट जाता है और इसमें से नीली धारीवाली सफेद साड़ी पहने एक स्त्री निकलती है और मुस्कराती हुई नीली की ओर बढ़ती है]

नीली (घबराती हुई)—वह क्या चाहती है ?

परी— यह तो चीनी की आत्मा है ।

नीली (विश्वस्त होकर)—उसके पास ईख की चीनी है ?

परी— उसकी सब जेबें चीनी से भरी हुई हैं । उसकी उँगलियाँ चीनी की बनी हुई हैं ।

[दीपक मेज़ पर से गिर जाता है । उसकी लौ ऊपर उठती है और एक चमकती हुई अत्यन्त सुन्दर तरुणी में बदल जाती है । वह उजले महीन वस्त्र पहने हुए है और मुग्ध-सी खड़ी रहती है]

नीलू—यह कोई महारानी है ।

नीली—कोई देवी है ।

परी— अरे नहीं, बच्चो ! यह ज्योति है ।

[इतने में रखे हुए बर्तन अपने स्थानों पर फिरकी के समान घूमने लगते हैं । कपड़ों की अलमारी खुल जाती है और रंग-बिरंगे वस्त्र इसमें से निकलते हैं । ऊपर से सीढ़ी पर चिथड़े उतरते हैं और उनमें मिल जाते हैं । अचानक दाईं ओर के दरवाजे पर तीन बार जोर से खटखटाया जाता है]

नीलू (भयभीत)—पिता जी हैं, हमारी आवाज सुनाई पड़ी होगी ।

परी— मणि को घुमाओ......बाईं से दाईं तरफ ।

(नीलू मणि को जल्दी ही घुमाता है) इतनी जल्दी से नहीं ! आह, क्या किया तुमने ! इतनी जल्दी से घुमाया कि ये सब अपने-अपने स्थान पर नहीं लौट सकेंगे ।

[परी फिर बुढ़िया बन जाती है; मकान की दीवारें अपनी चमक खो बैठती हैं । घंटे घड़ी के अन्दर वापस जाते हैं । चरखा रुक जाता है आदि—। अनल जोर से दौड़ता हुआ धुआँकश खोज रहा है । एक रोटी जगह न मिलने के कारण रोने लगती है]

परी— बात क्या है ?

रोटी (रोते हुए)—मेरे लिए जगह नहीं मिल रही ।

परी (झुककर)—जरूर होगी । (दूसरी रोटियों को ठीक से रखते हुए) जल्दी आओ, जगह मिलेगी । (खटखटाने की आवाज)

रोटी (अत्यंत घबराकर, जगह खोजती हुई)—मुझे जगह नहीं मिल रही है । वह मुझे सबसे पहले खा जायगा ।

कुत्ता (नीलू के निकट आकर)—स्वामीजी, मैं अब भी यहाँ हूँ ! मैं अब भी बोल सकता हूँ । मैं तुम्हें गले लगा सकता हूँ ।···· फिर ! फिर ! फिर !

परी— अरे, तुम अभी तक यहाँ हो ?

कुत्ता—यह मेरा सौभाग्य है । मुझे लौटने में देर हुई है । मणि जल्दी घूम गई है ।

बिल्ली—यही मेरी दशा भी है । अब क्या होगा ? कोई खतरा तो नहीं है ।

परी— मुझे तो सच ही कहना चाहिए । जो उन दो बच्चों के साथ जायगा, वह यात्रा के अंत में मर जायगा ।

बिल्ली (कुत्ते से)—आओ, वापस जायँ ।

कुत्ता—नहीं, नहीं । मैं नहीं जाऊँगा···· मैं अपने स्वामी के साथ जाऊँगा····। मैं हर समय उससे बातें करना चाहता हूँ । ····

बिल्ली—मूर्ख ।

[द्वार फिर से खटखटाया जाता है]

रोटी (रोती हुई)—मैं यात्रा के अंत में नहीं मरना चाहती । मैं वापस जाना चाहती हूँ ।

अनल (अबतक दौड़ता रहा; घबराकर)—मैं धुंआँकश नहीं देख रहा हूँ ।

जल (टोंटी में प्रवेश करने का निष्फल प्रयत्न करता हुआ)—मैं टोंटी में नहीं जा पा रहा हूँ ।

चीनी—मैंने लपेटनेवाला कागज फाड़ दिया है ।

दूध (संकुचित होता हुआ)—मेरा बर्तन टूट गया है ।

परी—ये सब कितने मूर्ख हैं । मूर्ख और डरपोक ! इसका माने यह है कि इन बच्चों के साथ नील-पंछी को ढूँढ़ने के मुकाबले में तुम बंधन में जीना पसंद करते हो ?

सब (कुत्ता और ज्योति को छोड़कर)—हाँ, हाँ ! हम वापस जाना चाहते हैं ।

परी (ज्योति से; वह टूटे हुए दीपक की ओर देख रही है)—और तुम ज्योति, क्या कहती हो ?

ज्योति—मैं बच्चों के साथ जाऊँगी ।

कुत्ता (खुशी से चिल्लाते हुए)—मैं भी, मैं भी ।

परी—ठीक है ।—खैर, अब तो वापस जाने का कोई उपाय भी नहीं है । सबको हमारे साथ जाना होगा···· ········ । लेकिन अनल, सुनो, किसी के ज्यादा नजदीक नहीं आना । कुत्ता ! बिल्ली को नहीं चिढ़ाना । जल, सँभल जाओ, इधर-उधर नहीं बह जाना····

[जोरों से द्वार खटखटाया जाता है]

नीलू (सुन रहा है)—पिताजी ही हैं । वह उठ रहे हैं । आ रहे होंगे ।

परी—खिड़की के बाहर चलें । सब-के-सब मेरे यहाँ आना । सबको उचित रीति से पहना दूँगी । (रोटी से) तुम रोटी, पिंजड़ा ले जाना, जिसमें नील-पंछी रखा जायगा···· वह तुम्हारे जिम्मे है । समय नष्ट न करें ।

[खिड़की अचानक नीचे की ओर बढ़ जाती है और द्वार के समान खुल जाती

है । सब बाहर जाते हैं और खिड़की पूर्ववत् बनकर बन्द हो जाती है । कमरा फिर अंधकारमय हो जाता है । बच्चों के दोनों पलंग अँधेरे में हैं। द्वार कुछ खुल जाता है तथा पिता और माँ के सिर दिखाई देते हैं]

नीलू के पिता—कुछ नहीं है । झींगुर की आवाज हुई होगी ।

नीलू की माँ—तुम उन्हें देख सकते हो ?

नीलू के पिता—हाँ, दोनों चुपचाप सो रहे हैं···· ।

नीलू की माँ—मुझे भी उनका श्वास सुनाई दे रहा है····।

[द्वार पुनः बन्द हो जाता है]

[पटाक्षेप]

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

परी का प्रासाद

(वैजयन्ती परी के महल का भव्य प्रवेशकक्ष; रत्नों से जटित संगमरमर के खंभे, सीढ़ियाँ, मंडप, छज्जे आदि ।)

[बिल्ली, चीनी और अनल, कीमती वस्त्र पहने, पीछे, की ओर दाईं से प्रवेश करते हैं। वे परी के शृंगार-भवन से निकलते हैं, उससे दिव्य प्रकाश आ रहा है। बिल्ली, चीनी और अनल रंग-बिरंगे विविध वस्त्रों से सुसज्जित होकर रंगमंच पार कर सामने दाईं ओर एक मंडप के नीचे खड़े हो जाते हैं।]

बिल्ली—इधर आइए। मैं इस महल को खूब अच्छी तरह से जानती हूँ। बच्चे और ज्योति परी की लड़की से मिलने गये हैं, इतने में हम परामर्श करें। हम सभी हाजिर हैं न ?

चीनी—देखो, कुत्ता परी के शृंगार-भवन से आ रहा है।

अग्नि—क्या पहने हुए है ?

बिल्ली—उसने कोचवान की वरदी पहन ली। ठीक भी है। उसकी आत्मा में गुलामी कूट-कूट कर भरी हुई है। हम छिप जायँ····मैं उस पर विश्वास नहीं करती। अच्छा होता, अगर वह मेरी बात सुनता ही नहीं।

चीनी—छिपना बेकार है। हमें देख लिया है। देखो, जल आ रहा है। वाह-वाह, कितना सुन्दर है।

[कुत्ता और जल उसके पास आते हैं]

कुत्ता—हा ! हा ! हम सब कितने सुन्दर हैं। कितने अच्छे ये कपड़े हैं। बेल-बूटे तो देखो। असली सोने का काम इनपर हुआ है।

बिल्ली (जल से)—मैं इन कपड़ों को पहचानती हूँ; पुराने हैं।

जल—मुझे तो ये सबसे अच्छे लग रहे हैं।

अनल—वह अपना छाता नहीं लाये।····

जल— क्या कहा ?····

अनल—कुछ नहीं।····कुछ भी नहीं।

जल— मुझे तो ऐसा लगा कि तुम उस बड़ी लाल नाक की बात कर रहे हो जिसे मैंने उस दिन देखा था···· ।

बिल्ली—हम आपस में न झगड़ें। हमें इससे अच्छा काम करना है। रोटी अबतक नहीं आई। वह कहाँ है ?

कुत्ता— कपड़ा चुनते-चुनते बड़े असमंजस में पड़ गई थी।

अनल—इसका कारण है। उसकी आकृति से मूर्खता टपकती है और उसकी तोंद भी तो बड़ी है न !

कुत्ता— अंत में उसने दुपट्टा, चोली और कटारी पसंद की है।

बिल्ली—यह लो, आ ही गई।

[**रोटी का प्रवेश, एक हाथ में कटारी, दूसरे में नील-पंछी का पिंजड़ा**]

रोटी (**इठलाकर**)—मैं कैसी लग रही हूँ ?

कुत्ता (**रोटी के चारो ओर कूदता हुआ**)—सुन्दर हो। मूर्ख हो। सुन्दर हो, सुन्दर····

बिल्ली (**रोटी से**)—बच्चे कपड़े पहन कर तैयार हो गये ?

रोटी—हाँ, तैयार हो गये हैं। श्री नीलू ने नीले रंग की कमीज और लाल रंग का पैंट पहना है। और सुश्री नीली ने चटकीला फ्राक चुन लिया है। सब-से-बड़ी मुसीबत थी ज्योति के बारे में।

बिल्ली—ऐसा क्यों ?

रोटी—परी की समझ में यह इतनी सुन्दर है कि कपड़ों की इसे बिल्कुल जरूरत ही नहीं है। मैंने आपत्ति की है। हमलोगों को अपनी मर्यादा का ध्यान रखना है। हम पृथ्वी के तत्त्व हैं। अंत में मैंने कह दिया कि ऐसी परिस्थिति में हम उनके साथ बाहर नहीं जायँगे।

बिल्ली—परी ने क्या उत्तर दिया ?

रोटी—उसने मुझे लाठी से मारा है।

बिल्ली—तब ?

रोटी—मैं मान गई, लेकिन अंत में ज्योति ने एक चाँदनी रंग की साड़ी पसंद की है।

बिल्ली—अब गप-शप बंद करें, समय कम रह गया है····। हम-सबका भविष्य अंधकार-मय है····। सुना है तुमने, परी अभी क्या कह रही थी ? यात्रा शेष होने के साथ हमलोगों का जीवन भी शेष हो जायगा। इसलिए हमें यह यात्रा हर प्रकार से लम्बी बना देनी चाहिए····। हमारी ही बात नहीं है। हमें अपनी जाति तथा अपनी संतान का भी ध्यान रखना चाहिए।

रोटी—शाबास ! शाबास ! बिल्ली ठीक ही कह रही है।

बिल्ली—मेरी बात सुनिए। हम जितने यहाँ हैं, पशु, वस्तुएँ और तत्त्व, हमारी एक आत्मा होती है, जिसे मनुष्य अबतक नहीं जानता; इसीलिए हमें कुछ स्वतंत्रता रह गई है। अगर वह नील-पंछी प्राप्त करेगा, तो सब कुछ जानेगा, सब कुछ देखेगा, और तब हम पूर्ण रूप से उसके वश में हो जायँगे····। मुझे यह सब रात्रिदेवी से मालूम हुआ है, जो जीवन के रहस्यों की रखवाली करती हैं। इसलिए हमारा कल्याण इसी में है कि हम उस पक्षी का पता लगाने का यथा-शक्ति विरोध करें, इसके लिए बच्चों की जान भी खतरे में डालनी क्यों न पड़े····।

कुत्ता (रुखाई से)—यह क्या वक्त नहीं है ? फिर बोलो, जरा ठीक से सुन लूँ ।

रोटी—चुप रहिए । आपकी बोलने की बारी नहीं है, इस सभा का सभापति मैं हूँ ।....

अनल—सभापति तुम्हें किसने बनाया ?...

जल (अनल से)—चुप रहिए !.... तुम बीच में टपकनेवाले कौन हो ?....

अनल—मेरा भी कुछ अधिकार है ।... मुझे रोकनेवाले आप कौन हैं ?

चीनी—शांत रहिए ।... हम झगड़ा न करें.... जोखिम का समय है । हम क्या निर्णय करें !

रोटी—मैं चीनी और बिल्ली की बातों से सहमत हूँ....।

कुत्ता—मनुष्य है !... मनुष्य ही सब कुछ है !.... वह जो कुछ कहता है उसे करना चाहिए । यही एकमात्र सच्चाई है । मैं तो केवल उसी की बातों को मानता हूँ । मनुष्य की जय ! हम जीयें या मरें, मनुष्य के लिए ही । मनुष्य भगवान है ।

रोटी—कुत्ते का कहना ठीक ही है ।

बिल्ली—कुत्ता क्या प्रमाण दे सकता है ?

कुत्ता—प्रमाण की क्या आवश्यकता है । मैं मनुष्यों को प्यार करता हूँ । बस ! अगर आप मनुष्य के विरुद्ध कुछ करेंगी, मैं आपका गला टीप दूँगा और बाद में मनुष्य से सब कुछ कह दूँगा ।

चीनी (स्नेहार्द्र स्वर में)—शांत रहिए; हम कटु शब्दों का प्रयोग न करें । आप दोनों का कहना ठीक है ।

बिल्ली—जितने हम यहाँ हैं, जल, अनल और आप भी, रोटी और कुत्ता, क्या हम सब-के-सब तानाशाही के शिकार नहीं हैं ? मनुष्य के आने के पूर्व हम स्वच्छंदता पूर्वक विचरते थे । याद है न ? जल और अनल विश्व के एकमात्र विधाता थे; अब उनकी दशा देख लीजिए । और हम तो हिंसक जन्तुओं की निर्बल संतान हैं । खबरदार, मन की बात छिपाइए.... परी और ज्योति आ रही हैं.... ज्योति मनुष्य का पक्ष लेती है । हमारी सबसे घातक शत्रु है । देखो आ रही है ।

[दाईं ओर से परी और ज्योति का प्रवेश । इसके बाद नील और नीली का]

परी—अरे, क्या बात है ? तुमलोग कोने में क्या कर रहे हो ? षड्यंत्र रच रहे हो क्या ?... प्रस्थान करने का समय आ गया है । मैंने निश्चय कर लिया है कि ज्योति तुमलोगों का नेतृत्व करेगी । हमारी-जैसी उसकी भी आज्ञा का पालन करना है । मैं अपनी छड़ी उसे दे रही हूँ । बच्चे आज शाम को मृत दादा-दादी से भेंट करेंगे.... । तुमलोग शिष्टाचारवश उनके साथ नहीं जाओगे । वे अकेले कुछ रिश्तेदारों के साथ रहेंगे.... इतने में तुम कल की लम्बी यात्रा की तैयारी करोगे.... । अब जाओ, सब-कुछ अपने काम में लग जाओ ।

बिल्ली (पाखंडपूर्वक)—मैं तो इनसे यही कह रही थी, श्रीमतीजी ! मैं इन्हें अपने कर्तव्य का ईमानदारी और साहस के साथ पालन करने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी ।

दुःख की बात है कि कुत्ता बराबर आपत्ति कर रहा है।

कुत्ता—यह क्या कह रही है ? (वह बिल्ली पर झपटना चाहता है, लेकिन नीलू उसे रोक लेता है।)

नीलू—चुप ! फिर ऐसा करोगे, तो····

कुत्ता—स्वामी जी ! आप जानते नहीं। वह····

नीलू (धमकाते हुए)—चुप रहो।····

परी—बहुत हुआ। रोटी, आज शाम नीलू को पिंजरा दे देना। संभव है नील-पंछी, दादा-दादी के यहाँ भूतकाल में छिप रहा हो; सुन लिया रोटी !

रोटी (गंभीरता पूर्वक)—परी देवि ! एक बात कहूँ ? (मानों लंबी वक्तृता प्रारंभ करते हुए) आपलोग सब-के-सब इस बात के साक्षी हैं कि यह चाँदी का पिंजरा मुझे····

परी (उसे रोकते हुए)—बस, बस ! व्याख्यान बंद करो !···· हम सब इस राह से और बच्चे उस राह से जायँगे।

नीलू (चिंतित मुद्रा में)—हमलोगों को क्या अकेला जाना पड़ेगा ?

नीली—मुझे भूख लग रही है।

नीलू—मुझे भी !····

परी (रोटी से)—कपड़ा खोलकर उन्हें अपनी तोंद का टुकड़ा दे दो। [रोटी तोंद के दो टुकड़े काटकर बच्चों को देती है।]

चीनी (बच्चों के पास आकर)—मैं तुम्हें चीनी दे दूँ ? [वह बायें हाथ की पाँच उँगलियाँ एक-एक कर के बच्चों को देना चाहती है।]

नीली—यह क्या कर रही है ! ···· अपनी उँगलियाँ तोड़ रही है।

चीनी (फुसलाकर)—चखकर देख लो न···· बड़ी अच्छी है। असली चीनी है।

नीली (एक उँगली चूसने लगती है)—वाह ! कितनी मीठी है।····आपके पास और बहुत हैं ?

चीनी (ससंकोच)—हाँ, हाँ, जितनी चाहती हूँ।

नीली—उन्हें इस प्रकार तोड़ने से आपको बहुत कष्ट होगा !

चीनी—कतई नहीं····उलटे इसमें लाभ भी है। तोड़ते ही नई उँगलियाँ उगती हैं; इस प्रकार मेरी उँगलियाँ हमेशा स्वच्छ और नवीन बनी रहती हैं।

परी— बच्चो ! अधिक चीनी मत खाओ। थोड़ी देर में दादा-दादी के यहाँ तुम्हारा भोजन होगा।

नीलू—वे यहाँ हैं क्या ?····

परी— उन्हें जल्दी ही देख लोगे।

नीलू—कैसे उन्हें देख लेंगे, वे तो मर चुके हैं।

परी—जब वे तुम्हारी स्मृति में जीते हैं तो कहाँ मर गये ? मनुष्य इस रहस्य को नहीं जानते। खैर, वे जानते कुछ भी नहीं। लेकिन तुम मणि के सहारे जान लोगे कि जिनका स्मरण किया जाता है, वे इतने सुख से जीवित रहते हैं, मानो वे मरे ही नहीं।

नीलू---ज्योति हमारे साथ जायगी न !

परी— नहीं। अच्छा है कि तुम अकेले ही अपने रिश्तेदारों से मिल लो। मैं यहाँ पर तुमलोगों की प्रतीक्षा करूँगी। बात यह है, मुझे निमंत्रण नहीं मिला····

नीलू—हम किधर जायँ ?

परी— उधर जाओ। वहाँ स्मृति-प्रदेश का फाटक है। मणि को घुमाने के बाद तुम विशाल वृक्ष पर लटकता हुआ एक पट्ट देखोगे, जिससे पता चलेगा कि पहुँच गये हो····लेकिन याद रखना कि पौने नौ बजे तक वापस आना चाहिए····यह बहुत जरूरी है····जरा-सी देर होने पर अनर्थ हो जायगा।····अच्छा नमस्ते····। (बिल्ली, कुत्ता, ज्योति आदि को बुलाकर) इधर आओ, बच्चे उधर जायँ।

[वह ज्योति और पशुओं आदि के साथ दाईं ओर जाती है···बच्चे बाईं ओर····]

[पटाक्षेप]

द्वितीय दृश्य

स्मृति-प्रदेश

[गहरा कोहरा छाया हुआ है। दाईं ओर एक विशाल वृक्ष और इस पर एक पट्ट दिखाई देने लगता है। धुँधला-धुँधला अस्पष्ट प्रकाश है। नीली और नीलू वृक्ष के नीचे हैं।]

नीलू—पेड़ तो यही है।

नीली—परिचय-पट्ट भी है।

नीलू—उसे पढ़ नहीं पाता····उस पर चढ़ जाऊँगा। हाँ, हाँ, वही है। इस पर लिखा है,—'स्मृति-प्रदेश'।

नीली—यहाँ से शुरू होता है ?

नीलू—हाँ, निर्देश भी है ?

नीली—तब दादा और दादी कहाँ हैं ?

नीलू—कोहरे में छिपे होंगे····अब देख लेंगे।

नीली—मैं कुछ भी नहीं देख सकती····अपने हाथ और पैर भी नहीं देख सकती····(रुआंसी होकर) मुझे ठंड लग रही है। और आगे नहीं जाऊँगी—मैं अपने घर जाना चाहती हूँ।

नीलू—अरे, जल के समान तू हर वक्त रोती क्यों है। शर्म नहीं लगती···बड़ी लड़की है। देख, कोहरा हट रहा है·······इसमें क्या छिपा है, सब देख लेंगे।

[वास्तव में कोहरा धीरे-धीरे हटने लगता है। एक देहाती मकान दिखाई देता है,

उसपर लताएँ फैली हुई हैं। खिड़कियाँ और द्वार खुले हैं, मधुकोष, गमले आदि हैं। एक पिंजरा है और उसमें एक मैना सोई हुई है। द्वार पर एक बूढ़ा किसान और उसकी पत्नी बैठे हैं; ये नीलू के दादा-दादी हैं, दोनों घोर निद्रा में हैं।]

नीलू (अचानक उन्हें पहचानकर)—अरे, ये ही दादा और दादी हैं।

नीली (तालियाँ बजाती हुई)—हाँ, हाँ, ये ही हैं।

नीलू (इसे अब भी पूरा विश्वास नहीं होता)—खबरदार ! अबतक पूरा पता नहीं.... पेड़ की ओट ही खड़े रहें।

[दादी आँखें खोलकर, और सिर उठाकर अँगड़ाई लेती है और धीरे-धीरे जगनेवाले दादा की ओर देखती रहती है।]

दादी—मुझे ऐसा लग रहा है कि अबतक जीवित हमारे पोता और पोती, आज हमसे मिलने आयँगे।

दादा—वे हमें जरूर याद कर रहे हैं। मुझे अच्छा लग रहा है और पैर भी फड़करहे हैं।

दादी—वे बहुत निकट आ गये होंगे, देखते नहीं, आनंद के आँसू इन आँखों में छलक उठे।

दादा—नहीं, अभी दूर होंगे; क्योंकि मुझे अबतक थकावट मालूम हो रही है।

दादी—सच कहती हूँ—आ ही गये होंगे, मुझमें ताकत आ गई है।

नीलू और नीली (वृक्ष की ओर से प्रकट होकर दौड़ते आते हैं)—आ गये ! आ गये ! दादी ! दादा ! हम हैं ! हमीं हैं !

दादा—देखती हो न ? मैं क्या कह रहा था। मुझे पूरा विश्वास था कि ये आज आयँगे।

दादी—नीलू, नीली ! तुम्हीं हो। (वह आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है) मैं दौड़ नहीं सकती ! वही गठिया मुझे तकलीफ दे रही है।

दादा (लँगड़ाते हुए आगे बढ़कर)—मैं भी नहीं दौड़ पाता। पेड़ के नीचे जो पैर दब गया था, वह कभी नहीं अच्छा हुआ है।

[सब एक दूसरे को गले लगाते हैं]

दादी—नीलू, तुम कितने बड़े और तगड़े हो गये हो !

दादा (नीली के सिर के बालों पर हाथ फेरते हुए)—और इधर नीली को भी तो देखो।.... इसके केश कितने सुंदर हैं। आँखें कितनी अच्छी हैं।

दादी—आओ बेटा ! आओ, तुम दोनों मेरी गोद में बैठो।

दादा—वे मेरे पास नहीं आयँगे, क्या ?

दादी—नहीं, नहीं, वे पहले मेरे पास आयँगे। तुम्हारे माता-पिता कैसे हैं ?

नीलू—वे तो सकुशल हैं, दादीजी ! जब हम जा रहे थे, वे सोये हुए थे।

दादी (अपलक नेत्रों से देखते हुए, तथा गले लगाते हुए)—वाह, वाह ! कितने सुंदर और साफ-सुथरे हैं। माँ ने तुमलोगों को नहलाया है न ! मोजों में भी छेद नहीं है। जानते हो, पहले मैं उन्हें मरम्मत किया करती थी। तुमलोग बहुत कम इधर आते हो। और आना चाहिए। इससे हमें बहुत खुशी होती है।

महीनों तक तुम हमलोगों को भूल जाते हो, और इधर कोई भी आता ही नहीं ।

दादी—हम यहाँ बराबर जीवित लोगों के आने की बाट जोह रहे हैं—और ये बहुत ही कम आते हैं । पिछली बार तुम कब आये थे ? हाँ, करीब-करीब दो महीने की बात है । पहली नवम्बर को जब गिरजा-घर का घंटा बज रहा था ।

नीलू—पहली नवम्बर को ?···· उस दिन तो हम कहीं भी बाहर नहीं गये थे, दोनों को जुकाम था ।

दादी—हाँ ! हाँ ! लेकिन हमें याद कर रहे थे ।

नीलू—जी हाँ ! याद तो करते थे ।

दादी—अच्छा ! जब-जब तुम हमें याद करते हो, तब-तब हम जागते हैं और तुम्हें देखते हैं ।

नीलू—क्या ? इतना ही काफी है कि····

दादी—अरे, जानते तो हो न !····

नीलू—नहीं, मुझे मालूम नहीं था ।

दादी (दादा से)—आश्चर्य की बात है । अबतक ये इतना भी नहीं जानते, दुनिया में । क्या वे कभी भी समझेंगे ही नहीं ।

दादा—हमारे जमाने में ऐसा ही था । जीवित लोग हमारे बारे में कुछ भी नहीं समझते····

नीलू—क्या आपलोग बराबर सोते रहते हैं ?

दादा—हाँ, नींद की कमी कहाँ है । जबतक जीवित लोगों की याद हमें जगाती नहीं, हम सोते ही रहते हैं···· वैसे तो जीवन समाप्त होने के बाद नींद बड़ी अच्छी लगती है; किन्तु समय-समय पर जाग जाना भी अच्छा है ।

नीलू—तब तो सचमुच आपलोगों की मृत्यु नहीं हुई है ?

दादा (आश्चर्य से)—क्या कहा तुमने ? यह क्या कह रहा है ? वे ऐसे शब्दों का व्यवहार करते हैं जिन्हें हम यहाँ समझते ही नहीं । क्या यह कोई नया शब्द है ?

नीलू—मृत्यु ?

दादा—हाँ, वही शब्द था···· इसका माने क्या है ?

नीलू—इसका माने तो साफ है । जीवित न रहना मृत्यु है ।

दादा—दुनिया के लोग कितने मूर्ख हैं ।

नीलू—यहाँ अच्छा लगता है ?

दादा—ऊँ, हाँ, यहाँ काफी अच्छा लग रहा है । यदि हमारे लिए प्रार्थना होती····

नीलू—पिताजी ने कहा कि अब आपको प्रार्थना की जरूरत नहीं रह गई है ।

दादा—जरूरत तो है ही, प्रार्थना तो स्मरण करना है न !

दादी—जी हाँ ! सब ठीक होता अगर तुमलोग हमारे यहाँ बार-बार आते,···· याद है नीलू, पिछली बार मैंने बड़ा सेब पकाया था । इतना खाया तुमने कि अस्वस्थ हो गये थे ।

नीलू—पिछले साल से मैंने सेब बिलकुल नहीं खाया····इस साल तो सेब बिलकुल नहीं था ।

दादी—अरे, क्या कहते हो, यहाँ तो बराबर ही मिलता है ।

नीलू—यहाँ तो दूसरी बात है ।

दादी—यहाँ दूसरी बात क्यों ? यहाँ भी सब एक ही बात है, हम एक दूसरे को गले लगा सकते हैं, न····

नीलू (**दादा-दादी को गौर से देखते हुए**)—आप तो बिलकुल नहीं बदले दादाजी ! बिलकुल नहीं···· दादी भी बिलकुल पहले-जैसी हैं···· आपलोग पहले से सुंदर लग रहे हैं····

दादा—हाँ, सब ठीक है···· हम और बूढ़े नहीं बन रहे हैं, ज्यों-के-त्यों रह जाते हैं । लेकिन तुमलोग बढ़ते जाते हो···· देखो, द्वार पर तुम्हारा निशान है । पिछली बार बनाया था !···· खड़े हो जाओ···· (**नीलू द्वार के सामने खड़ा हो जाता है**) दो इंच बढ़ गये हो । वाह, वाह ! (**नीली भी खड़ी हो जाती है**) नीली तो ढाई इंच बढ़ गई है । तुमलोग इतने बढ़ रहे हो ।····

नीलू (**चारों ओर प्रसन्नता से देखते हुए**)—यहाँ तो सब अच्छा है । सब कुछ अपनी-अपनी जगह पर है, सब कुछ सुन्दर है···· यही घड़ी है जिसकी सूई मैंने तोड़ी थी ।

दादा—देखो, वही सुराही है जिसका मुँह तुमने तोड़ा था····

नीलू—और यह देखिए, दरवाजे का वही छेद है; उसे मैंने वरमी से बनाया था ।

दादा—हाँ, हाँ, खूब बरबादी की तुमने । यह सेब का पेड़ देखो, जिस पर तुम मेरी अनुपस्थिति में चढ़ा करते थे···· कितने सुन्दर फल हैं ।

नीलू—हाँ, सुन्दर तो हैं ।

नीली—और यह वही मैना है । आजकल गाती है ?

(**मैना जागकर गाने लगती है**)

दादी—देखते हो न ! याद करते ही वह गाने लगती है ।

नीलू (**आश्चर्य से देख रहा है कि मैना नीली है**)—वह तो नीली है···· वही नील-पंछी है जिसे परी को देना है !···· आपलोग इसके बारे में क्यों चुप थे !! हाँ, वह नीली ही है । (**गिड़गिड़ाकर**) दादाजी, दादाजी उसे मुझे दीजिएगा ।

दादा—हुँ, हुँ, देखा जायगा । दादी क्या कहती हैं ?

दादी—क्यों नहीं ! कुछ काम की नहीं है···· सोती ही रहती है···· उसे हम कभी भी गाते नहीं सुनते····

नीलू—मैं उसे अपने पिंजरे में रखूँगा···· अरे, वह कहाँ है ? हाँ, याद है । उस पेड़ के पीछे छोड़ गया था । (**वह दौड़कर उसे ले आता है, और पक्षी को उसमें बंद कर देता है**) सचमुच, आप उसे मुझे दे रहे हैं न ? परी कितनी खुश होगी···· और ज्योति भी ।

दादा—पक्षी के बारे में मैं कुछ भी जिम्मेवारी नहीं ले सकता । मुझे डर लगता है कि कहीं वह दुनिया की हलचल से घबराकर जल्दी यहाँ न आ जाय ··· खैर, देखा जायगा । उसे यहाँ छोड़ दो और गाय को देख लो ।

नीलू (मधुकोष देखकर)—मधुमक्खियाँ कैसी हैं ?

दादा—अच्छी हैं···· तुम लोगों के विचार में वे तो जीवित नहीं हैं, लेकिन काम करती हैं बहुत ।

नीलू (मधुकोष के पास जाकर)—अहा, मधु की गंध भी है । मधु तो बहुत होगा । यहाँ पर तो फूल-ही-फूल नजर आते हैं । अच्छा, यह बताइए—मेरी छोटी मरी हुई बहनें हैं कि नहीं ?

नीली—और मेरे तीनों छोटे भाई, जिन्हें दफनाया गया है, वे कहाँ हैं ?

[भिन्न-भिन्न कद के सात बच्चे, एक-एक करके, मकान से निकलते हैं]

दादी—देखो, ये सब आ गये हैं । इन्हें याद करते ही, इनके बारे में बात होते ही, ये आ जाते हैं ।

[नीलू और नीली उनकी ओर आगे बढ़ते हैं । सब एक-दूसरे को गले लगाते हैं । और खुशी के मारे नाचते और चिल्लाते हैं ।]

नीलू—कहो मोहन ! (दोनों एक-दूसरे के बाल पकड़ लेते हैं) अरे, क्या हम फिर पहले की तरह लड़ेंगे क्या ?···· नमस्ते रवि ! नमस्ते विजय ! तुम्हारी फिरकी कहाँ है ? नमस्ते मंजुला, सुधा, आशा और रेखा !

नीली—अरे रेखा, रेखा ! यह अबतक घुटरूँ ही चलती है ।

दादी—अब वह बढ़ेगी ही नहीं ।

नीलू (एक छोटा-सा कुत्ता देखता है, जो मूँ-मूँ कर रहा है)—यह तो वही पिल्ला है जिसकी पूँछ मैंने आशा की कैंची से काट ली थी । वह भी नहीं बदला है ।

दादा (गंभीरता से)—यहाँ पर कुछ भी नहीं बदलता ।

नीलू—आशा की नाक पर अब भी वह मसा है ।

दादी—हाँ, वह ज्यों-का-त्यों रह जाता है । कुछ भी नहीं किया जा सकता····

नीलू—खैर, सब अच्छे हैं, मोटे-ताजे हैं···· गालों पर सुरखी है; अच्छा खाना मिल रहा होगा ।

दादी—हाँ, अपने जीवन-काल के मुकाबले में वे अच्छे ही हैं····यहाँ कोई भी आशंका नहीं है, कोई बीमार नहीं होता, कोई चिन्ता नहीं ।

[मकान में आठ बज रहा है]

दादी—(आश्चर्य से)—यह क्या है ?

दादा—क्या जाने····घड़ी की आवाज होगी ।

दादी—कतई नहीं····वह तो कभी भी नहीं बजती····

दादा—यह तो इसलिए है कि हम समय का ध्यान नहीं रखते····क्या कोई सोच रहा था कि क्या बजा है ?

नीलू—हाँ, मैं ही सोच रहा था····क्या बजा है ?

दादा—भूल गया हूँ । इस पर मैं भूल कर भी ध्यान नहीं देता····हाँ, आठ बार बज गई है····इसलिए दुनिया के हिसाब के मुताबिक आठ बजे हैं ।

नीलू—पौने नौ बजे ज्योति से मिलना है····परी ने कह दिया है····बड़ा जरूरी काम है····

जा रहा हूँ।

दादी—भोजन तैयार है····अभी कैसे जाओगे? दरवाजे के सामने मेज़ सजा लें···· गोभी का शोरबा और सेब का मुरब्बा मिल जायगा।

[मेज घर से निकाल कर सजाने लगते हैं, सब प्याले, तश्तरी आदि लगाने में सहायता देते हैं।]

नीलू—नीलपंछी तो मिल गया है···· और गोभी का शोरबा बहुत दिनों के बाद मिल रहा है। यात्रा करते-करते यह तो होटलों में नहीं मिल सकता।

दादी—देखो, सब तैयार है····बैठ जाओ····तुम्हें जल्दी है, इसलिए समय नष्ट न करें····

[दीपक जलाते हैं और शोरबा परोसा जाता है। सब-के-सब सानन्द भोजन पर बैठते हैं।]

नीलू (**पेटूपन के साथ खा रहा है**)—खूब, खूब अच्छा है, बड़ा अच्छा है। मुझे और दीजिए, मुझे और शोरबा चाहिए।

[वह काठ के चम्मच से तश्तरी बजा रहा है]

दादा—अरे, शान्त हो जाओ। बड़े ढीठ हो। तश्तरी तोड़ डालोगे क्या?

नीलू (**कुर्सी पर खड़ा होकर**)—मुझे और दो। और।

[वह शोरबे का बरतन अपनी ओर खींच लेता है। वह उलट जाता है और शोरबा मेज पर से सभी के घुटनों पर टपकता है। सब चिल्लाते हैं।]

दादी—अरे, क्या कर रहे हो? पहले ही से कह दिया मैंने···

दादा (**नीलू को थप्पड़ मारकर**)—बदमाश कहीं का!

नीलू (**क्षणभर के लिए मौन। गाल पर हाथ रखकर प्रसन्न हो उठता है**)—दादाजी जब जीवित थे तो ऐसा ही थप्पड़ मारते थे। बहुत अच्छा लग रहा है····आपको गले लगाना चाहता हूँ।

दादा—अच्छा, फिर ऐसा होगा तो और थप्पड़ मार सकता हूँ।

[साढ़े आठ बज रहे हैं]

नीलू (**उतावली से खड़ा होकर**)—साढ़े आठ बज गये हैं। (**चम्मच पटककर**) नीली, हमें अभी जाना है।

दादी—अरे, ऐसी जल्दी भी क्या है। यहाँ भीग थोड़े ही रहे हो। तुमलोग बहुत कम आते हो।

नीलू—नहीं, अब हमलोग रुक नहीं सकते। ज्योति बड़ी अच्छी है। उसे वचन दे चुका हूँ। चलो नीली····चलो।

दादा—तुम तो खूब उतावले हो गये हो। जीवित मनुष्य ऐसे ही होते हैं।

नीलू (**पिंजरा उठा लेता है और सबको गले लगाकर**)—प्रणाम दादा! प्रणाम दादी! नमस्ते विजय, रवि, मोहन, आशा, रेखा, मंजुला, सुधा! अब मेरे लिए यहाँ रहना ठीक नहीं है। दादी, मत रोओ। हमलोग अक्सर भेंट करने आ जाया करेंगे।

दादी—रोज-रोज चले आना।

नीलू—हम बार-बार आने की भरसक कोशिश करेंगे।

दादी—यह हमलोगों का एकमात्र सुख है। सोचो तो, हमें कितनी खुशी होती होगी जब तुम्हारी याद हमसे मिलने आती है।

दादा—दिल बहलाने का और कोई रास्ता नहीं।

नीलू (जल्दी-जल्दी)—पिंजरा और पन्छी कहाँ है ?

दादा (पिंजरा देते हुए)—ले लो .... कह दिया न, कुछ भी निश्चित नहीं है .... वह शायद बीमार पड़ जायगा।

नीलू—प्रणाम, प्रणाम !

नीलू के भाई-बहन—नमस्कार नीलू, नमस्कार नीली ! मिटाई न भूल जाना। नमस्कार। फिर आओ, फिर आओ।

[नीलू और नीली जा रहे हैं, दूसरे सब अपना-अपना रूमाल हिला रहे हैं लेकिन पिछली बातचीत के अंत में कोहरा आ गया था और पात्रों की आवाज भी कम होती जा रही है .... इस प्रकार नीलू और नीली को छोड़कर सब कोहरे में छिप गया है। नीलू और नीली दोनों पेड़ के पास दिखाई देते हैं।]

नीलू—नीली ! इधर आओ !

नीली—ज्योति कहाँ है ?

नीलू—मैं नहीं जानता ! (पिंजरा में पन्छी को देख रहा है)—पन्छी तो अब नीला नहीं दीखता .... यह तो काला हो गया।

नीली—भैया, मेरा हाथ पकड़ लो .... मुझे भय और ठंड लग रही है।

[पटाक्षेप]

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

रात्रि का प्रासाद

[एक भव्य भवन जो मिस्र या यूनान के मंदिर का स्मरण दिलाता है। खंभे और फर्श स्वर्णजटित काले संगमरमर के हैं। चौड़ी सीढ़ियाँ पीछे की ओर चढ़ती हैं और तीन स्थलों पर कुछ दूरी तक समतल रहती हैं, जिससे भवन के तीन भाग बन गये हैं। बाईं और दाईं ओर खंभों के बीच काँसे के द्वार हैं। पीछे की ओर एक ऊँचा पीतल का फाटक है। धुँधला प्रकाश मानों संगमरमर से ही निकलता है।

पर्दा उठने पर रात्रि, सुंदर महिला के रूप में काले वस्त्र पहने, बीच के समतल पर दो बच्चों के बीच, बैठी हुई है। एक बच्चा जो नाममात्र का वस्त्र पहना है, गहरी नींद में मुस्करा रहा है। दूसरा सिर से पैर तक कपड़ों से ढका हुआ निश्चल खड़ा है। नीचे दाईं ओर से बिल्ली प्रवेश करती है।]

रात्रि—कौन है ?

बिल्ली (थकावट के मारे संगमरमर की सीढ़ियों पर लेट जाती है)—रात्रि देवि ! मैं हूँ, बहुत थक गई हूँ।

रात्रि—क्या हुआ बेटी ? पीली, दुबली और धूल से ढकी हुई हो.... वृष्टि में भी छत पर चढ़कर लड़ती रही क्या ?

बिल्ली—छत पर चढ़ने की बात कहाँ ! भारी रहस्य है ! अनर्थ होनेवाला है।.... आपको सूचना देने के लिए मैं भाग आई.... फिर भी मेरी समझ में अब कुछ नहीं हो सकता।....

रात्रि—कहो तो, क्या बात है ?

बिल्ली—मैंने आपसे नीलू और जादू की मणि के बारे में बातचीत की थी....अब वह यहाँ आ रहा है, आपसे नील-पंछी लेने के लिए।

रात्रि—आसानी से नहीं मिल जायगा।

बिल्ली—अगर हम उपाय न निकालें तो उसे जल्दी ही मिल जायगा। सुनिए, ज्योति ने हमलोगों के साथ विश्वासघात किया है। वह मनुष्य का पक्ष लेकर नीलू को मार्ग दिखलाती रहती है। उसी ज्योति को पता चला है कि दिन के प्रकाश में भी जीवित रहने की सामर्थ्य रखनेवाला असली नील-पंछी, केवल चाँदनी के ही सहारे जीनेवाले, और दिन में सूर्य-दर्शन से ही मर जानेवाले दूसरे नील-पंछियों

के बीच यहाँ छिप रहा है।.... ज्योति यह भी जानती है कि वह आपके यहाँ नहीं आ सकती; इसलिए वह बच्चों को यहाँ भेजनेवाली है.... मनुष्य आपके यहाँ आकर सब द्वारों को खोल सकता है, आप उसे रोक नहीं सकतीं.... क्या होनेवाला है, समझ में नहीं आता....बहरहाल, अगर वह दुर्भाग्य असली नील-पंछी हथिया सका तो हम सब-के-सब मटियामेट हो जायँगे....

रात्रि—हाय ! हाय !! लक्षण अच्छे नहीं हैं। मुझे क्षण-भर भी चैन नहीं.... इधर कुछ वर्षों से मनुष्य को मैं बिलकुल नहीं समझती.... आखिर, वह चाहता क्या है ? .... क्या वह सब कुछ जानना चाहता है ? मेरे रहस्यों की एक तिहाई उसने मुझसे छीन ली है; मेरे सब आतंक स्वयं डर गये हैं; मेरे अधिकांश रोगियों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है....।

बिल्ली—जानती हूँ रात्रि माँ ! समय हमलोगों का साथ नहीं दे रहा है....। हम प्रायः अकेले ही रह गये, मनुष्य के विरुद्ध लड़ने के लिए.... सुनिए, वे आ रहे हैं....। मुझे एक उपाय सूझ रहा है.... वे बच्चे ही हैं, इसलिए उन्हें इस प्रकार डराया जाय कि जिसके उस पार चाँद के पक्षी रहते हैं उस पिछले द्वार को खोलने का साहस न करें....। दूसरी गुफाओं के रहस्य उनका ध्यान आकृष्ट करने और उन्हें डराने के लिए काफी हैं....।

रात्रि (बाहर की आवाज पर ध्यान देकर)—यह क्या है ? बहुत हैं क्या ?

बिल्ली—कोई डर की बात नहीं है। हमारे ही मित्र हैं रोटी और चीनी। जल कुछ अस्वस्थ है और ज्योति का रिश्तेदार होने के कारण अनल को आने की छुट्टी नहीं मिल सकी.... केवल कुत्ता ही हमारा विरोधी है और उसे अलग करने का कोई उपाय भी नहीं है।

[संकोच के साथ, दाईं ओर से नीचे नीलू, नीली, रोटी चीनी और कुत्ते का प्रवेश]

बिल्ली [नीलू का स्वागत करती हुई]—इधर आइए, इधर स्वामीजी !.... मैंने रात्रि को अपने आने का समाचार दे दिया है, आपको देखकर बहुत खुश हो रही हैं....वह क्षमा माँग रही हैं, कुछ अस्वस्थ हैं....इसलिए आपका स्वागत करने के लिए नहीं उतर सकीं।

नीलू—रात्रि देवी ! शुभ दिन की कामना करता हूँ।

रात्रि (अप्रसन्न मुद्रा में)—शुभ दिन ? .... तुम क्या कह रहे हो ? .... कहना चाहिए, 'शुभ रात्रि '....या कम-से-कम, 'शुभ संध्या '।

नीलू (कुछ झेंपकर)—श्रीमतीजी, आप मेरी भूल क्षमा करें....मुझे मालूम नहीं था. (बच्चों की ओर संकेतकर) आपके बच्चे हैं ?....बड़े अच्छे लग रहे हैं।

रात्रि—हाँ, यह निद्रा है।

नीलू—बहुत मोटी है।

रात्रि—खूब अच्छी तरह से सोती है, इसीलिए।

नीलू—और दूसरा जो छिपता है ? मुँह क्यों ढँक लेता है ? बीमार है क्या ? उसका नाम क्या है ?

रात्रि—यह नींद की बहन है···अच्छा है यदि उसका नाम न लिया जाय।

नीलू—क्यों ?

रात्रि—इसका नाम लोकप्रिय नहीं है···खैर, छोड़ो इस बात को। बिल्ली मुझसे कह रही थी कि तुम यहाँ नील-पंछी की खोज में आये हो।

नीलू—जी हाँ, आपकी आज्ञा चाहता हूँ। क्या मैं जान सकता हूँ कि वह कहाँ पर है ?

रात्रि—बेटा, इसके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानती···इतना ही मालूम है कि वह यहाँ है ही नहीं। उसे कभी भी नहीं देखा है मैंने।

नीलू—नहीं, नहीं···ज्योति कह रही थी कि वह यहाँ ही है···ज्योति को खूब अच्छी तरह मालूम है···। क्या आप मुझे अपनी चाभियाँ दे सकती हैं ?

रात्रि—बेटा, तुम्हें भी यह मालूम होगा कि मैं इस तरह किसीको चाभियाँ नहीं दे सकती। मुझे प्रकृति के सब रहस्यों की रक्षा सौंपी गई है; मैं इसकी जिम्मेवारी ले चुकी हूँ, किसी के लिए भी, खास कर किसी बच्चे के लिए तो मैं उन्हें नहीं खोल सकती।

नीलू—मनुष्य कुछ भी माँगे, आपको इनकार करने का अधिकार नहीं···इतना ही मैं जानता हूँ।

रात्रि—किसने कहा तुमसे ?

नीलू—ज्योति ने।

रात्रि—ज्योति, बराबर ज्योति···क्यों सब जगह टाँग अड़ाती है ?

कुत्ता—स्वामी ! मैं चाभियाँ जबर्दस्ती ले लूँ ?

नीलू—चुप रहो तुम ! **(रात्रि से)** रात्रि देवि ! कृपया मुझे अपनी चाभियाँ दे दीजिए।

रात्रि—अभिज्ञान तुम्हारे पास है ? कहाँ है ?

नीलू **(टोपी पर हाथ रखकर)**—मणि देख लीजिए।

रात्रि **(विवस होकर)**—अच्छा ! ले लो, इस चाभी से इस कमरे के सब द्वार खुल जायँगे···खबरदार ! अनर्थ न हो जाय···मैं कोई जिम्मेवारी नहीं ले सकती।

रोटी **(घबराकर)**—खतरा है क्या ?

रात्रि—खतरा ? इतना खतरा है कि मुझे नहीं सूझ रहा है कि क्या करना होगा जब ये काँसे के द्वार खुल जायँगे। इन गुफाओं में सब बुराइयाँ, सब ईतियाँ, सब बीमारियाँ, सब आतंक, सब महाविपत्तियाँ, सब रहस्य छिपे हुए हैं, जो सृष्टि के प्रारम्भ से जीवन के घातक शत्रु सिद्ध हुए हैं···विधि की सहायता से मैंने उन्हें बड़ी मुश्किल से बंद कर दिया और आजकल वश में रखती हूँ···जानते हो न कि क्या अनर्थ हो जाता है, जब इनमें से कोई यहाँ से निकलकर पृथ्वी पर दिखाई देता है।

रोटी—अपने बुढ़ापे, अनुभव और स्नेह की वजह से मैं सहज ही इन बच्चों की संरक्षिका बन गई हूँ···इसलिए रात्रिदेवि, आपसे एक बात पूछूँ ?

रात्रि—पूछिए···

रोटी—खतरा होने पर किधर भाग जाना है ?

रात्रि—भाग जाने का कोई रास्ता ही नहीं है।

नीलू (चाभी लेकर ऊपर चढ़ रहा है)—इधर से शुरू करें। इस काँसे के दरवाजे के पीछे क्या है ?

रात्रि—भूत होंगे, जहाँ तक याद है।····वर्षों से न उन्हें बाहर जाने दिया और न द्वार ही खोला।

नीलू (ताले में चाभी लगाते हुए)—देख लिया जाय। (रोटी से) नील-पंछी का पिंजरा तुम्हारे पास है ?

रोटी (काँपती हुई)—यह नहीं समझना कि मुझे भय लग रहा है। फिर भी मैं सोच रही हूँ, अच्छा होता अगर द्वार न खोला जाता और ताले के छेद से ही अन्दर देखा जाता····

नीलू—मैं तुम्हारी राय नहीं पूछ रहा था···

नीली (अचानक रोती हुई)—मुझे डर लगता है! चीनी कहाँ है ? मैं घर जाना चाहती हूँ।

चीनी (उत्सुकता से)—इधर आओ नीलीरानी····रोओ मत····मैं अपनी उँगली तोड़ कर तुम्हें चीनी खिलाती हूँ····

नीलू—आखिर देख लें····

[चाभी लगाकर सावधानी से दरवाजा थोड़ा-सा खोल देता है। तुरंत विचित्र आकृति के सात-पाँच भूत निकलकर इधर-उधर भाग जाते हैं। रोटी भयभीत होकर पिंजरा पटक देती है और किसी कोने में छिप जाती है। इतने में रात्रि भूतों का पीछा करती हुई नीलू को संबोधित करती हुई कहती है।]

रात्रि—जल्दी-जल्दी····द्वार लगाओ। नहीं तो सब निकल जायँगे और हम उन्हें पकड़ नहीं सकेंगे····। उनका जी खूब ऊब गया है····मनुष्य आजकल उन्हें कोई भी महत्व नहीं दे रहा है····। (वह भूतों का पीछा करती हुई साँपों के चाबुक से उन्हें द्वार की ओर खदेड़ रही है।) मुझे सहायता दो! इधर! इधर!

नीलू (कुत्ते से)—सहायता करो, मोती, उनका पीछा करो।

कुत्ता—(भूँकता हुआ)····जी हाँ, जी हाँ····

नीलू—रोटी कहाँ है ?

रोटी (पीछे की ओर से)—यहाँ पर हूँ····द्वार पर खड़ी हूँ, इधर से बाहर न निकलें····

[एक भूत उधर आगे बढ़ जाता है और रोटी सिर पर पैर रखकर चिल्लाती हुई भाग जाती है।]

रात्रि (तीन भूतों को गले से पकड़ती हुई)—इधर आओ। (नीलू से) जरा-सा द्वार खोल दो—(भूतों को अंदर ढकेलकर) ठीक हो रहा है। (कुत्ता दो को पकड़ कर ले आता है) ये भी फँस गये····जल्दी अन्दर जाओ। दस महीने तक अंदर ही रहना होगा।

नीलू (दूसरे द्वार के सामने जाकर)—इसके पीछे क्या है ?

रात्रि—इससे क्या ? कह दिया न, कि नील-पंछी यहाँ पर कभी भी नहीं आया। खैर,

रात्रि—जी नहीं। इसमें तरह-तरह की चीजें हैं। मैं इसमें बेरोजगार के तारे, मेरी अपनी सुगंध और जुगनुओं को रख देती हूँ तथा दीप-कीट, ओस, बुलबुल का गीत आदि भी····।

नीलू—समझ रहा हूँ····तारे, बुलबुल का गीत····इसमें जरूर नील-पंछी मिल जायगा।

रात्रि—जरूर खोल दीजिए। इसमें कोई भयंकर चीज नहीं है।

[नीलू धक्के से द्वार खोल देता है। तारे रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनी सुंदर तरुणियों के रूप में बाहर निकलकर नाचने लगते हैं। रात्रि की सुगंध, (जो प्रायः अदृश्य है) जुगनू, दीप-कीट, ओस आदि भी उनका साथ देते हैं। गुफा में से बुलबुल का गीत सुनाई दे रहा है।]

नीली (**हर्षित होकर तालियाँ बजाती है**)—वाह! वाह! कितनी सुन्दर रमणियाँ हैं।

नीलू—उनका नाच तो देख लो।

नीली—अरी, सुगंध भी कितनी मोहक है!

नीलू—उनका गाना बड़ा ही मधुर है।

नीली—जो मुश्किल से दिखाई देती हैं, वे कौन हैं?

रात्रि—ये मेरी छाया की सुगंध हैं।

नीलू—और उधर जो पारदर्शी मालूम होती हैं?····

रात्रि—वन और मैदान की ओस हैं····बस-बस वे तो नाचती ही रहेंगी····बाहर निकलने के बाद उन्हें फिर बन्द करना आसान नहीं। (**हाथ बजाकर**) सुनो तारे! यह नाचने का समय नहीं है····आकाश घोर बादलों से ढका हुआ है····जल्दी भीतर जाओ, नहीं तो सूर्य की एक किरण ले आती हूँ।

[सब डरकर गुफा के भीतर भाग जाती हैं। द्वार बन्द होते ही बुलबुल का गाना भी रुक जाता है।]

नीलू (**पीछे के दरवाजे के निकट जाकर**)—यहाँ तो मध्य द्वार है····

रात्रि (**गंभीर होकर**)—उसे मत खोलो····

नीलू—क्यों नहीं?

रात्रि—मना है····

नीलू—समझ गया, नील-पंछी यहीं छिपा हुआ है। ज्योति कह रही थी····

रात्रि (**मातृ-स्नेह जतलाकर**)—बेटा! सुनो···· मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया···· अपने सब रहस्य तुम्हारे लिए खोल दिये···· मैं माँ की तरह तुमसे स्नेह रखती हूँ; तुम्हारे बचपन और भोलेपन पर तरस खाती हूँ,···· मेरा कहना मान लो बेटा! और मुझपर विश्वास करो। अब आगे मत जाओ; अपने भाग्य की परीक्षा मत लो। इस दरवाजे को बंद रहने दो····

नीलू (**घबराकर**)—क्यों?

रात्रि—क्योंकि मैं तुम्हारा सर्वनाश नहीं चाहती···· जितने लोगों ने उस द्वार को रत्ती भर भी खोला, वे सब-के-सब इस गुफा में हमेशा के लिए गायब हो गये···· किसीने अबतक इस गुफा का नाम लेने का भी साहस नहीं किया। पृथ्वी पर जो कुछ

नीलू—अगला द्वार खोल दें....क्या है ?

रात्रि—यहाँ तो अंधकार और आतंक बन्द रहते हैं....।

नीलू—खोल सकता हूँ ?

रात्रि—अवश्य....मरीजों की तरह वे काफी शान्त हैं।

नीलू (**भयभीत होकर आधा दरवाजा खोल देता है तथा गुफा में नजर दौड़ाता है**)—वे यहाँ नहीं है।

रात्रि (**अंदर देखकर**)—अंधकार ! कहाँ हो ! जरा-सा बाहर आओ; बैठे-बैठे तुमलोगों का स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। आतंक भी बाहर निकले....कोई डर की बात नहीं।

[**कई अंधकार और आतंक बुरका पहनी स्त्रियों का रूप धारण कर संकुचित होकर निकलते हैं, अन्धकारों का बुरका काला है, आतंकों का हरा। नीलू की चेष्टा देखकर वे सब गुफा में तिरोहित हो जाते हैं**]

अरे, डरते क्यों हो।....बच्चा ही है, तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। (**नीलू से**) वे सब-के-सब बड़े संकोची बन गये हैं, केवल बड़ों को छोड़कर जिन्हें पीछे की ओर देख सकते हो....

नीलू (**गुफा में देखकर**)—वे तो भयानक हैं।

रात्रि—वे बँधे हुये हैं....वे ही मनुष्य से बिलकुल नहीं डरते....लेकिन दरवाजा बन्द कर दो, ऐसा न हो कि वह क्रुद्ध हो जायँ।

नीलू (**अगले द्वार पर जाकर**)—अरे ! यह तो और अधिक अंधकारमय है....क्या है इसमें ?

रात्रि—इसमें कई रहस्य हैं....अगर खोल देने पर ही तुले हुए हो तो खोल दो....लेकिन भीतर मत जाओ....खबरदार ! हम सब-के-सब दरवाजा बंद करने के लिए तैयार रहें; जैसा हमने युद्धों के लिए किया था।

नीलू (**अत्यन्त सावधानी से द्वार खोलकर और भीतर देखकर**)—हाय !....कितनी ठंढ है ! आँखें दुखने लगीं...जल्दी बन्द करो; वे दरवाजे से बाहर निकलना चाहते हैं। (**रात्रि, कुत्ता, बिल्ली, चीनी, सब मिलकर द्वार बन्द कर देते हैं**) —हाय ! हाय ! देख लिया, मैंने !

रात्रि—क्या देख लिया तुमने ?

नीलू (**घबराकर**)—यह मैं नहीं जानता ! भयंकर ही था। सब-के-सब अन्धे राक्षसों के समान बैठे थे....जो दैत्य मुझे पकड़ना चाहता था, वह कौन था ?

रात्रि—वह मौन होगा ; इस द्वार का पहरा उसके जिम्मे है....भयंकर था क्या ? तुम तो पीले पड़ गये हो और सिर से पैर तक काँपते हो !

नीलू—स्वप्न में भी नहीं सोचा था....कभी भी इस प्रकार का दृश्य नहीं देखा था—हाथ अबतक बर्फ के समान ठंढे हैं....

रात्रि—खोज में आगे बढ़ोगे तो और भयंकर होगा।

नीलू (**अगले द्वार की ओर बढ़कर**)—और यह ! यह भी भयंकर है ?

रात्रि—जी नहीं। इसमें तरह-तरह की चीजें हैं। मैं इसमें बेरोजगार के तारे, मेरी अपनी सुगंध और जुगनुओं को रख देती हूँ तथा दीप-कीट, ओस, बुलबुल का गीत आदि भी····।

नीलू—समझ रहा हूँ····तारे, बुलबुल का गीत····इसमें जरूर नील-पंछी मिल जायगा।

रात्रि—जरूर खोल दीजिए। इसमें कोई भयंकर चीज नहीं है।

[**नीलू धक्के से द्वार खोल देता है। तारे रंग-बिरंगी साड़ियाँ पहनी सुंदर तरुणियों के रूप में बाहर निकलकर नाचने लगते हैं। रात्रि की सुगंध, (जो प्रायः अदृश्य है) जुगनू, दीप-कीट, ओस आदि भी उनका साथ देते हैं। गुफा में से बुलबुल का गीत सुनाई दे रहा है।**]

नीली (**हर्षित होकर तालियाँ बजाती है**)—वाह ! वाह ! कितनी सुन्दर रमणियाँ हैं।

नीलू—उनका नाच तो देख लो।

नीली—अरी, सुगंध भी कितनी मोहक है !

नीलू—उनका गाना बड़ा ही मधुर है।

नीली—जो मुश्किल से दिखाई देती हैं, वे कौन हैं ?

रात्रि—ये मेरी छाया की सुगंध हैं।

नीलू—और उधर जो पारदर्शी मालूम होती हैं ?····

रात्रि—वन और मैदान की ओस हैं····बस-बस वे तो नाचती ही रहेंगी····बाहर निकलने के बाद उन्हें फिर बन्द करना आसान नहीं। (**हाथ बजाकर**) सुनो तारे ! यह नाचने का समय नहीं है····आकाश घोर बादलों से ढका हुआ है····जल्दी भीतर जाओ, नहीं तो सूर्य की एक किरण ले आती हूँ।

[**सब डरकर गुफा के भीतर भाग जाती हैं। द्वार बन्द होते ही बुलबुल का गाना भी रुक जाता है।**]

नीलू (**पीछे के दरवाजे के निकट जाकर**)—यहाँ तो मध्य द्वार है····

रात्रि (**गंभीर होकर**)—उसे मत खोलो····

नीलू—क्यों नहीं ?

रात्रि—मना है····

नीलू—समझ गया, नील-पंछी यहीं छिपा हुआ है। ज्योति कह रही थी····

रात्रि (**मातृ-स्नेह जतलाकर**)—बेटा ! सुनो···· मैंने तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं किया···· अपने सब रहस्य तुम्हारे लिए खोल दिये···· मैं माँ की तरह तुमसे स्नेह रखती हूँ, तुम्हारे बचपन और भोलेपन पर तरस खाती हूँ,···· मेरा कहना मान लो बेटा ! और मुझपर विश्वास करो। अब आगे मत जाओ; अपने भाग्य की परीक्षा मत लो। इस दरवाजे को बंद रहने दो····

नीलू (**घबराकर**)—क्यों ?

रात्रि—क्योंकि मैं तुम्हारा सर्वनाश नहीं चाहती···· जितने लोगों ने उस द्वार को रत्ती भर भी खोला, वे सब-के-सब इस गुफा में हमेशा के लिए गायब हो गये···· किसीने अबतक इस गुफा का नाम लेने का भी साहस नहीं किया। पृथ्वी पर जो कुछ

नीलू—अगला द्वार खोल दूँ....क्या है ?

रात्रि—यहाँ तो अंधकार और आतंक बन्द रहते हैं....।

नीलू—खोल सकता हूँ ?

रात्रि—अवश्य....मरीजों की तरह वे काफी शान्त हैं।

नीलू (भयभीत होकर आधा दरवाजा खोल देता है तथा गुफा में नजर दौड़ाता है)—वे यहाँ नहीं हैं।

रात्रि (अंदर देखकर)—अंधकार! कहाँ हो! जरा-सा बाहर आओ; बैठे-बैठे तुमलोगों का स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। आतंक भी बाहर निकले....कोई डर की बात नहीं।

[कई अंधकार और आतंक बुरका पहनी स्त्रियों का रूप धारण कर संकुचित होकर निकलते हैं, अन्धकारों का बुरका काला है, आतंकों का हरा। नीलू की चेष्टा देखकर वे सब गुफा में तिरोहित हो जाते हैं]

अरे, डरते क्यों हो।....बच्चा ही है, तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। (नीलू से) वे सब-के-सब बड़े संकोची बन गये हैं, केवल बड़ों को छोड़कर जिन्हें पीछे की ओर देख सकते हो....

नीलू (गुफा में देखकर)—वे तो भयानक हैं।

रात्रि—वे बँधे हुये हैं....वे ही मनुष्य से बिलकुल नहीं डरते....लेकिन दरवाजा बन्द कर दो, ऐसा न हो कि वह क्रुद्ध हो जायँ।

नीलू (अगले द्वार पर जाकर)—अरे! यह तो और अधिक अंधकारमय है....क्या है इसमें ?

रात्रि—इसमें कई रहस्य हैं....अगर खोल देने पर ही तुले हुए हो तो खोल दो....लेकिन भीतर मत जाओ....खबरदार! हम सब-के-सब दरवाजा बंद करने के लिए तैयार रहें; जैसा हमने युद्धों के लिए किया था।

नीलू (अत्यन्त सावधानी से द्वार खोलकर और भीतर देखकर)—हाय!....कितनी ठंढ है! आँखें दुखने लगीं...जल्दी बन्द करो; वे दरवाजे से बाहर निकलना चाहते हैं। (रात्रि, कुत्ता, बिल्ली, चीनी, सब मिलकर द्वार बन्द कर देते हैं) —हाय! हाय! देख लिया, मैंने!

रात्रि—क्या देख लिया तुमने ?

नीलू (घबराकर)—यह मैं नहीं जानता! भयंकर ही था। सब-के-सब अन्धे राक्षसों के समान बैठे थे....जो दैत्य मुझे पकड़ना चाहता था, वह कौन था ?

रात्रि—वह मौन होगा; इस द्वार का पहरा उसके जिम्मे है....भयंकर था क्या ? तुम तो पीले पड़ गये हो और सिर से पैर तक काँपते हो!

नीलू—स्वप्न में भी नहीं सोचा था....कभी भी इस प्रकार का दृश्य नहीं देखा था—हाथ अबतक बर्फ के समान ठंढे हैं....

रात्रि—खोज में आगे बढ़ोगे तो और भयंकर होगा।

नीलू (अगले द्वार की ओर बढ़कर)—और यह! यह भी भयंकर है ?

नीली (नीले पंछियों से घिरी हुई)—मैं सात पकड़ चुकी हूँ····वे जोर से अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं····उन्हें अपने पास नहीं रख सकूँगी।

नीलू—मैं भी नहीं ! अधिक हो गये हैं····! वे उड़ जाते हैं और वापस आ जाते हैं····मोती के पास भी हैं। वे हमें खींच कर आकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। आओ, इधर से निकलें····ज्योति हमारी राह देख रही है !····वह खुश होगी····इधर ! इधर ! आओ।

[वे उद्यान से निकलते हैं, उनके हाथो में नीलेपंछी फड़फड़ाते हैं। उनके पीछे रोटी और चीनी; इनके पास पक्षी नहीं हैं। रात्रि और बिल्ली उद्यान के द्वार के पास जाकर सशंकित भाव से भीतर दृष्टि दौड़ाती हैं।]

रात्रि—उन्हें नील-पंछी नहीं मिला ?

बिल्ली—नहीं मिला···· मैं उसे वहाँ उस चन्द्रमा की किरण पर देख रही हूँ···· वह काफी ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ है···· वे उसे नहीं पकड़ सके।

[पर्दा गिरता है और अनन्तर पर्दे के सामने बाईं ओर से ज्योति का तथा दाईं ओर से नीलू, नीली और कुत्ते का प्रवेश। ये मानों पकड़े हुए पक्षियों से ढके हैं। किन्तु पक्षी निर्जीव और पंख टूटे से प्रतीत होते हैं।]

ज्योति—अच्छा बताओ; नील-पंछी को पकड़ लिया ?

नीलू—जरूर, जितना चाहता था उतना पकड़ लिया···· हजारों हैं वहाँ····देखो, यहाँ हैं (ज्योति को पक्षी देते हुए नीलू देखता है कि सब-के-सब मर चुके हैं) अरे !··· ये तो मर गये हैं···· इन्हें क्या हुआ ?····नीली, तुम्हारे पक्षी कैसे है ? (क्रोध के आवेश में पक्षियों को पटकते हुए)—हाय, हाय, अनर्थ हुआ है !··· किसने इन्हें मार डाला है ?···· मुझे निराशा हो रही है।

[वह भुजाओं से मुँह छिपाकर सिसकियाँ भरने लगता है]

ज्योति (मातृवत् उसे छाती से लगाकर)—बेटा ! रोओ मत, जो पक्षी दिन के प्रकाश में जीने योग्य है, उसे तुमने पकड़ा नहीं···· दूसरी जगह चला गया होगा···· हम उसे जरूर पायँगे।

कुत्ता (मरे पक्षियों को देखते हुए)—क्या इन्हें खाया जा सकता है ?

[सब बाईं ओर बाहर चले जाते हैं]

भी भीषण और भयंकर है वह इस गुफा के आतंक के मुकाबिले में कुछ भी नहीं है···· अगर तुम उसे खोलने की जिद करोगे तो मुझे पहले अपने बिना खिड़की वाले कमरे में छिप जाने का मौका दो···· तुम्हीं अब विचार कर तय कर लो।

[नीली रोती-चिल्लाती हुई नीलू को ले जाने का प्रयत्न करती है]

रोटी (काँपती हुई)—उसे मत खोलिए, स्वामीजी ! (घुटने टेककर)--हमलोगों पर दया कीजिए···· घुटने टेक कर गिड़गिड़ाती हूँ···· रात्रिदेवी ठीक ही कह रही हैं····

बिल्ली—हमसब की जान कुरबान करते हो····।

नीलू—मुझे द्वार को खोलना ही है···।

नीली (पैरों को पटकती और सिसकियाँ भरती हुई)—नहीं···· नहीं !

नीलू—ऐ चीनी और रोटी ! नीली का हाथ पकड़कर यहाँ से भाग जाओ। मैं द्वार को खोल देता हूँ····

रात्रि—बचाओ-बचाओ, जल्दी भाग जाओ ! (वह भाग जाती है)

रोटी (सिर पर पैर रखती हुई)—कम-से-कम हमें बाहर निकलने का समय दे दीजिए।

बिल्ली (भागती हुई)—जरा-सा रुक जाइए।

[सब मंच के दूसरे कोने पर खंभे की आड़ में छिप जाते हैं। नीलू कुत्ते के साथ द्वार के सामने अकेला रह जाता है]

कुत्ता (अपने भय पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए)—मैं यहाँ रुकूँगा····मुझे डर नहीं है····यहाँ रहूँगा····अपने स्वामी का साथ दूँगा····मैं रहूँगा····रहूँगा।

नीलू—(कुत्ते को प्यार करते हुए)—ठीक है, मोती ! ठीक है। मुझे गले लगाओ···· हम तो दो हैं····खबरदार !

[वह ताले में चाभी लगाता है। रोटी आदि भगोड़े, भय के मारे जोर से चिल्लाते हैं, द्वार के दोनों किवाड़ अचानक अपने-आप दोनों ओर दीवार में घुस जाते हैं और एक दिव्य उद्यान दिखाई देने लगता है। उसमें असंख्य नील-पंछी तारों तथा ग्रहों के बीच चाँदनी में उड़ रहे हैं। वे क्षितिज तक फैलकर सारा वातावरण नीले रंग से भर देते हैं। नीलू आश्चर्यचकित होकर उद्यान में खड़ा रह जाता है]

वाह ! वाह ! आकाश को देख लो (भगोड़ों की ओर घूमकर)—इधर आइए, जल्दी ! यहाँ हैं ; नीलेपंछी मिल गये हैं। हजारों, लाखों, करोड़ों !····आओ नीली ! मोती ! सब-के-सब आना और मदद देना। (पंछियों को झपटकर पकड़ते हुए) आसानी से पकड़ते आ रहे हैं। वे निःशंक हैं, हमसे बिलकुल नहीं डरते। इधर आओ। इधर आओ।

[नीली आदि आ जाते हैं ! रात्रि और बिल्ली को छोड़कर सभी उद्यान में प्रवेश करते हैं]

देखते हो न ! बहुत अधिक हैं ! अपने-आप मेरे हाथों पर आ बैठते हैं। देखो तो, चाँद की किरणें खा रहे हैं। नीली, कहाँ हो तुम ? इतने नीले पंख, इतने नीले पर गिर रहे हैं कि कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है····मोती ! उन्हें मत काटो····उन्हें चोट नहीं पहुँचाना, लेकिन सावधानी से पकड़ लेना।

नीली (नीले पंछियों से घिरी हुई)—मैं सात पकड़ चुकी हूँ····वे जोर से अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं····उन्हें अपने पास नहीं रख सकूँगी।

नीलू—मैं भी नहीं! अधिक हो गये हैं····! वे उड़ जाते हैं और वापस आ जाते हैं····मोती के पास भी हैं। वे हमें खींच कर आकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। आओ, इधर से निकलें····ज्योति हमारी राह देख रही है!····वह खुश होगी····इधर! इधर! आओ।

[वे उद्यान से निकलते हैं, उनके हाथो में नीलेपंछी फड़फड़ाते हैं। उनके पीछे रोटी और चीनी; इनके पास पत्ती नहीं हैं। रात्रि और बिल्ली उद्यान के द्वार के पास जाकर सशंकित भाव से भीतर दृष्टि दौड़ाती हैं।]

रात्रि—उन्हें नील-पंछी नहीं मिला?

बिल्ली—नहीं मिला···· मैं उसे वहाँ उस चन्द्रमा की किरण पर देख रही हूँ···· वह काफी ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ है···· वे उसे नहीं पकड़ सके।

[पर्दा गिरता है और अनन्तर पर्दे के सामने बाईं ओर से ज्योति का तथा दाईं ओर से नीलू, नीली और कुत्ते का प्रवेश। ये मानों पकड़े हुए पत्तियों से ढके हैं। किन्तु पत्ती निर्जीव और पंख टूटे से प्रतीत होते हैं।]

ज्योति—अच्छा बताओ; नील-पंछी को पकड़ लिया?

नीलू—जरूर, जितना चाहता था उतना पकड़ लिया···· हजारों हैं वहाँ····देखो, यहाँ हैं (ज्योति को पत्ती देते हुए नीलू देखता है कि सब-के-सब मर चुके हैं) अरे!··· ये तो मर गये हैं···· इन्हें क्या हुआ?····नीली, तुम्हारे पत्ती कैसे है? (क्रोध के आवेश में पत्तियों को पटकते हुए)—हाय, हाय, अनर्थ हुआ है!··· किसने इन्हें मार डाला है?···· मुझे निराशा हो रही है।

[वह भुजाओं से मुँह छिपाकर सिसकियाँ भरने लगता है]

ज्योति (मातृवत् उसे छाती से लगाकर)—बेटा! रोओ मत, जो पत्ती दिन के प्रकाश में जीने योग्य है, उसे तुमने पकड़ा नहीं···· दूसरी जगह चला गया होगा···· हम उसे जरूर पायँगे।

कुत्ता (मरे पत्तियों को देखते हुए)—क्या इन्हें खाया जा सकता है?

[सब बाईं ओर बाहर चले जाते हैं]

द्वितीय दृश्य

नीलू—स्थान यही है ?

बिल्ली (**चापलूसी और उत्सुकता से बच्चों का स्वागत करती हुई**)—आप पहुँच गये, स्वामीजी ! पधारिए !....आज तो बड़े सुन्दर लग रहे हैं....मैं आपके आने की सूचना देने के लिए कुछ पहले आई थी....सब ठीक है । अबकी बार नील-पंछी जरूर ही मिल जायगा....देश-भर के प्रधान जानवरों को बुलाने के लिए मैंने अभी खरगोश को भेज दिया है....उनके आने की आवाज सुनिए, वे काफी संकोची हैं.... निकट आने का साहस नहीं है....।

[**गाय, सूअर, घोड़े, गधे आदि पशुओं की आवाज । नीलू को अलग ले जाकर**] आप कुत्ते को यहाँ लाये क्यों ?....मैंने आपसे कहा था कि उसे कोई भी नहीं चाहता, पेड़ तक उससे नफरत करते हैं, मुझे डर है कि कहीं उसके रहने से हमारा काम न बिगड़ जाय ।

नीलू—उससे जी छुड़ा न सका (**कुत्ते से**) जाओ दुष्ट, चले जाओ ।

कुत्ता—कौन ? मैं ?....क्यों ? क्या किया मैंने ?....

नीलू—मैं तुमसे कहता हूँ—चले जाओ ! हमलोग तुम्हें चाहते ही नहीं....। तुमसे हमारा जी ऊब गया है ।....

कुत्ता—मैं चुप रहूँगा ।....दूर से आपके पीछे-पीछे आऊँगा....मुझे कोई भी नहीं देख सकेगा ।

बिल्ली (**धीरे-धीरे नीलू से**)—देखिए, आपकी बात मानता ही नहीं, इतना क्यों बरदाश्त करते हैं आप ?....उसे लाठी मारिए । नाको दम कर रहा है, टलने का नाम लेता ही नहीं ।

नीलू (**कुत्ते को मारकर**)—मेरी बात मान लो, चले जाओ ।

कुत्ता (**चिल्लाते हुए**)—हाय ! हाय !! हाय !!!

नीलू—पेट भर गया ?

कुत्ता—यह कुछ भी नहीं है । आपको गले लगाना चाहता हूँ । (**वह नीलू को आलिंगन में बद्ध कर लेता है**)

नीलू—अरे ! ठीक है ! बहुत हुआ.... जाओ ।

नीली—नहीं, नहीं, मैं चाहती हूँ कि वह हमारे साथ रहे.... इसके बिना मुझे सबसे डर लगता है ।....

कुत्ता (**नीली के चारों ओर कूदते हुए और उसका बारम्बार चुंबन करते हुए**)—अहा ! यह कितनी अच्छी लड़की है ! कितनी सुन्दर !! कितनी भली !!! कितनी सुन्दर !!!! कितनी कोमल !!!!!....इसे छाती से लगाना चाहता हूँ । फिर ! फिर !! फिर !!!

बिल्ली—मूर्ख कहीं का ! खैर, देखा जायगा.... समय नष्ट न करें.... आप मणि घुमाइए....

नीलू—कहाँ खड़ा हो जाऊँ ?

बिल्ली—चाँद की इस किरण में; अधिक स्पष्ट रूप से देख सकेंगे.... ठीक ! अब धीरे

से मणि को घुमाइए।····

[नीलू मणि को घुमाता है; तुरन्त डालियों तथा पत्तों में कंपन आ जाता है। वृक्षों के तने खुल जाते हैं और उनसे उनकी आत्मा निकलती हैं। प्रत्येक की आकृति वृक्ष के अनुरूप है। उदाहरणार्थ :—पीपल की आत्मा मोटे बौने के रूप में निकलती है; नीम की आत्मा शांतिमय और प्रसन्नचित है; साल की आत्मा रमणीय और फुरतीली; झाऊ की आत्मा झुकी हुई और रुआँसी; देवदार की आत्मा लम्बी और मौनी; पलाश की आत्मा दुःखी; शीशम की आत्मा छबीली और आडम्बरी; सेमर की आत्मा उल्लसित और वाचाल। कुछ मानों कैद या लम्बी नींद के बाद अंगड़ाई लेती हुई धीरे-धीरे तनों में से निकलती हैं, कुछ फुरतीली और उत्सुक हैं और कूदकर निकलती हैं। सब यथा संभव उस वृक्ष के पास रहते हुए, जहाँ से निकलते हैं, बच्चों को घेरकर खड़े हो जाते हैं]

सेमर—(पहले पहुँचकर तथा चिल्लाकर)—मनुष्य आ गये। मनुष्य के बच्चे आगये। उनसे हम बातचीत कर सकेंगे···· हमारा मौन समाप्त है···· वे कहाँ से आये? वे कौन हैं···? (नीम से जो हुक्का पीते हुए धीरे-धीरे निकट आ रहा है) दादा नीम! उन बच्चों को जानते हो तुम?

नीम (बच्चों का निरीक्षण करते हुए)—सच कह रहा हूँ, उन्हें मैं नहीं जानता····बच्चे हैं···मैं तो केवल प्रेमियों को जानता हूँ जो चाँदनी रात में मेरे पास आते हैं।

शीशम (चश्मा लगाकर)—ये कौन हैं? देहात के गरीब बच्चे होंगे।

सेमर—शीशम महाशय! आप तो केवल शहरों के राजमार्ग पर रहते हैं न!

झाऊ (खड़ाँऊ पहनकर, रिरयाते हुए)—हाय! हाय! वे जरूर मेरी डालियाँ काटने आये होंगे।

सेमर—चुप रहिए, बड़ अपने भवन से निकल रहे हैं। अस्वस्थ मालूम होते हैं। बहुत बूढ़े हो चले हैं। उनकी उमर क्या होगी? नीम कहता है—चार हजार है। यह तो अतिरंजन होगा···· खैर, उनसे पूछ लेंगे।

[बड़ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। बहुत बूढ़ा है; उसका हरा लबादा एक प्रकार की लता से ढका है। वह अंधा है और उसकी लम्बी दाढ़ी पक गई है। नील-पंछी उसके कन्धे पर बैठा है। एक हाथ में लाठी है जिसके सहारे वह चल रहा है, दूसरा हाथ एक जवान बड़ के कन्धे पर रखा हुआ है। उसके आने पर अन्य वृक्ष उसके चारों ओर खड़े होकर उसे प्रणाम करते हैं।]

नीलू—नील-पंछी उसके पास है। जल्दी-जल्दी इधर आओ। मुझे नील-पंछी दे दो।····

सब वृक्ष—चुप रहो!

बिल्ली (नीलू से)—नमस्कार करो—यह बड़ है।

बड़ (नीलू से)—तुम कौन हो?

नीलू—महोदय, मैं नीलू हूँ। मुझे नील-पंछी कब मिल सकेगा?

बड़—तुम्हारे बाप ने हमलोगों को बहुत नुकसान पहुँचाया है।···· मेरे ही परिवार में उसने कितनों को मार डाला है। छः सौ पुत्र, चार सौ पचहत्तर चाचा-चाची, फूफा-

फूफी, बारह सौ चचेरे और फूफेरे भाई-बहन, तीन सौ अस्सी पतोहू और बारह हजार परपोते आदि का वध उसने किया है ।

नीलू—महाशय, इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता···· उन्होंने जानबूझकर ऐसा नहीं किया है ।

वड़—तुम यहाँ क्यों आये हो ? और हमारी आत्माओं को हमारे घरों से बाहर क्यों बुलाया है ?

नीलू—महाशय ! इसके लिए मैं माफी माँगता हूँ···· बिल्ली ने कहा था कि आप हमलोगों को बता सकेंगे कि नील-पंछी कहाँ है····

वड़—हाँ, मुझे मालूम है कि तुम नील-पंछी की खोज में हो, अर्थात् सृष्टि तथा आनंद का रहस्य जानना चाहते हो, इसे पाकर मनुष्य हमलोगों की गुलामी को और कठोर बना देंगे····

नीलू—ऐसा नहीं है महाशय ! बैजयन्ती परी की पुत्री के लिए इसकी जरूरत है, वह सख्त बीमार है····

वड़—बहुत हुआ,···· जानवर कहाँ हैं ? क्या कहते हैं ? यह उनका मामला भी है !···· हम वृक्षों को ही इस भारी निर्णय की जिम्मेवारी नहीं लेनी चाहिए···· जिस दिन मनुष्य को पता चलेगा कि हमने क्या किया और क्या करनेवाले हैं, उस दिन अनर्थ होगा। इसलिए बहुत आवश्यक है कि हम एकमत होकर निर्णय करें और बाद में एकमत होकर चुप रहें ।

देवदार (**दूसरे वृक्षों के ऊपर दूर तक देखते हुए**)—जानवर आ रहे हैं····खरगोश के पीछे-पीछे आ रहे हैं···· देखो घोड़े, साँड़, बैल, गाय, भेड़िये, भेड़, सूअर, मुर्गे, बकरी, गधे और भालू की आत्माएँ आ गई हैं ।

[ज्यों-ज्यों देवदार उसका नाम लेता है, पशुओं को आत्माओं का क्रमशः प्रवेश। वे वृक्षों के बीच बैठ जाती हैं, लेकिन बकरी की आत्मा इधर-उधर भटकती है और सूअर की आत्मा वृक्षों की जड़ों को खोदने लगती है।]

वड़—सब आ गये हैं ?

खरगोश—मुर्गी अपने अण्डे नहीं छोड़ सकी, गीदड़ घूमने निकला है, बारहसिंगे के पैर दुख रहे हैं, लोमड़ी बीमार है—देखिए डाक्टर का प्रमाण-पत्र, बत्तक नहीं समझ पाता और मोर बिगड़ गया····

वड़—यह तो बहुत बुरी बात है। खैर, हम यहाँ काफी हैं···· भाइयो ! आपलोगों को मालूम है कि मामला क्या है । इस लड़के के पास एक मणि है, जिसे पृथ्वी की शक्तियों से चुराया गया है । इस मणि के सहारे वह हमारा नील-पंछी हथिया सकता है और इस प्रकार उस रहस्य को प्राप्त कर सकता है, जिसपर सृष्टि के आरंभ से हमारा ही अधिकार है···· हम मनुष्य के स्वभाव से परिचित हैं, हमें रत्ती भर भी संदेह नहीं कि रहस्य को पाकर वह हमारे साथ क्या बरताव करेगा। इसलिए इस हालत में आगा-पीछा करना निरी मूर्खता होगी···· यह संकट का समय है, बच्चे को उड़ा देना चाहिए । विलंब करने से अनर्थ हो जायगा····

नीलू—वह क्या कह रहा है ?

कुत्ता (वड़ के चारो ओर घूमते हुए दाँत दिखलाता है)—मेरे दाँत देखते हो बूढ़े–लंगड़े–वदमाश !

साल (क्रुद्ध होकर)—वह वड़ का अपमान कर रहा है ।

वड़—कुत्ता है क्या ? उसे यहाँ से निकाल दो । हम अपने बीच किसी विश्वासघाती को नहीं बरदाश्त कर सकते ।

बिल्ली (नीलू से, धीमे स्वर में)—कुत्ते को यहाँ से दूर कीजिए···· गलतफहमी है···· सब कुछ मुझपर छोड़ दीजिए···· लेकिन उसे जल्दी-जल्दी दूर कर दीजिए····

नीलू (कुत्ते से)—जाओ, चले जाओ····।

कुत्ता—मुझे इस बूढ़े का पाजामा फाड़ने दीजिए ····अच्छा मजाक होगा····

नीलू—चुपचाप चले जाओ ! यहाँ से चले जाओ ! कमबख्त !

कुत्ता—अच्छा, ठीक है ! जाता हूँ···· जरूरत होने पर वापस आऊँगा····

बिल्ली (धीमे-धीमे नीलू से)—अच्छा है, अगर उसे बाँध दिया जाय; नहीं तो वह जरूर उत्पात मचायगा···· पेड़ गुस्सा करेंगे और सारा काम बिगड़ जायगा····

नीलू—क्या किया जाय···· तस्मा मेरे पास नहीं है ।

बिल्ली—देखिए, लता मजबूत डोरी लिये आ रही है····

कुत्ता (गुर्राते हुए)—वापस आऊँगा ! जरूर वापस आऊँगा । बदमाश ! शैतान ! यह बिल्ली की करतूत है । इसका बदला लूँगा ! (बिल्ली से) क्या-क्या फुसफुसा रही हो, बदमाश ?

बिल्ली—देखते हैं न, सबका अपमान करते जाते हैं !

नीलू—हाँ, सत्य है । बहुत परेशान करता है । हम एक-दूसरे से बातचीत भी कर नहीं पाते । लताजी ! उसे बाँधने की कृपा कीजिए !

लता (डरती हुई कुत्ते के निकट जाकर)—वह काटेगा तो नहीं ?....

कुत्ता—यह खूब रही ! वह तो तुम्हें छाती लगाना चाहता है···· आओ न बदजात !

नीलू (कुत्ते को धमकाते हुए)—मोती !

कुत्ता (दुम हिलाते हुए नीलू के पास रेंगकर)—स्वामीजी ! क्या चाहते हैं ?

नीलू—लेट जाओ ! लता का हुक्म मान लो, तुम्हें बांधना चाहती है ।

कुत्ता (लता उसे बाँधती है, कुत्ता गुर्राता है)—निकम्मी लता ! क्या कर रही हो ?···· स्वामी जी ! देखिए वह मेरे पैर उखाड़ रही है । मेरा गला घोंटना चाहती है।

नीलू—तुम्हारी ही करतूत का नतीजा है !···· चुप रहो, तुम्हें कौन बरदाश्त कर सकता है ।

कुत्ता—आप भारी गलती कर रहे हैं···· वे सब बदनीयत हैं···· स्वामीजी, आप खबरदार रहें !···· मुँह भी बंद कर रही है !···· मुझसे बोला नहीं जाता !····

लता—(कुत्ते को कसकर बाँध लिया है)—इसे कहाँ रखा जाय ? इसे कसकर बाँधा है····अब बिलकुल शांत है ।····

वड़—इसे उधर मेरे तने के पीछे मेरी जड़ में बाँध दो····इसे क्या करेंगे, बाद में

देखा जायगा। (लता और सेमर कुत्ते को बड़ के पीछे ले जाते हैं) अच्छा, यह विश्वासघाती चला गया ; अब हम अपने ही न्याय और सचाई के अनुसार परामर्श करें। मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि मैं आज घबरा रहा हूँ····यह पहली बार है, जब हमें मनुष्य का न्याय करने का तथा उसे अपनी शक्ति का अनुभव कराने का मौका मिल रहा है। उसने हमारे प्रति इतना अन्याय किया है कि इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि उसे कौन-सी सजा मिलनी चाहिए····

सब वृक्ष और पशु—ठीक ही है। कोई भी संदेह नहीं! फाँसी! मौत! इतना अन्याय! इतना अत्याचार! इतने समय से! उसे कुचल दिया जाय! उसे खाया जाय! तुरंत ही। तुरंत ही।

नीलू—उन्हें क्या हुआ है, नाराज हैं क्या?

बिल्ली—घबराने की बात नहीं है····इसीलिए नाराज हैं कि इस साल बसंत अबतक नहीं आया····मुझ पर सब कुछ छोड़ देना····

बड़—सब एकमत हैं ; स्वाभाविक ही है। अब बदले से बचने के लिए हमें यही विचार करना है कि प्राणदंड का कौन-सा तरीका सबसे व्यावहारिक, आसान, शीघ्र और निरापद है।- जब मनुष्य वन में इन दो लाशों को पायँगे तब हमलोगों के अपराध का पता न चलने पावे।

नीलू—यह सब क्या हो रहा है? आखिर, वह चाहता क्या है? मेरा जी ऊब गया है। नील-पंछी उसके पास है। उसे मुझे क्यों नहीं देता?

साँड़ (आगे बढ़कर)—सबसे आसान तो यही है कि मैं उसे पेट में सींग से धक्का देकर मार दूँ। आज्ञा है?

बड़—यह कौन है?

बिल्ली—साँड़ है।

गाय—अच्छा होता अगर यह चुप रहे····मैं तो इस झमेले में नहीं पड़ने की····मुझे तो चाँदनी में चरने को घास खूब मिल रही है। मैं व्यस्त हूँ····

बैल—मैं आपका साथ दूँगा। मैं किसी भी फैसले से सहमत हूँ।

साल—उसे फाँसी देने के लिए मेरी सब-से-ऊँची शाखा तैयार है।

लता—और मैं रस्सी दूँगी।

देवदार—उनके ताबूत के लिए मैं तख्ते दूँगा।

पलाश—कब्र के लिए मैं जमीन दे दूँगा····

झाऊ—सब-से-अच्छा यह होता कि उन्हें मेरे पास की नदी में डुबाकर मार दिया जाय···· इस काम के लिए मैं तैयार हूँ।

नीम—अरे, इतनी निर्दयता की क्या जरूरत है? बच्चे ही हैं····उनके चारो ओर वृक्ष रोपकर हम उन्हें कैदी बना सकते हैं। इस काम की जिम्मेवारी मैं ले सकती हूँ।····

बड़—यह कौन बोल रहा है? यह तो नीम की मधुर आवाज मालूम होती है।

देवदार—वही है।

वड़—इसका माने यह है कि जानवरों के समान हम वृक्षों के बीच में भी विश्वासघाती मौजूद हैं।.... अबतक केवल फलवाले पेड़ मनुष्य का साथ दे रहे थे, और वे असली पेड़ तो हैं ही नहीं।....

सूअर (ललचाई आँखें दिखाते हुए)—मेरी समझ में सब-से-पहले लड़की को खाना चाहिए....बहुत स्वादिष्ट मालूम होती है....

नीलू—यह क्या बक रहा है?....खबरदार! बदमाश!!

बिल्ली—उन्हें क्या हुआ? अच्छा नहीं हो रहा है....

वड़—चुप! हमें निर्णय करना है कि प्रथम प्रहार करने का श्रेय किसे दिया जाय। मनुष्य के जन्म के बाद जो सबसे बड़ी जोखिम हमारे सामने आई है, इसे कौन दूर करेगा....

देवदार—इसका श्रेय आपको मिलना चाहिए, आप हमारे राजा और कुलपति हैं....

वड़—यह प्रिय देवदार होगा? हाय, मैं बूढ़ा हो चला हूँ। मैं अंधा और बीमार हूँ। मेरी भुजाएँ जवाब दे चुकी हैं....आपही इसके योग्य हैं, आप सदाबहार और हृष्ट-पुष्ट हैं, आपने इन सब वृक्षों का जन्म देखा है। आपको हमारे मुक्त करने का श्रेय मिलना चाहिए....

देवदार—पूज्य कुलपतिजी! धन्यवाद! लेकिन मुझे तो इन दोनों को दफनाने का श्रेय मिल ही जायगा। यदि उन्हें मारने का भी श्रेय दिया जायगा तो मेरे कार्य-बन्धु मुझसे अवश्य ईर्ष्या करेंगे; मेरा प्रस्ताव यह है कि साल को चुना जाय। हम दोनों के बाद वह सब-से-प्रतिष्ठित और सम्मानित है, उसकी भुजाएँ शक्तिशाली भी हैं....

साल—आपको मालूम होगा; दीमकों ने मुझे कमजोर बना दिया है। पीपल और पलाश तगड़े हैं।

पीपल—इसके लिए मैं तो तैयार हो जाता, लेकिन बहुत कष्ट में हूँ। कल रात को एक छछूंदर ने मेरे पैर का अँगूठा मरोड़ दिया है।

पलाश—मैं तो तैयार ही हूँ....लेकिन मेरी हालत बहुत कुछ भाई देवदार के समान है। मुझे तो उन्हें दफनाने का या कम-से-कम उनकी कब्र पर रोने का सौभाग्य मिलेगा ही....सेमर से निवेदन कीजिए।

सेमर—कौन? मैं? आपको यह क्या सूझ रहा है? मेरी लकड़ी उन बच्चों के शरीर से भी कोमल है....इसके अलावा मैं कुछ अस्वस्थ हूँ....बुखार से काँप रहा हूँ....मेरे पत्रों को देख लीजिए....आज सूर्योदय के समय मुझे जुकाम लगा होगा....

वड़ (अत्यन्त क्रुद्ध होकर)—मनुष्य से डरते हो? इन असहाय निरस्त्र बच्चों से भी डरते हो। इसी रहस्यमय भय के कारण तो हम गुलाम बन गये हैं....खैर, बहुत हुआ! मुझसे नहीं सहा जाता। यह मौका फिर नहीं मिलेगा; इसलिए मैं जो बूढ़ा हूँ; बूढ़ा ही नहीं, लँगड़ा, कमजोर और अंधा, फिर भी अकेला ही अपने सनातन शत्रु से लोहा लेने जा रहा हूँ। कहाँ है? (वह लाठी से टटोलते हुए नीलू की ओर बढ़ता है)

नीलू (जेब से चाकू निकालते हुए)—वह बूढ़ा मुझे लाठी मारना चाहता है क्या ?

[मनुष्य का रहस्यमय तथा अप्रतिकार्य अस्त्र, चाकू को देखकर सभी पेड़ भय से चिल्लाने लगते हैं और बड़ को आगे बढ़ने से रोक लेते हैं]

वृक्ष—चाकू ! खबरदार !····चाकू !

बड़—मुझे जाने दो !····इससे क्या ? चाकू हो या कुल्हाड़ी ! मुझे कौन रोक लेता है ? क्या यह सभी की राय है ? (लाठी फेंककर) अच्छा, जैसा चाहते हो ! धिक्कार है हम वृक्षों को ! जानवर हमें मुक्त कर दें !····

सांड़—ठीक ही है ! मैं इसकी जिम्मेवारी लेता हूँ····सींग के एक ही धक्के से····

बैल और गाय (पूँछ पकड़कर उसे रोकते हुए)—बीच में क्यों पड़ते हो ? मूर्ख मत बनो !····यहाँ तो दाल में कुछ काला है !···· कोई-न-कोई अनर्थ होनेवाला है···· इसका फल हमीं को भोगना पड़ेगा। छोड़ दो····यह हिंसक पशुओं का काम है····।

साँड़—नहीं-नहीं ! यह मेरा ही काम है !····देख लेना !····हाँ, ठीक है, मुझे रोक लो, नहीं तो अनर्थ करूँगा ।

नीलू (चीखती नीली से)—डरो मत, मेरे पीछे छिप जाओ····मेरे पास चाकू है····

मुर्गा—लड़का बड़ा साहसी है !

नीलू—अच्छा, समझ लिया । मुझे मारना चाहते हो ?

गधा—निश्चय ही, बेटा ! तुम्हारी अक्ल कहाँ गई है !

सूअर—तुम अभी भगवान से प्रार्थना करो····तुम्हारी अंतिम घड़ी आ गई है । लड़की को मत छिपने दो···· वह मेरी भूखी आँखों से ओझल न होने पावे···· पहले उसीको खाऊँगा ।

नीलू—मैंने क्या किया है ?

भेड़—कुछ भी नहीं बेटा ! तुमने मेरे भाई को, मेरी दो बहनों को, तीन चाचाओं को, दादा और दादी को केवल खा-भर लिया है····अब जरा देखना, जब तुम जमीन पर पटक दिये जाओगे, तब तुम्हें पता चलेगा कि मुझे भी दाँत हैं ।····

गधा—और यह भी कि मैं कैसी दुलत्ती झाड़ता हूँ ।

घोड़ा (पैर से जमीन कुरेदते हुए)—जो होगा सो होगा ····आपलोग क्या चाहते हैं, मैं उसे दाँतों से फाड़ दूँ या लात मार कर उड़ा दूँ ? (वह साहस पूर्वक नीलू की ओर आगे बढ़ता है । नीलू के चाकू ऊपर करते ही घोड़ा भय खाता है और सिर पर पैर रख कर भाग जाता है) अरे, यह कौन-सा तमाशा है ?···· न्याय कहाँ रह गया है ? वह तो लड़ने के लिए तैयार है !····

मुर्गा (नीलू को प्रशंसा की दृष्टि से देखते हुए)—कुछ भी हो, यह लड़का सचमुच शूरवीर है ।

सूअर (भालू और भेड़िये से)—हम सब मिलकर हमला करें····मैं पीछे से आपका साथ दूँगा ।····दोनों को पटक देंगे और लड़की को आपस में बाँट कर खा लेंगे····।

भेड़िया—उधर उसे फँसाए रहो····मैं पीछे से उस पर हमला करूँगा····(वह नीलू को पीछे की ओर से धक्का देता है । नीलू गिर जाता है)

नीलू—बदमाश !····(वह एक घुटने के बल आधा खड़ा हो जाता है और अपना चाकू घुमाते हुए अपनी चिल्लाती हुई बहन की भरसक रक्षा करता है, उसे गिरते हुए देखकर सब पशु और वृक्ष आगे बढ़ते हैं और उस पर प्रहार करने की चेष्टा भी करते हैं। नीलू घबराकर सहायता के लिए पुकारने लगता है) बचाओ ! बचाओ !! मोती ! मोती ! बिल्ली कहाँ है ? मोती ! बिल्ली ! आओ ! बचाओ !

बिल्ली (कपट से अलग रहकर)—मैं नहीं आ सकती···· पैर में मोच लग गई है।

नीलू (प्रहारों को बचाते हुए)—बचाओ, मोती ! मोती !! मेरी बाँह जवाब दे रही है ! ····ये अधिक हैं—भालू , सूअर, भेड़िया, गधा, देवदार, साल····मोती ! मोती ! मोती !!

[अपने टूटे हुए बंधनों को घसीटकर, कुत्ता बड़ के तने के पीछे से आकर वृक्षों तथा पशुओं को ढकेलकर नीलू के सामने खड़ा हो जाता है, प्रचण्ड बनकर उसकी रक्षा करने लगता है]

कुत्ता (दूसरों को काटते हुए)—देखिए, स्वामीजी ! आप न डरें ! उनपर हमला करें !····मेरे दाँत अच्छे हैं ····लो भालू , यह तुम्हारे लिए है ! और कौन है ? रे सूअर ! रे घोड़े !! रे साँड़ !! देखिए, साल का पाजामा फाड़ डाला मैंने, और बड़ का कुरता ! रे भागो, देवदार ! उफ ! कितनी गरमी है।

नीलू (थका-माँदा)—मेरे छक्के छूट गये ! पलाश ने सिर पर घूँसा जमा दिया है ।

कुत्ता—हाय ! झाऊ का प्रहार है ! मेरा पैर टूट गया है !

नीलू—सब मिलकर आ रहे हैं !···· भेड़िया आगे है।

कुत्ता—कोई हर्ज नहीं, उसे फाड़ डालूँगा !

भेड़िया—मूर्ख कहीं का ! तुम हमारी जाति के हो ! उसके माँ-बाप ने तुम्हारे बच्चों को पानी में डुबा-डुबाकर मार डाला है।

कुत्ता—अच्छा किया उन्होंने ! ये तो बहुत कुछ तुम्हारे समान थे, न !

सब वृक्ष और जानवर—विश्वासघाती ! मूर्ख ! बदमाश ! पाजी !! तुम्हें अवश्य मारेंगे, जरा इधर बढ़ जाओ।

कुत्ता (स्वामी-भक्ति से परिपूर्ण)—मैं अकेला ही हूँ; सब-के-सब मेरे विरुद्ध हैं ! फिर भी स्वामीजी का साथ नहीं छोड़ूँगा। (नीलू से) खबरदार ! भालू आ रहा है ! साँड़ से बचना ! मैं उसका गला पकड़ लेता हूँ ! हाय ! लात मारी उसने ! गधे ने मेरे दाँत उखाड़े हैं ····

नीलू—मैं और नहीं लड़ सकता, मोती ! हाय ! हाय !! पीपल का घूँसा है ! देखो, हाथ से लोहू टपक रहा है····यह भेड़िये या सूअर का प्रहार होगा !

कुत्ता—स्वामी जी ! आपको गले लगाऊँ ! ठीक है न ! मेरे पीछे खड़ा रहना ! देखिए, ये डर रहे हैं !····हाय, वे फिर आ रहे हैं ! उनका सामना करें !

नीलू (जमीन पर गिरते हुए)—अब नहीं बच सकूँगा ।

कुत्ता—कोई आ रहा है ! आवाज सुन रहा हूँ····सुगन्ध भी मालूम होती है !

नीलू—कहाँ ? कौन ?

कुत्ता—देखिए उधर ! ज्योति हमारे पास आ रही है, स्वामीजी ! हम बच गये ! मुझे गले लगाइये ! हम बच गये ! देखिए, ये सब संकोच कर रहे हैं, वापस जा रहे हैं ! डर गये हैं !····

नीलू—ज्योति ! ज्योति जी ! आइए ! जल्दी आइए !! ये विद्रोह कर रहे हैं ! सब-के-सब हमारे दुश्मन हैं !

[ज्योति का प्रवेश; ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रही है, समस्त अरण्य पर ऊषा का उदय होता जा रहा है]

ज्योति—क्या बात है ? क्या हो रहा है ? अरे, बेचारे, क्या तुम्हें मालूम नहीं था ?···· मणि को घुमाओ, ये सब मौन तथा अंधकार में वापस जायँगे; उनके मनोभाव तुमसे छिपे रहेंगे ।

[नीलू मणि घुमाता है । सब वृक्षों की आत्माएँ अपने-अपने तनों में तिरोहित हो जाती हैं । पशुओं की आत्माएँ भी लुप्त हो जाती हैं; दूर से एक गाय और एक भेड़ शांतिपूर्वक घास चरते दिखाई देती हैं,—अरण्य शांत हो जाता है । नीलू आश्चर्यचकित अपने चारों ओर देख रहा है]

नीलू—कहाँ हैं ? उन्हें क्या हुआ था ?···· क्या वे पागल हो गये थे ?

ज्योति—नही तो, वे हमेशा ऐसे ही है; लेकिन तुम उन्हें देख नहीं सकते, इसलिए जानते नहीं ···मैंने कहा था न कि मेरे रहने पर उन्हें जगाना खतरनाक है····

नीलू (**चाकू पर हाथ फेर रहा है**) जो हुआ सो हुआ । यदि कुत्ता साथ नहीं देता और मेरे पास चाकू नहीं होता तो····स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वे इतने दुष्ट हैं !····

ज्योति—अभी समझ लिया न कि इस दुनिया में सब-के-सब मनुष्य के दुश्मन हैं ····

कुत्ता—स्वामीजी, आपको तो चोट नहीं लगी ?

नीलू—अरे, यह कोई गहरी चोट नहीं है; नीली का एक बाल भी बाँका नहीं हुआ है; लेकिन मोती ! तुम्हारे मुँह से लोहू टपक रहा है, और पैर टूट गया है, न ?

कुत्ता—अरे, यह क्या है ? कल मालूम भी नहीं होगा कि कहाँ चोट····लेकिन सच बात तो यह है कि हम बड़ी मुश्किल से बच गये हैं····।

बिल्ली (**लङ्गड़ाती हुई किसी गढ़े से निकलकर**)—इसमें क्या संदेह है ! बैल ने मुझे सींग से पेट में धक्का दिया था···· अब कुछ दिखाई देता है; किन्तु दर्द बहुत हुआ···· और बड़ ने तो मेरा पैर ही तोड़ दिया है····

कुत्ता—जरा सा बताओ, कौन पैर ?

नीली (**बिल्ली को प्यार करती हुई**)—सच ! तुम कहाँ थी ? तुम्हें देखा नहीं, मैंने····

बिल्ली (**कपट से**)—रानीजी ! शुरू ही से मैं घायल हो गई थी । सूअर तुम्हें खा जाना चाहता था, मैंने उस पर हमला किया···· बड़ ने मुझे ऐसा घूँसा मारा कि मैं बेहोश हो गई ।

कुत्ता (**धीमे स्वर से, बिल्ली से**)—तुम्हारी खबर लेनी है; मुझे अभी कोई जल्दी नहीं है, लेकिन हाथ से तुम्हें नहीं निकलने दूँगा ।

बिल्ली (नीली से शिकायत करती हुई)—देखिए, रानीजी, वह मेरी निन्दा कर रहा है, मुझे पीटना चाहता है....

नीली (कुत्ते से)—उसे छोड़ दो, बदमाश !

[सब का प्रस्थान]

[पटाक्षेप]

चतुर्थ अंक

प्रथम दृश्य

पर्दे के सामने

[*नीलू, नीली, ज्योति, कुत्ते, बिल्ली, रोटी, अनल, चीनी, जल और दूध का प्रवेश*]

ज्योति—मुझे वैजयन्ती परी से खबर मिली है, बहुत संभव है कि नील-पंछी यहाँ है ।

नीलू—कहाँ ?

ज्योति—यहाँ, इस दीवाल के पीछे कब्रस्तान में···· मालूम होता है कि एक मुरदा उसे अपनी कब्र में छिपाये रखता है···· इसका पता लगाना है कि यह कौन है···· एक-एक करके देखना होगा ।

नीलू—यह कैसे होगा ?

ज्योति—इसमें क्या मुश्किल है ? बारह बजे रात को तुम मणि को घुमा दोगे, वे पृथ्वी से निकलेंगे; जो नहीं निकलेंगे तुम उन्हें उनकी कब्र में लेटे देख सकोगे····

नीलू—वे गुस्सा तो नहीं करेंगे ?

ज्योति—बिलकुल नहीं ! उन्हें पता भी नहीं चलेगा···· वे पसंद नहीं करते कि उन्हें जगाया जाय, लेकिन बारह बजे रात को वे कब्र से निकला ही करते हैं । उन्हें कोई विशेष असुविधा होगी ही नहीं ।

नीलू—रोटी, चीनी और दूध को देख लीजिए ! पीले क्यों पड़ गये हैं ? बोलते क्यों नहीं ?

दूध (घबराकर)—मुझे चक्कर आ रहा है····

ज्योति (नीलू से)—जाने दो···· वे तो मुरदों से डरते हैं····

अनल (उछलते हुए)—मुझे तो डर नहीं है । उन्हें जलाता हूँ···· पहले सब को जलाया करता था, बहुत अच्छा जमाना था ।

नीलू—कुत्ता काँप क्यों रहा है ? क्या उसे भी डर लग रहा है ?

कुत्ता (दाँत बजाते हुए)—मैं ? मैं काँपता कहाँ ! मुझे कभी भी डर नहीं लगता, लेकिन अगर आप यहाँ से चले जायँगे, मैं भी चला जाऊँगा····

नीलू—बिल्ली चुप रहती है, न ?

बिल्ली (रहस्यमय बनकर)—मुझे सब मालूम है····

नीलू (ज्योति से)—आप हमारे साथ जायँगी ?

ज्योति—नहीं जाऊँगी । वस्तुओं तथा पशुओं के साथ कब्रस्तान के दरवाजे पर रह जाना मेरे लिए उचित है । बात यह है कि अभी समय नहीं आया है···· और ज्योति मुरदों के यहाँ नहीं जा सकती,···· तुम्हें नीली के साथ भेज देता हूँ····

नीलू—कुत्ता हमारे साथ नहीं जा सकता ?
कुत्ता—मैं तो साथ रहूँगा ! मुझे अपने स्वामी के साथ ही रहना है ।
ज्योति—यह नहीं होगा.... परी का हुक्म साफ है; खैर, वहाँ कोई डरने की बात नहीं है....
कुत्ता—अच्छा ठीक है.... अगर मुरदे गुस्ताखी करें तो ऐसा कीजिए (**सीटी मारता है**) और तमाशा देख लीजिए.... वन के समान होगा; भूँ ! भूँ !! भूँ !!!....
ज्योति—अच्छा जा रही हूँ बेटा !.... पास खड़ी हूँ (**बच्चों को गले लगाती है**) जो मुझसे प्रेम रखते हैं और जिनसे मैं प्रेम रखती हूँ, वे हमेशा मुझे प्राप्त करते हैं (**वस्तुओं और पशुओं से**) तुम लोग इधर आओ ।
[**वस्तुओं और पशुओं के साथ ज्योति का प्रस्थान । बच्चे अकेले ही बीच में रह जाते हैं और पर्दा उठने लगता है ।**]

द्वितीय दृश्य

कब्रस्तान

[*चाँदनी रात है । देहाती कब्रस्तान । नीलू और नीली एक खम्भे के पास खड़े हैं ।*]
नीली—मुझे डर लग रहा है ।
नीलू (आशंकित)—मुझे तो कभी डर नहीं लगता ।
नीली—मुरदे बुरे होते हैं न ।
नीलू—अरे नहीं, ये तो जीवित हैं ही नहीं ।
नीली—कभी मुरदे को देखा है तुमने ।
नीलू—हाँ एक बार देखा है, बहुत छोटा था....
नीली—कैसा लगता है ?
नीलू—पीला होता है, बहुत शांत और ठंढा, और बिलकुल नहीं बोलता....
नीली—क्या हम उन्हें सचमुच देखेंगे ?
नीलू—और क्या ! ज्योति ने तो यही कहा है ।
नीली—कहाँ हैं वे मुरदे ?
नीलू—यहाँ हैं, घास या पत्थरों के नीचे....
नीली—सालभर से यहाँ ही हैं ?
नीलू—हाँ ! हाँ ! साल भर से ही नहीं और भी बहुत दिनों से !....
नीली (कब्रों के पत्थरों को दिखलाकर)—ये तो उनके घरों के द्वार होंगे !....
नीलू—हां !
नीली—क्या वे अच्छा मौसम होने पर बाहर निकलते हैं ?
नीलू—उन्हें केवल रात में बाहर निकलने की छुट्टी है ।

नीली—ऐसा क्यों ?
नीलू—क्योंकि वे केवल कमीज पहने हैं....
नीली—क्या पानी बरसते समय भी निकलते हैं ?
नीलू—नहीं, तब घर ही रहते हैं ।....
नीली—अच्छा, क्या उनका घर सुंदर है ?
नीलू—कहते हैं कि बहुत तंग है ।
नीली—बच्चे भी उनके यहाँ हैं ?
नीलू—जरूर हैं ! जितने बच्चे मरते हैं, वे उन्हें मिलते है ।
नीली—वे अपना जीवन-निर्वाह कैसे करते हैं ?
नीलू—वे तो जड़ें खाते हैं ।
नीली—क्या आज सचमुच, हम उन्हें देखेंगे ?
नीलू—जरूर । जानती नहीं, मणि को घुमाने पर सब कुछ दिखाई देता है ।
नीली—वे हम से क्या कहेंगे ?
नीलू—कुछ भी नहीं; क्योंकि वे बोलते ही नहीं ।
नीली—वे बोलते क्यों नहीं ?
नीलू—क्योंकि उन्हें कुछ कहना ही नहीं हैं ।
नीली—लेकिन क्यों कुछ भी नहीं कहना है ?
नीलू—क्या, सिर खा रही है ?

[कुछ देर तक मौन]

नीली—मणि को कब घुमाओगे ?
नीलू—याद नहीं है क्या ? ज्योति ने बारह बजे तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा है । इस तरह निकलने में उन्हें कम असुविधा है ।
नीली—कम असुविधा कैसी ?
नीलू—इसीलिए कि वे तो यों ही बारह बजे निकला करते हैं ।
नीली—क्या अबतक बारह नहीं बजे ?
नीलू—गिरजाघर की घड़ी देखती हो ?
नीली—हाँ, देखती हूँ, छोटी सुई भी देख सकती हूँ....
नीलू—देखते हो, न ! बारह बजनेवाला है....अभी ही ! सुनते हो !

[बारह बज रहे हैं]

नीली—मैं जाना चाहती हूँ ।
नीलू—अभी नहीं जा सकती,....मणि को घुमानेवाला हूँ....
नीली—नहीं, नहीं ! ऐसा मत करो ! मैं जाना चाहती हूँ । भैया ! मुझे डर लग रहा है....डर के मारे साँस रुक गई है....
नील—कोई खतरा ही नहीं !
नीली—मैं मुरदों को नहीं देखना चाहती,....उन्हें नहीं देखना चाहती....
नीलू—ठीक है, उन्हें देखोगी भी नहीं । आँखें बंद कर लो....तुम....

नीली (नीलू से लिपटकर)—नीलू, नीलू भैया ! मुझसे नहीं देखा जायगा । नहीं, नहीं, मैं सह न सकूँगी....वे जमीन से निकलेंगे !!

नीलू—अरी, काँपती क्यों हो !....वे तो केवल एक क्षण के लिए बाहर निकलेंगे....

नीली—न, न, तुम भी काँपते हो !....वे जरूर भयंकर होंगे ।

नीलू—समय आ गया है ।

[नीलू मणि घुमाता है । एक मिनट तक भयभीत करनेवाली नीरवता और निस्तब्धता, इसके अनन्तर कब्रें खुलने लगती हैं]

नीली (नीलू से लिपटकर)—निकल रहे हैं ! आ गये हैं !....

[कब्रों में से कोहरे की तरह एक प्रकार की घास धीरे-धीरे निकलती है; वह धूसर है, लेकिन उजली, घनी, और लंबी होती जा रही है, जिसपर थोड़ी देर में उषा की प्रथम किरणें पड़ने लगती हैं । ओस चमकती है । फूल खिलते हैं । पवन पत्तों में सरसराता है । मधुमक्खियाँ मँडराती हैं । पक्षी जागकर अपने मनोहर संगीत से समस्त वातावरण मंगलमय बना देते हैं । आश्चर्यचकित और मोहित होकर नीलू और नीली एक दूसरे का हाथ पकड़ कर फूलों के बीच आगे बढ़ते हैं और कब्रों के निशान ढूँढ़ते हैं ।]

नीली (घास में ढूँढ़ती हुई)—आखिर मुरदे कहाँ हैं ?

नीलू (ढूँढ़ते हुए)—मुरदा एक भी नहीं है ।

[पटाक्षेप]

तृतीय दृश्य

परदे के सामने, जिस पर मनोहर मेघमालाएँ चित्रित हैं

[*नीलू, नीली, ज्योति, कुत्ते, बिल्ली, रोटी, अनल, चीनी, जल और दूध का प्रवेश*]

ज्योति—मुझे ऐसा लग रहा है कि अबकी नील-पंछी हमें मिलेगा ही । शुरू से यहाँ आना चाहिए था,....आज सुबह, उषा के सामने जब मेरी शक्ति बढ़ रही थी, यह विचार, सूर्य की किरण की तरह, मेरे मन में आया....। यहाँ उन दिव्य उद्यानों का फाटक है, जिसमें विधि की रखवाली में मनुष्यों के सब आनन्द और सुख निवास करते हैं ।....

नीलू—बहुत हैं क्या ? इनसे हमें भी कुछ मिल जायँगे ?

ज्योति—हाँ बहुत ही हैं । छोटे और बड़े, स्थूल और सूक्ष्म, मनोहर और दूसरे, जो कम प्रिय लगते हैं,....लेकिन जो अधिक नीच हैं, उन्हें कुछ समय पहले निकाला गया है ; और उन्हें दुखों के यहाँ शरण मिल गई; क्योंकि ध्यान देने योग्य

यह है कि बगल में दुखों की गुफा है। यह सुखों के उद्यान में लगी हुई है; दोनों के बीच में एक प्रकार की भाप या महीन पर्दा पड़ा हुआ है। न्याय की ऊँचाई या अनन्त काल की गहराई से जो पवन आता है, वह उस पर्दे को क्षण-क्षण पर उठाता है....अब हमें सतर्क रहना है। ये सुख तो प्रायः अच्छे हैं, फिर भी इनमें कुछ ऐसे हैं, जो महान् दुखों से भी खतरनाक और विश्वासघाती हैं।....

रोटी—एक बात कहूँ! अगर ये खतरनाक और विश्वासघाती हैं, तो यही ठीक मालूम होता है कि हम यहाँ दरवाजे पर खड़े रहें; ताकि यदि बच्चों को भागना पड़े, हम उन्हें अच्छी तरह से मदद दे सकें।

कुत्ता—नहीं! नहीं!! जहाँ मेरे स्वामी जी जायँगे, वहाँ मैं भी जाना चाहता हूँ!....जो डरते हैं वे दरवाजे पर खड़े रहें....। (**रोटी की ओर देखता हुआ**) हमें न डरपोकों की जरूरत है (**फिर बिल्ली की ओर देखता हुआ**) और न विश्वासघातियों की।

अनल—मैं तो भीतर जाऊँगा।....मजा होगा। कहते हैं सब समय नाच होता है....।

रोटी—अच्छा खाते हैं वहाँ?

जल (**आह भरते हुए**)—मुझे तो कभी छोटे-से-छोटा सुख भी नहीं मिला है।.... मैं जरूर देखना चाहता हूँ।

ज्योति—चुप रहो तुम! उन्हें कौन पूछता है।....जो तय कर लिया है मैंने, उसे सुन लो—कुत्ता, रोटी और चीनी बच्चों के साथ जायँगे। जल बाहर ही रहेगा; क्योंकि वह अधिक ठंढा है और अनल भी; क्योंकि वह अधिक उपद्रवी है। दूध से मेरा नम्र निवेदन है कि वह भी बाहर रहे; क्योंकि वह अधिक सुकुमार है। रही बिल्ली, वह अपने मन की करे।

कुत्ता—वह डरती ही है।

बिल्ली—मैं तो कुछ दुखों से नमस्कार कहने जाऊँगी। पुराने दोस्त हैं और सुखों की बगल में रहते हैं।

नीलू—ज्योति जी! आप नहीं आयँगी, क्या?

ज्योति—सुखों के यहाँ मैं जा नहीं सकती; उनमें से अधिकांश मुझे सह नहीं सकते.... लेकिन देखो वह बुरका; जब सुखी लोगों के पास जाना है, तो इसमें मैं अपने को छिपाती हूँ। (**लम्बा बुरका निकालकर उसे पहन लेती है**) ऐसा न हो कि मेरी आत्मा की एक किरण उन्हें डरावे। बहुत से सुख डरते ही रहते हैं, और सुखी हैं ही नहीं....खैर, अब तो जो सुख कम मनोहर और अधिक स्थूल हैं, वे भी मुझसे नहीं घबरायँगे।

[**अगले दृश्य के लिए परदा उठता है**]

चतुर्थ दृश्य
सुखों के उद्यान

[विभिन्न उद्यानों का दूर तक विस्तार। सामने की ओर संगमरमर के खंभों का मंडप। रत्न-जटित खम्भों के बीच में पीछे की ओर सुनहले परदे लटकाये गये हैं। मध्य में बड़ी मेज़ पर स्वर्ण-पात्रों में स्वादिष्ट फल, भोजन तथा मदिरा आदि विलास की सामग्री सजाई हुई है। मेज़ के चारों ओर पृथ्वी के स्थूल सुख खाने-पीने, चिल्लाने, गाने-बजाने में व्यस्त हैं। कुछ संतृप्त होकर सुप्त हैं, वे विशालकाय तथा असाधारण रूप से मोटे हैं। चमकीले कपड़े तथा बहुमूल्य रत्न पहने हैं। दासियाँ निरन्तर नई भरी हुई थालियाँ तथा मदिरा के पात्र ला-लाकर रख रही हैं। ग्राम्य संगीत तथा लाल प्रकाश!

नीलू, नीली, कुत्ता, रोटी और चीनी प्रारंभ में सकुचाकर ज्योति के पास दाईं ओर सामने खड़े रह जाते हैं। बिल्ली बिना कुछ कहे पीछे की ओर जाती है, और एक काला परदा उठाकर भीतर प्रवेश करती है।]

नीलू—ये मोटे महाशय कौन हैं? मौज उड़ा रहे हैं और अच्छा खाना खा रहे हैं!

ज्योति—ये पृथ्वी के सबसे स्थूल सुख हैं, जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है। असंभव नहीं है कि नील-पंछी यहाँ थोड़ी देर के लिए भटक गया हो। लेकिन यह बहुत संभव नहीं है। इसलिए मणि को मत घुमाओ। हम पहले इधर सरसरी दृष्टि दौड़ावें।

नीलू—क्या हम उनके पास जा सकते हैं?

ज्योति—जा सकते हो। वे बुरे नहीं हैं, ग्राम्य जरूर हैं और प्रायः अशिष्ट भी।

नीली—कितने अच्छे रसगुल्ले खा रहे हैं।

कुत्ता—कबाब भी खा रहे हैं! मेमने का मांस और हरिण का कलेजा भी!! (घोषणा करते हुए) इस दुनिया में हरिण के कलेजे से बढ़कर कुछ है ही नहीं। इसकी बराबरी कोई चीज कर ही नहीं सकती!....

रोटी—एक चीज छोड़कर! गेहूँ के मैदे की पतली महीन रोटियाँ!! देखिए, कितनी अच्छी रोटियाँ ये ला रही हैं!!!

चीनी—माफ कीजिए! एक बात कहूँ; मैं किसी की निन्दा नहीं करना चाहती,....लेकिन मेज़ पर चीनी की बनी हुई मिठाइयों को देख लीजिए ...मेरा नम्र निवेदन है कि न इस मेज पर और न दुनिया-भर में कहीं ऐसी कोई चीज है, जो इनकी बराबरी कर सके।

नीलू—ये सब बड़े खुश मालूम होते हैं!....चिल्लाकर पुकारते हैं, किलकारी मारकर हँसते हैं। गाते हैं!....ऐसा लग रहा है कि उन्होंने हम लोगों को देखा है।

[एक दर्जन स्थूल सुख खड़े हो जाते हैं और तोंद को सँभालते हुए कठिनाई से बच्चों की ओर बढ़ने लगते हैं]

ज्योति—कोई डरने की बात नहीं है, वे बड़े ही मिलनसार हैं। संभव है भोजन के लिए

निमंत्रण देंगे....स्वीकार मत करना। कुछ भी स्वीकार मत करना, नहीं तो अपना उद्देश्य भूल जाओगे....।

नीलू—क्या ? एक मिठाई भी नहीं ? बड़ी अच्छी ताजी मिठाई है, चीनी और मलाई की बनी हुई !....

ज्योति—यह खतरनाक है ; इससे तुम्हारा संकल्प नष्ट हो जायगा। कर्त्तव्य-पालन के लिए त्याग की जरूरत है। इसलिए शिष्टता से लेकिन साथ-साथ दृढ़ता से अस्वीकार करो। देखो वे आ गये !

स्थूलतम सुख (नीलू की ओर हाथ बढ़ाते हुए)—नीलू जी ! नमस्कार।

नीलू (साश्चर्य)—आप मुझे जानते हैं ? आप कौन हैं ?

स्थूलतम सुख—मैं सबसे स्थूल सुख हूँ ; धनी-होने-का सुख मैं हूँ। मैं अपने बंधुओं की ओर से आपको तथा आपके साथियों को अपनी कभी समाप्त न होनेवाली दावत में भाग लेने का निमंत्रण देने आया हूँ। हम इस दुनिया के असली और स्थूल सुखों में से सबसे बढ़ कर हैं। परिचय कराता हूँ। यह बड़ी तोंदवाला मेरा दामाद है; यह है जमींदार होने का सुख ! और यह, जिसका चेहरा इतना भरा हुआ है, संतुष्ट-मिथ्याभिमान का सुख है।

[**संतुष्ट-मिथ्याभिमान, अहंकार पूर्वक नमस्कार करता है**]

इन दोनों के पैर हलवे के बने हुए हैं। यह है प्यास-न-लगने-पर-भी-पीने-का सुख, और यह भूख-न-लगने-पर-भी-खाने-का सुख।

[**दोनों हिलते हुए नमस्कार करते हैं**]

यह जो बहरा है, कुछ-भी-नहीं-जानने का सुख है। और जो अंधा है, वह कुछ-भी-नहीं-समझने-का सुख है। देखो, यह कुछ-नहीं-करने-का सुख है और यह आवश्यकता-से-अधिक-सोने-का सुख; उनके हाथ रोटी के बने हुए हैं और उनकी आँखें आँवले के मुरब्बे की बनी हुई हैं। और वह स्थूल हँसी है, इसका चेहरा एक कान से दूसरे कान तक फटा हुआ है....

[**स्थूल हँसी शरीर ऐंठकर हँसते हुए नमस्कार करती है**]

नीलू (अलग खड़े एक स्थूल सुख की ओर निर्देश करते हुए)—और वह कौन है ? उसे निकट आने का साहस नहीं है, पीठ देकर खड़ा है।

स्थूल सुख—उसके बारे में मत पूछो; वे बड़े संकोची हैं; बच्चों को उसका परिचय देना ठीक नहीं है....(**नीलू का हाथ पकड़ते हुए**) आओ न ! दावत फिर शुरू कर दें....उषा के बाद यह बारहवीं बार है····तुम्हारे आ पहुँचने की देर है····सुनते हो न ? सब तुम्हें बुला रहे हैं····सबका परिचय नहीं करा सकता, बहुत अधिक हैं···· (**भुजा फैलाकर**) आओ ! मेज की सबसे अच्छी जगह पर तुम दोनों को बिठाऊँ।

नीलू—स्थूल सुख महोदय ! आपको अनेक धन्यवाद !....मुझे खेद है....हम आपका निमंत्रण अभी स्वीकार नहीं कर सकते....हम बड़ी जल्दी में हैं। हम नील-पंछी की खोज में हैं। शायद आपको मालूम हो कि वह कहाँ छिपा हुआ है ?

स्थूल सुख—नील-पंछी ?....एक मिनट....हाँ, हाँ, अब याद है, पहले इसका नाम

सुना था....जहाँ तक याद है, इसे नहीं खाया जा सकता ....। बहरहाल, हमने कभी उसे खाया नहीं....स्वादिष्ट नहीं होगा....खैर, इसकी चिंता मत करो; इससे कहीं अच्छी चीजें हमारे पास हैं....तुम हमारे जीवन में भाग लोगे, जो कुछ हम करते हैं देख सकोगे ?....

नीलू—आप लोग करते क्या हैं ?

स्थूल सुख—हम निरन्तर कुछ नहीं करने में लगे हुए हैं....एक मिनट भी आराम नहीं मिलता....पीना है, खाना है, सोना है। हम बहुत व्यस्त रहते हैं....

नीलू—मज़ा आता है ?

स्थूल सुख—क्यों नहीं ?....इस दुनिया में और क्या रखा है !....

ज्योति—आप सचमुच ऐसा समझते हैं ?

स्थूल सुख—(**उंगली से ज्योति की ओर इशारा करते हुए, धीमे स्वर में नीलू से पूछता है**) यह मूर्ख लड़की कौन है ?

[**इतने में सुखों के एक दल ने कुत्ते, चीनी और रोटी को फुसलाया है। नीलू तीनों को मेज़पर बैठे, खाते-पीते और मौज उड़ाते हुए देखता है**]

नीलू—देखिए, ज्योति जी ! वे तो खा रहे हैं।

ज्योति—उन्हें वापस बुला लो ! नहीं तो अनर्थ होगा !

नीलू—मोती ! ऐ मोती !! इधर आओ !!! इधर आओ !!!! तुरंत ! चीनी और रोटी ! तुम्हें किसने मुझे छोड़ देने की छुट्टी दी है ? बिना आज्ञा लिये तुम उधर क्या कर रहे हो ?....

रोटी (**मुँह में कौर डालते हुए**)—सँभल कर क्यों नहीं बोलते हो ?

नीलू—क्या ? रोटी की ऐसी गुस्ताखी ! तुम्हें क्या हो गया है ? मोती ! इस तरह हुक्म मानते हो ? इधर आओ ! घुटने टेको ! जल्दी !

कुत्ता—(**भोजन करते हुए, कम ऊँचे स्वर से**) एक बार खाना शुरू कर दिया बस ! मैं और किसीकी नहीं सुनता !

चीनी—(**मधुर स्वर से**) आप क्षमा करें। शिष्टाचार का ध्यान रखना है। हम इतने अच्छे मेजमानों को अचानक नहीं छोड़ सकते....

स्थूल सुख—देखते हो न ? ये तुम्हें नमूना दे रहे हैं.... आओ, अब तुम्हारी राह देख रहे हैं.... हम तुम्हें नहीं जाने देंगे.... प्रेम से तुम्हें मजबूर करेंगे.... इधर आओ, स्थूल सुखो ! मेरी सहायता करो....उन्हें जबरदस्ती मेज़ पर बिठा दो, उन्हें खाहमखाह सुखी बना दो।....

[**सब स्थूल सुख खुशी से उछलते हुए अनिच्छुक बच्चों को मेज़ की ओर खींचते हैं। स्थूल हँसी ज्योति के कंधों पर हाथ रखकर उसे ढक लेती है।**]

ज्योति—जल्दी, जल्दी, मणि को घुमाओ !

[**नीलू ज्योति की आज्ञानुसार मणि घुमाता है। तत्काल ही एक अत्यन्त स्वच्छ, उज्ज्वल और दिव्य प्रकाश समस्त वातावरण को परिवर्तित कर देता है। सामने का मंडप और उसकी सजावट लुप्त हो जाती है। उसके स्थान पर एक**

शान्तिमय उद्यान दिखाई देता है, जिसकी दूर तक फैली हुई लहलहाती हरियाली, सुगंधित पुष्पावली तथा उछलते हुए फुहारे स्वर्गीय आनन्द का संदेश दे रहे हैं। दावत की मेज़ पृथ्वी में धँस जाती है। स्थूल सुख के बहुमूल्य वस्त्र हवा का झोंका खाकर ऊपर उठते हैं और फटफटकर गिर जाते हैं। उनके आभूषण तथा हँसते हुए चेहरे भी पृथ्वी पर गिर जाते हैं। स्थूल सुख दिव्य प्रकाश की किरणों से विह्वल होकर सबके देखने में दुबले और कुरूप होते जा रहे हैं। वे अपनी वास्तविक दशा को देखकर विलाप करने लगते हैं। कुछ-नहीं-समझने का सुख अकेला ही शान्त रहता है। अन्य सब सुख अंधकार की खोज में एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ते जाते हैं! परन्तु इस दिव्य उद्यान में अन्धकार है ही नहीं, अतः अधिकांश सुख दुखों की गुफा का पर्दा उठाकर इसमें कूद पड़ते हैं। जब-जब परदा उठाया जाता है इसमें से निन्दा और शाप की वर्षा निकलती है। कुत्ता, रोटी, और चीनी मुँह छिपाकर बच्चों के पास आते हैं और उनके पीछे छिप जाते हैं।]

नीलू (स्थूल सुखों को भागते देखकर)—ये कितने कुरूप हैं! कहाँ जाते हैं?

ज्योति—सच पूछो, सब पागल हो गये हैं....ये दुखों के यहाँ शरण लेने जा रहे हैं। जहाँ इन्हें शायद हमेशा के लिए बंद किया जायगा।

नीलू—(चारों ओर साश्चर्य दृष्टि दौड़ाते हुए) वाह! वाह!! यह उद्यान कितना सुन्दर है!....हम कहाँ हैं?

ज्योति—स्थान नहीं बदला है! आँखों में नई ज्योति आ गई है!....हम सब वस्तुओं का वास्तविक रूप देख रहे हैं और अभी उन सुखों को देख लेंगे जो मणि के प्रकाश में ठहर सकते हैं।

नीलू—सुंदर! सुंदर!! मानो वसंत आ गया हो!.... देखिए! मालूम होता है, वे हमसे मिलने आ रहे हैं!....

[वस्तुतः उद्यान में सर्वत्र फरिश्ते जैसे प्राणी दिखाई देने लगे। वे मानो दीर्घ नींद से जाग रहे हों और वृक्षों के बीच इधर-उधर घूमते हैं। वे उज्ज्वल, महीन और रंग-बिरंगे परिधान पहने हुए हैं।]

ज्योति—देखो, कई मनोहर और कमनीय सुख इधर आ रहे हैं। उनसे बातचीत करेंगे।

नीलू—आप उन्हें जानती हैं?

ज्योति—हाँ सबको जानती हूँ; उनके यहाँ अक्सर जाती हूँ, लेकिन उन्हें मालूम नहीं है कि मैं कौन हूँ।

नीलू—बहुत अधिक हैं। चारों ओर से निकल रहे हैं।

ज्योति—पहले और बहुत अधिक थे। स्थूल सुखों से उन्हें बड़ी हानि हुई।

नीलू—कोई हर्ज नहीं, बहुत ही रह गये हैं।

ज्योति—और बहुत दिखाई देने लगेंगे, मणि का प्रभाव उद्यानों में फैलता जा रहा है.... पृथ्वी पर बहुत से सुख पाये जाते हैं, जिनकी अधिकांश लोग कल्पना भी नहीं कर पाते....

नीलू—देखिए, ये नन्हें इधर आ रहे हैं। हम दौड़कर उनसे मिल जायँ....

ज्योति—इसकी जरूरत नहीं है। जिनमें हमारी रुचि है वे इधर आ ही जायेंगे....। सब से भेंट करने की फ़ुरसत कहाँ!

[नन्हें सुखों का एक दल कूदते-खेलते, किलकारी मारते, दौड़कर आता है और बच्चों को घेरकर नाचने लगता है।]

नीलू—ये कितने मनोहर हैं! कहाँ से आते हैं?

ज्योति—ये बच्चों के सुख हैं!

नीलू—उनसे बातचीत करूँ!

ज्योति—बेकार है। ये गाते, नाचते और हँसते हैं, लेकिन अबतक बोलते नहीं....

नीलू (उल्लसित हो)—नमस्कार! नमस्कार!! देखो, उधर, यह मोटा जो हँस रहा है!.... देखिए उनके गुलाबी कपोल, उनके सुंदर कपड़े!....सब-के-सब अमीर होंगे।

ज्योति—यह तुम्हारी भारी भूल है! दूसरे सुखों के समान, इनमें भी गरीब अधिक हैं, अमीर कम!!

नीलू—गरीब कहाँ हैं?

ज्योति—उन्हें अलग नहीं किया जा सकता, एक बच्चे का सुख हमेशा पृथ्वी तथा स्वर्ग के सबसे सुन्दर कपड़े पहने हुए है।

नीलू (अधीर होकर)—इनके साथ नाचना चाहता हूँ।

ज्योति—यह होगा नहीं। हमें बिलकुल फ़ुरसत नहीं है....नील-पंछी उनके पास नहीं है; इतना देख लिया, मैंने....खैर उन्हें भी फ़ुरसत नहीं, देखो, चले गये....उनके पास भी समय कम है, क्योंकि बचपन जल्दी बीत जाता है....

[पहले से कुछ बड़ा सुखों का एक दूसरा दल उद्यान में दौड़ते हुए प्रवेश करता है। वे गाते हैं—'देखो देखो! वे हमारी ओर देख रहे हैं। हमारी ओर देख रहे हैं,।' और आकर बच्चों के चारों ओर कुछ देर तक नाचते रहते हैं। इसके अनन्तर उनका अगुआ नीलू के पास आकर नमस्कार करता है।]

सुख—नमस्कार नीलूजी!

नीलू—देखिए, यह भी मुझे पहचानता है। (ज्योति से) मुझे बहुत से लोग पहचानने लगे।....तुम कौन हो?

सुख—मुझे नहीं पहचानते हो?....अरे, हमलोगों में से किसीको भी नहीं पहचानते?....

नीलू (ससंकोच)—नहीं पहचानता हूँ····मैंने तुमलोगों को कहीं देखा है, ऐसा तो मुझे याद नहीं है।

सुख—सुन लिया तुमलोगों ने? महाशय ने हमें कभी देखा ही नहीं!! (सब सुख किलकारी मारकर हँसते हैं) सुनो, नीलूजी, हमलोगों को छोड़कर तुम और किसी सुख को जानते ही नहीं। हम बराबर तुम्हारे साथ हैं....हम तुम्हारे ही साथ खाते और पीते हैं, जागते और सोते हैं; तुम्हारे ही साथ जीवन बिताते हैं।....

नीलू—हाँ, हाँ, ठीक है, अब याद हो रहा है....लेकिन तुम्हारा नाम जानना चाहूँगा····

सुख—देखता हूँ, तुम कुछ भी नहीं समझते। मैं तुम्हारे घर के सुखों का प्रधान हूँ। ये सब-के-सब तुम्हारे घर के रहनेवाले हैं....

नीलू—क्या हमारे घर में भी सुख हैं ?

[सब सुख किलकारी मारकर हँसते हैं]

सुख—सुना तुमलोगों ने ! पूछता है, 'क्या हमारे घर में भी सुख हैं ?' भैया, तुम्हारा घर सुखों से कूट–कूटकर भरा हुआ है।.... हम हँसते हैं, गाते हैं, आनन्द मनाते हैं। सारा घर आनन्द से सराबोर कर देते हैं। और तुम कुछ देखते ही नहीं, कुछ सुनते ही नहीं.... आशा है, आगे चलकर तुम्हें कुछ अक्ल आ जायगी,.... अब मैं, जो मुख्य हैं, उनका परिचय कराता हूँ.... घर पहुँचकर तुम उन्हें और आसानी से पहचान सकोगे.... कभी-कभी मुस्कराकर हमें प्रोत्साहित करना या मधुर शब्द कहकर हमें धन्यवाद देना; क्योंकि सच पूछो, हम तुम्हारा जीवन सुखमय बनाने की भरसक कोशिश करते रहते हैं.... अच्छा ! मैं हूँ स्वस्थ–होने–का सुख.... मैं सबसे मनोहर नहीं हूँ; लेकिन हूँ सब–से-आवश्यक। पहचान लोगे, मुझे ? यह है स्वच्छ हवा–का सुख, वह करीब–करीब पारदर्शक है.... यह है माता–पिता–को–प्यार–करने–का सुख, धूसर वस्त्र पहना है और प्रायः उदास रहा करता है; कारण यह है कि लोग उसकी कदर नहीं करते.... यह नीले-आकाश-का सुख है; इसके कपड़े नीले ही हैं.... यह है वन-का सुख, इसके कपड़े हरे ही हैं, खिड़की के पास खड़े होकर उसे बराबर देख सकते हो.... यह है धूप-की-घड़ियों-का सुख, इसके कपड़े उजले हैं.... यह है वसन्त–का सुख, इसके कपड़े मरकत के रंग के हैं।....

नीलू—क्या आप लोग दिन-पर-दिन इतने सुंदर होते हैं।

सुख—हाँ, प्रतिदिन, हर घर में, आँखें खुलते ही उत्सव का दिन है.... तब संध्या होने पर, देखो सूर्यास्त-देखने-का सुख, वह दुनिया-भर के सब राजाओं से भी सुंदर हैं; उसके बाद आता है जगमगाते-तारों-को-देखने-का सुख, इसके दिव्य वस्त्रों को देख लो !.... तब, मौसिम अच्छा न होने पर, देखो, यह पानी–बरसने–का सुख हैं; वह सिर से पैर तक मोतियों से ढका हुआ है। और यह है, शीतकाल-में-अंगीठी-के-सामने-बैठकर-तापने-का सुख, यह बैगनी लबादा पहने है। और इनमें से सब–से–अच्छे के विषय में क्या कहना है। वह तो महान् विशुद्ध आनन्दों का भाई है, जिन्हें तुम थोड़ी देर में देखने वाले हो। वह हम में से सबसे स्वच्छ है। इसका नाम है भोली-भाली-भावनाओं-का सुख।.... इसके अलावा और बहुत हैं, कहाँ तक उन्हें गिनाया जाय !.... मुझे अभी महान् आनन्दों को तुम्हारे आने की खबर देनी है.... वे ऊपर हैं, पीछे की ओर, स्वर्ग के द्वार के पास उन्हें तुम्हारे आने का पता नहीं है.... नंगे-पाँव-ओस-पर-टहलने-के सुख को उसके पास भेज दूँगा, वह हम में से तेज दौड़ता है....

(नंगे-पाँव-ओस-पर-टहलने-के सुख से, जो कूदते-फाँदते हुए आगे बढ़ता है) तुम जाओ !

[इसके बाद, दूसरों को ढकेलते हुए और अस्पष्ट रूप से चिल्लाते हुए, एक काले वस्त्र पहना बौना नीलू के पास आता है और उसे घूसा तथा लात मारते हुए

उसके चारों ओर नाचता रहता है।]

नीलू—(आश्चर्यचकित तथा क्रुद्ध) यह शैतान कौन है ?

सुख—यह तो दूसरों-को-परेशान-करने-का-सुख है जो दुखों की गुफा से भाग निकला है। कहाँ उसे बंद कर दिया जाय ? बार-बार भाग जाता है; दुख भी उसे अपने पास और रखना नहीं चाहते।

[परेशान-करने-का सुख नीलू से हाथा-पाई करता जाता है, तब अचानक किलकारी मारते हुए, अकारण भाग जाता है]

नीलू—उसे क्या हो गया है ? उसका दिमाग ठिकाने नहीं है क्या ?

ज्योति—क्या जाने। सुनने में आया कि जब नटखटपन का भूत तुमपर सवार हो जाता है, तो तुम बिलकुल उसीके समान हो जाते हो। खैर हमें नील-पंछी के बारे में पूछना चाहिए। तुम्हारे घर के सुखों का प्रधान शायद जानता हो कि वह कहाँ है....

नीलू—वह कहाँ है ?....

सुख—वाह, वाह, वह यह भी नहीं जानता कि नील-पंछी कहाँ है !!

[घर के सब सुख हँसते हैं]

नीलू—(खीजकर) सच कहता हूँ, मैं नहीं जानता....यह हँसने की बात नहीं है....

[सब दुबारा हँसते हैं]

सुख—अरे, गुस्सा मत करो....हम भी ज़रा सा सँभल जायँ....क्या किया जाय, वह जानता ही नहीं। इसमें आश्चर्य की क्या बात है; अधिकांश मनुष्य नहीं जानते हैं। देखो, नंगे-पाँव-ओस-पर-टहलने-के सुख ने महान् आनन्दों को समाचार दिया है। वे हमारी ओर बढ़ रहे हैं....

[उजले वस्त्र पहने, फरिश्ते जैसे लम्बे कद की युवतियाँ धीरे-धीरे आगे बढ़ती हैं]

नीलू—दिव्य सौंदर्य है उनका ! वे हँसती क्यों नहीं ?....क्या वे सुखी नहीं हैं ?

ज्योति—अरे, हँसी में क्या रखा है। हँसी में गहरा आनन्द कहाँ ?

नीलू—ये कौन हैं ?

सुख—ये तो महान् आनन्द हैं....

नीलू—उनके नाम जानते हैं आप ?

सुख—क्यों नहीं, हम तो अक्सर उनके साथ खेलते हैं। देखिए, सबके सामने, न्यायी-होने-का-महान्-आनन्द; जब-जब किसी अन्याय का प्रायश्चित किया जाता है, तब-तब वह मुस्करा देती है,—मेरी उमर अधिक नहीं है, इसलिए मैंने उसे मुस्कराते कभी नहीं देखा है। उसके पीछे, दयालु-होने-का आनन्द, वह सबसे सुखी और साथ-साथ सब-से-उदास है; हम उसे बड़ी मुश्किल से अपने साथ रख सकते हैं, वह दुखों के पास जाकर उन्हें दिलासा देना चाहता है। दाईं ओर समाप्त-किये-हुए-कार्य का आनन्द है और इसकी बगल में सोच-विचार-करने का आनन्द। इसके बाद, समझने-का आनन्द, जो अपने भाई, कुछ-भी-नहीं-समझने-के सुख को खोजता रहता है।

नीलू—उसके भाई को देखा है, मैंने !....वह दूसरे स्थूल सुखों के साथ दुखों के यहाँ

गया है।

सुख—यही मेरा अनुमान था! 'को न कुसंगति पाई नसाई'....उससे कुछ न कहो, नहीं तो वह उसकी खोज में चला जायगा और हमें एक बहुत सुंदर आनन्द से हाथ धोना पड़ेगा....देखो, यह सबसे महान् आनन्दों में से एक है—अप्रत्यक्ष-सौंदर्य-को-देख-सकने-का आनन्द। वह यहाँ के प्रकाश को नित्य प्रति कई किरणों से बढ़ाता जाता है।

नीलू—और वहाँ दूर के सुनहले बादलों पर, जिसे मैं पंजों के बल पर खड़ा होने पर भी मुश्किल से देख सकता हूँ वह कौन है?

सुख—यह प्रेम-करने-का-महान-आनन्द है। तुम अभी छोटे हो, लाखों कोशिश करने पर भी उसे पूरी तरह नहीं देख सकते।

नीलू—और बिलकुल पीछे की ओर, घूंघट काढ़े दूर खड़ी ये युवतियाँ कौन हैं?

सुख—ये वही आनन्द हैं जिन्हें मनुष्य अबतक जानते ही नहीं।

नीलू—देखिए, ये सब क्यों हट जाती हैं?

सुख—एक नये आनन्द का स्वागत करने के लिए, जो शायद हममें से सबसे निर्मल है।

नीलू—यह कौन है?

सुख—अबतक उसे पहचाना नहीं? आँखें खोलकर देख लो! उसने तुम्हें देख लिया.... भुजाएँ फैलाकर आगे बढ़ रही है....यह तुम्हारी माँ का आनन्द है, मातृ-स्नेह का अद्वितीय आनन्द।

[मातृ-स्नेह के आनन्द का स्वागत करने के पश्चात् सब आनन्द मौन धारण कर पीछे हट जाते हैं]

मातृ स्नेह—नीलू और नीली! तुमलोग यहाँ कहाँ? तुम्हें यहाँ देखने की आशा नहीं थी! मैं घर पर अकेली ही थी और देखो तुम दोनों यहाँ स्वर्ग में आये हो, जहाँ सब माताओं की आत्मा आनंद के प्रकाश में विराजमान हैं।....सबसे पहले तुम दोनों को गले लगाती हूँ....मेरी गोद में आ जाओ, दुनिया में मुझे इसके बराबर और कोई सुख नहीं है....नीलू! तुम मुस्कराते नहीं?....नीली! तुम भी नहीं?.... क्या तुमलोग अपनी माँ का स्नेह भी नहीं पहचानते?....देखो तो क्या यह मेरी ही आँखें नहीं हैं, मेरे ओठ, मेरी गोद?

नीलू—पहचानता तो हूँ लेकिन मुझे मालूम नहीं था....तुम तो मेरी माँ के समान दिखती हो, लेकिन उससे कहीं अधिक सुंदर भी हो।

मातृ-स्नेह—बात यह है कि मैं यहाँ बूढ़ी नहीं हो रही हूँ....प्रति दिन मुझे नई शक्ति, यौवन और सुख मिल रहा है....तुम्हारी हर मुस्कराहट से मेरी उम्र से एक साल कट जाता है....घर पर यह नहीं देख सकते, लेकिन यहाँ तो असली बात छिपती ही नहीं....

नीलू—(आश्चर्यचकित टकटकी लगाकर उसे देखता है और फिर छाती लगाता है) और यह साड़ी रेशमी है? यह चाँदी है? मोती हैं?

मातृ-स्नेह—नहीं-नहीं, ये तो चुम्बन हैं....प्रेम की चितवनें हैं, लाड़-प्यार है। हर चुम्बन

से इसमें चाँदनी की एक किरण जम जाती है।

नीलू—स्वप्न में भी सोचा था मैंने कि तुम्हारे पास इतनी धन-दौलत है। उसे कहाँ छिपाए रखती थी? यह सब उस आलमारी में रखा हुआ होगा जिसकी चाभी पिताजी के पास है।

मातृ-स्नेह—यह सब तो बराबर मेरे पास है, लेकिन तुम देखते नहीं....भला आँखें बंद करने पर कौन क्या देख सकता है?....अपनी संतान को प्यार करनेवाली माताएँ सब धनी हैं; कोई भी गरीब नहीं, कोई भी कुरूप नहीं, कोई भी बूढ़ी नहीं....उनका स्नेह सदा-सर्वदा सबसे मनोहर आनन्द है....और जब वे दुखी होती हैं तो एक ही चुम्बन से जिसे वे लेती या देती हैं, इनके आँसू आँखों में जगमगाते तारे बन जाते हैं।....

नीलू—(आश्चर्य से उसे देखते हुए) हाँ, माताजी! तुम्हारी आँखें सचमुच तारों से भरी हुई हैं....और ये तुम्हारी ही आँखें हैं फिर भी ये तुम्हारी आँखों से कहीं अधिक सुंदर हैं और यह तुम्हारा ही हाथ है, छोटी अंगूठी वही है....इसमें घाव का निशान है, जो दीपक जलाते समय लग गया था....फिर भी यह तुम्हारे हाथ से कहीं अधिक गोरा और सुकुमार है....पारदर्शक मालूम होता है....क्या यह हाथ घरवाले हाथ की तरह काम नहीं करता?

मातृ-स्नेह—क्यों नहीं, बिलकुल एक ही है। तुमने कभी नहीं देखा था कि तुम्हारा लाड़-प्यार करते समय यह हाथ गोरा और प्रकाशमान हो उठता है।

नीलू—प्यारी माँ! आश्चर्य है! तुम्हारी ही आवाज तो है, लेकिन घर के मुकाबले में तुम कहीं अच्छी तरह से बोल रही हो।

मातृ-स्नेह—घर पर बहुत व्यस्त रहना पड़ता है न!....लेकिन हम जो कुछ नहीं कहते हैं उसे भी सुनना चाहिए। अच्छा तुमने मुझे अब देख लिया है, अब घर पहुँच कर फटे-पुराने कपड़े पहनी हुई भी मुझे कल देखकर पहचान लोगे न?

नीलू—मैं घर जाना नहीं चाहता....तुम यहाँ हो, मैं भी तुम्हारे साथ यहाँ रहना चाहता हूँ।

मातृ-स्नेह—एक ही बात है! मैं वहाँ हूँ, हम सब वहाँ हैं, तुम यहाँ आये हो, समझने के लिए और यह सीखने के लिए कि घर पहुँचकर मुझे किस रूप में देखना चाहिए, समझे नीलू? तुम समझते हो, मैं स्वर्ग-लोक में आ गया हूँ; सुनो, जहाँ भी हम एक दूसरे को छाती लगाते हैं वहीं स्वर्ग-लोक है....तुम्हारी दो माताएँ हैं ही नहीं....हाँ, बच्चे की एक ही माता होती है जो कभी बदलती नहीं और जो इस बच्चे के लिए सदा-सर्वदा सबसे सुंदर है; उसे जानना और पहचानना चाहिए। अच्छा एक बात बताओ, तुम यहाँ कैसे आ सके। मनुष्य यहाँ का मार्ग सृष्टि के प्रारंभ से ही ढूढ़ते चले आ रहे हैं?....

नीलू—(ज्योति की ओर संकेत करते हुए, जो कुछ हटकर खड़ी है) वह मुझे रास्ता बतलाती है।

मातृ-स्नेह—यह कौन है?

नीलू—ज्योति है।

मातृ-स्नेह—उसे मैंने भी कभी नहीं देखा था। सुनने में आया था कि वह बड़ी अच्छी है और तुम्हें प्यार करती है। वह क्यों छिप जाती है ? क्या वह अपना मुँह कभी भी नहीं दिखलाती ?

नीलू—दिखलाती है, लेकिन यहाँ पर उसे डर है कि अधिक प्रकाश पाकर सुख घबरा न जायँ।

मातृ-स्नेह—क्या उसे मालूम नहीं कि हम बहुत समय से उसकी राह देख रही हैं।.... —(अन्य महान् आनन्दों को बुलाकर) अरे आओ ! इधर आओ !! दौड़कर आओ !!! ज्योति हमसे मिलने आई है !....

[महान् आनन्दों में हलचल 'ज्योति आ गई है ! ज्योति ! ज्योति !!' आदि की पुकार]

समझने-का आनंद—(दूसरों को इधर-उधर ढकेलता हुआ ज्योति को गले लगाता है) आपही ज्योति हैं, और हमें इसका पता नहीं था !....हम कितने वर्षों से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं तो समझने का आनंद हूँ, जिसने आपका पता लगाने में कुछ भी उठा नहीं रखा....हम तो बहुत सुखी हैं। लेकिन अपनेको छोड़कर कुछ नहीं समझते।

न्यायी-होने-का आनंद—(ज्योति का आलिंगन करता हुआ) आप मुझे पहचानती हैं ? मैं तो न्यायी-होने-का आनंद हूँ जो आपको प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करता रहा.... हम तो बहुत सुखी हैं, लेकिन अपनी छाया के घेरे के बाहर कुछ भी नहीं देख सकते।

अप्रत्यक्ष-सौंदर्य-देखने-का आनन्द—(उसे छाती लगाता हुआ) आप मुझे पहचानती हैं ? मैं सौंदर्य-का आनंद हूँ, जिसने आपको इतना प्यार किया है। हम तो बहुत सुखी हैं लेकिन अपने स्वप्नों के क्षेत्र के बाहर कुछ भी नहीं देख सकते....

समझने-का-आनंद—आइए, दीदीजी, हम कबसे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं.... हम सशक्त हैं, हम स्वच्छ हैं, पर्दा हटा दीजिए, अंतिम सचाइयाँ और अंतिम सुख भी हमें दिखला दीजिए.... देखिए, घुटने टेककर हम आपका स्वागत करते हैं.... आप हमारी रानी हैं और हमारा पुरस्कार।

ज्योति—(बुरका अच्छी तरह सँभालती हुई) प्रिय भाइयो तथा बहनो ! मैं अपने प्रभु की आज्ञा का पालन करती हूँ !.... समय अबतक नहीं आया, समय पूरा होने पर मैं आशंका और छाया हटाकर तुमलोगों के पास लौटूँगी ही.... नमस्कार ! उठो, हम एक दूसरे को गले लगावें, उस शुभघड़ी की प्रतीक्षा में जब....

मातृ-स्नेह—(ज्योति का आलिंगन करता हुआ) आपने मेरे बच्चों का कितना उपकार किया है !

ज्योति—जो मुझसे प्रेम करते हैं; उनका मैं सदा उपकार करूँगी....

समझने-का आनंद—(ज्योति की ओर बढ़ते हुए) मेरे ललाट पर आपका अंतिम

चुम्बन अंकित हो। [देर तक एक दूसरे से मिलते हैं। अलग होने पर उनकी आँखों से आँसू टपकते हैं]

नीलू—(साश्चर्य) आप रोती क्यों हैं ? (दूसरे आनन्दों को देखते) अरे, आप सब रोने लगे···· आखिर आप सब रोते क्यों हैं ?

ज्योति—तुम चुप रहो, बेटा ....

[पटाक्षेप]

पंचम अंक

भविष्य का राज्य

[एक विशाल नील-प्रासाद का दृश्य, जिसमें शिशु अपने जन्म की प्रतीक्षा करते हैं। इसमें प्रायः सभी वस्तुएँ गहरे नीले रंग की हैं—नीलम की खम्भे, फिरोज की छत, प्रकाश आदि। खम्भों के ऊपरी और निचले भाग तथा नीचे के कुछ आसन श्वेत संगमर्मर के हैं। दाईं ओर खम्भों के बीच ऊँचे नीले द्वार हैं। उन द्वारों के उस पार वर्त्तमान जीवन तथा उषा का राजमार्ग है। दृश्य के अंत में काल ये द्वार खोल देगा। भवन में सर्वत्र नीले वस्त्र पहने शिशु विचर रहे हैं—कुछ खेलते हैं, कुछ टहलते हैं, कुछ बातचीत करते हैं या विचारमग्न हैं। बहुत से शिशु सो रहे हैं। अन्य शिशु आगामी आविष्कारों पर काम कर रहे हैं—उनके हथियार, उपकरण, यंत्र, उनके उगाये हुए फूल और फल, सब-के-सब उसी नीले रंग के हैं। हलके नीले रंग के कपड़े पहने शिशुओं के बीच लम्बे कद के कुछ प्राणी टहलते हैं। उनका दिव्य सौंदर्य फरिश्तों का स्मरण दिलाता है। वे मौन हैं।

बाईं ओर से खम्भों के बीच में से नीलू, नीली और ज्योति चुपचाप प्रवेश करते हैं। उन्हें देखकर नीले शिशु उनकी ओर बढ़ते हैं और जिज्ञासा-भरी दृष्टि से उन्हें निहार रहे हैं]

नीलू—चीनी, बिल्ली और रोटी कहाँ हैं ?

ज्योति—वे यहाँ नहीं आ सकते। नहीं तो वे भविष्य जान लेते और हुक्म नहीं मानते.... ....

नीलू—और कुत्ता ?

ज्योति—यह उचित नहीं कि उसको पता लगे कि भविष्य में उसपर क्या बीतेगी.... मैंने सब को मंदिर के नीचे गुफा में बंद कर दिया है ....

नीलू—हम कहाँ हैं ?

ज्योति—भविष्य के राज्य में, उन बच्चों के यहाँ जिनका जन्म अभी तक नहीं हुआ है। मनुष्य के लिए यह प्रदेश अदृश्य है। मणि के सहारे हम उसे भली-भाँति देख सकते हैं ? मुझे विश्वास है कि नील-पंछी हमें यहाँ मिल जायगा....

नीलू—पक्षी नीला ही होगा, यहाँ तो सब कुछ नीला है। (अपने चारों ओर देखते हुए) वाह,वाह ! यह सब कितना सुन्दर है !....

ज्योति—बच्चों को देख लो, दौड़ते आ रहे हैं....

नीलू—वे नाराज तो नहीं हैं !

ज्योति—बिलकुल नहीं.... मुस्कराते हैं। लेकिन उन्हें आश्चर्य हो रहा है....

नील-शिशु—(बड़ी संख्या में आगे बढ़ते हुए) जीवित बच्चे ! देखो तो !! जीवित बच्चे आ गये !!!

नीलू—ये हमें जीवित बच्चे क्यों कहते हैं ?....

ज्योति—इसीलिए कि वे स्वयं अबतक जीवित नहीं हैं....

नीलू—आखिर, वे करते क्या हैं ?

ज्योति—वे अपने जन्म की घड़ी की राह देख रहे हैं....

नीलू—जन्म की घड़ी ?

ज्योति—हाँ, जितने बच्चे हमारी पृथ्वी पर पैदा होते हैं, वे सब-के-सब यहाँ से आते हैं। हर एक अपनी घड़ी की राह देख रहा है....जब माँ-बाप बच्चों को चाहते हैं, तब दाईं ओर के द्वार खोले जाते हैं और बच्चे उतरते हैं....

नीलू—करोड़ों हैं !

ज्योति—और बहुत हैं....सबको नहीं देख सकते हो....सोचो तो, समय के अंत तक कितने बच्चे पैदा होंगे....कोई भी उन्हें गिन नहीं सकता....

नीलू—और लंबी नीली युवतियाँ, ये कौन हैं ?

ज्योति—क्या जाने ?....संरक्षिकाएँ होंगी....कहा जाता है कि मनुष्यों के बाद वे पृथ्वी पर आ जायँगी....लेकिन उनसे पूछताछ करना मना है....

नीलू—क्यों ?....

ज्योति—वह पृथ्वी का रहस्य है।

नीलू—लेकिन बच्चों से बातचीत करने की छुट्टी है ?....

ज्योति—जरूर है ! उनसे मिल लेना चाहिए....देखो, यह दूसरों से अधिक कुतूहली है....उसके पास जाकर बातचीत करो....

नीलू—उससे क्या कहना चाहिए ?....

ज्योति—उसे साथी समझकर बातचीत करो....

नीलू—उससे हाथ मिला सकता हूँ ?

ज्योति—क्यों नहीं ! वह तो तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा....अरे, संकोच मत करो....अच्छा, मैं तुम दोनों को अकेला छोड़ देती हूँ। मुझे उस लम्बी नीली युवती से कुछ काम है....

नीलू—(**नीलू शिशु के पास जाकर उससे हाथ मिलाता है**) नमस्कार ! (**शिशु के नीले वस्त्र पर हाथ फेरकर**) यह क्या है ?

शिशु (**नीलू की टोपी छूकर**)—और यह ?

नीलू—यह ? यह मेरी टोपी है....तुम्हारे पास टोपी नहीं हैं ?

शिशु—नहीं है ; यह किस काम की है ?

नीलू—नमस्कार करने के लिए है ; और जाड़े से बचने के लिए है....

शिशु—जाड़ा क्या है ?....

नीलू—जब काँपने लगते हो थर ! थर !! और फूँक-फूँक कर हाथ गरम करते हो, और बाँहों को इस तरह हिलाने लगते हो (**वह अपनी बाँहों को हिलाकर कंधे पर**

मारने लगता है)

शिशु—क्या पृथ्वी पर बहुत सरदी पड़ती है ?

नीलू—कभी-कभी, जाड़े के दिनों में और जब आग नहीं रहती....

शिशु—आग क्यों नहीं रहती ?

नीलू—इसमें खर्च लगता है ; लकड़ी खरीदने के लिए पैसे की जरूरत है ।....

शिशु—पैसा क्या है ?

नीलू—इससे चीजें खरीदी जाती हैं....

शिशु—हुँ !

नीलू—कुछ लोगों के पास है, और कुछ लोगों के पास नहीं है....

शिशु—क्यों ?

नीलू—क्योंकि वे धनी नहीं हैं....तुम धनी हो ?....तुम्हारी उम्र क्या है ?

शिशु—मैं जल्दी पैदा होनेवाला हूँ—बारह वर्ष के बाद मेरा जन्म होगा....पैदा होना अच्छा लगता है कि नहीं ?

नीलू—हाँ, हाँ, बहुत अच्छा लगता है ।

शिशु—कैसे जन्म लिया तुमने ?

नीलू—याद नहीं है....बहुत समय हुआ ।

शिशु—कहते हैं, पृथ्वी और प्राणी बहुत प्रिय हैं....

नीलू—हाँ, बुरे नहीं हैं....पक्षी हैं, रसगुल्ले हैं, खिलौने हैं....कुछ लोगों के पास यह सब है । जिनके पास नहीं है, वे दूसरों की चीजें देख सकते हैं....

शिशु—कहते हैं, माताएँ दरवाजे पर हमारी राह देख रही हैं....वे अच्छी हैं न ?

नीलू—हाँ, अच्छी हैं....दुनिया में जो कुछ है, इसमें से वे सबसे अच्छी हैं; दादियाँ भी अच्छी हैं, लेकिन वे जल्दी मर जाती हैं....

शिशु—मर जाती हैं ?....मर जाना क्या है ?

नीलू—वे किसी शाम को चली जाती हैं और वापस आतीं ही नहीं....

शिशु—क्यों ?

नीलू—कौन जाने ?... उदास होंगी शायद....

शिशु—आपकी दादी चली गई ?

नीलू—मेरी दादी ?

शिशु—माता या दादी, मुझे क्या मालूम ?

नीलू—एक ही बात नहीं है जी ! दादियाँ पहले चली जाती हैं; बहुत बुरा लगता है.... मेरी दादी बड़ी अच्छी थी....

शिशु—तुम्हारी आँखों में क्या है ? ये मोती हैं क्या ?

नीलू—अरे नहीं, वे मोती नहीं हैं !

शिशु—तब क्या है ?

नीलू—कुछ नहीं; यह नीला-नीला रंग मुझे चकाचौंध कर देता है....

शिशु—इसका नाम क्या है ?

नीलू—किसका ?
शिशु—यह जो गिर गया है....
नीलू—कुछ नहीं, थोड़ा-सा पानी है।
शिशु—यह आँखों में से निकलता है क्या ?
नीलू—हाँ, कभी-कभी, जब हमलोग रोते हैं....
शिशु—रोना क्या है ?
नीलू—अरे, मैं रोया नहीं; यह नीले रंग का कसूर है....लेकिन अगर मैं रोता, तो वही आँख से निकलता....
शिशु—क्या लोग अक्सर रोते हैं ?
नीलू—लड़के तो नहीं, लेकिन हाँ, लड़कियाँ अक्सर रोती हैं। क्या यहाँ पर तुमलोग रोते नहीं ?
शिशु—नहीं, मुझे रोना आता ही नहीं....
नीलू—खैर, सीख लोगे....अरे, यह कौन-सा खिलौना है, ये बड़े नीले पंख क्या हैं ?
शिशु—यह ?....उस आविष्कार के लिए है जिसे मैं पृथ्वी पर करूँगा।....
नीलू—कौन-सा आविष्कार ? तुमने कोई आविष्कार किया है, क्या ?
शिशु—किया है, तुम्हें मालूम नहीं है ? पृथ्वी पर मुझे उस चीज का आविष्कार करना है, जो सुखी बना देनेवाली है।
नीलू—खाने की चीज है ?....आवाज़ भी करती है ?
शिशु—नहीं भाई, वह बिलकुल आवाज़ नहीं करती....
नीलू—यह खेद की बात है....
शिशु—मैं रोज-रोज इसपर काम करता हूँ....तैयार....हो रही....है....क्या तुम देखना चाहते हो ?
नीलू—हाँ,....कहाँ है ?
शिशु—उधर है, यहाँ से दिखाई देती है, इन दो खंभों के बीच....
एक दूसरा शिशु—(**नीलू के पास आकर, उसे हाथ से खींचते हुए**) मेरा आविष्कार देखोगे, न ?
नीलू—हाँ, हाँ, क्या है ?
दूसरा शिशु—आयु को बढ़ाने की तैंतीस दवाएँ....वहाँ, उन नीली शीशियों में....
तीसरा शिशु—(**भीड़ में से निकलकर**) मेरे पास एक नया प्रकाश है, जिसे अबतक कोई भी नहीं जानता....(**वह अपनेको एक असाधारण अग्नि-शिखा से प्रदिप्त कर देता है**) बड़ा ही विचित्र है, न ?
चौथा शिशु—(**नीलू को खींचते हुए**) मेरा यंत्र देख लो, बिना पंख के पक्षी के समान आकाश में उड़ सकता हूँ !....
पाँचवा शिशु—नहीं, नहीं; मेरा ही पहले देखो; इससे चन्द्रमा में छिपे हुए खजानों का पता चलता है !....
[**नीलू तथा नीली को घेर कर नीलशिशु चिल्लाते हैं—' मेरा तो देख लो !....नहीं,**

मेरा इससे भी सुंदर है !....मेरा बड़ा विचित्र है !....मेरा तो चीनी का बना हुआ है !....उसके यंत्र में तो कुछ है ही नहीं....उसने मुझसे चुराया है....' आदि । नीली और नीलू प्रयोगशालाओं की ओर बढ़ते हैं, जहाँ आविष्कारकर्त्ता अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के आदर्श-यंत्र चला रहे हैं । शिशु मानचित्र और पुस्तकें खोल देते हैं, नीली मूर्तियों के पर्दे हटाते हैं, और बड़े-बड़े फूल और फल ले आते हैं, जो नीलम और फिरोज के बने हुए प्रतीत होते हैं]

एक नन्हा नील शिशु—[नीले पुष्पों के भार से दबते हुए] मेरे फूलों को तो देख लीजिए !

नीलू—यह क्या है ?.... उन्हें मैं पहचानता नहीं ।

नन्हा नील-शिशु—चमेली हैं ।

नीलू—चमेली कहाँ !.... ये तो केले के पत्तों से भी बड़े हैं ।

नन्हा नील-शिशु—इनकी सुगंध कितनी अच्छी है !!

नीलू—(सूँघते हुए) वाह ! . वाह !!

नन्हा शिशु—ऐसे ही होंगे जब मैं पृथ्वी पर आ जाऊँगा....

नीलू—यह कब होगा ?

नन्हा नील-शिशु—अब केवल तिरपन वर्ष चार महीने और नौ दिन बाकी हैं !....

[डंडे पर लटकाये अंगूर का एक असाधारण गुच्छा ढोते हुए दो नील शिशु आते हैं, अंगूर नासपाती से भी बड़े हैं]

अंगूर ढोता हुआ एक शिशु—मेरे फलों के बारे में तुम्हारी क्या राय है ?

नीलू—नासपातियों का गुच्छा !!

शिशु—नहीं, नहीं, ये तो अंगूर हैं । सब–के–सब ऐसा ही हो जायँगे ।.... जब मेरी उम्र तीस वर्ष की होगी.... मैंने इसका उपाय खोज निकाला है....

एक अन्य शिशु—(खरबूजे के समान बड़े और नीले सेवों की टोकरी के भार से दबते हुए)—देखिए ! मेरे सेव देख लीजिए !....

नीलू—ये तो खरबूजे हैं !

शिशु—जी नहीं ! ये मेरे सेव हैं; इनसे भी अच्छा दिखला सकता हूँ !.... जब मैं जीवन धारण करूँगा तो सब सेव इतने ही बड़े हो जायँगे.... मैंने इसका उपाय सोच निकाला है....

एक अन्य शिशु—(नीली ठेलगाड़ी पर तरबूजों से भी बड़े खरबूजे लाकर) मेरे छोटे खरबूजों के बारे में आपकी क्या राय है ?

नीलू—ये तो तरबूज हैं ?

खरबूजोंवाला शिशु—जब मैं पृथ्वी पर आ जाऊँगा, तब खरबूजों का गौरव बढ़ जायगा !.... मैं नवग्रह के राजा का माली बन जाऊँगा ....

नीलू—नवग्रह के राजा !.... वह कहाँ है

नव ग्रह का राजा [आत्माभिमान के साथ आगे बढ़ता है । उसकी अवस्था चार वर्ष की प्रतीत होती है । वह बड़ी कठिनाई से अपने छोटे-छोटे पैरों पर खड़ा रह

सकता है]—मैं हूँ !

नीलू—अरे, तो बड़े नहीं हो....

नव-ग्रह का राजा (गंभीरता पूर्वक)—मैं जो कुछ दिखला कर करूँगा, वह महान होगा।

नीलू—तुम क्या करोगे ?

नव-ग्रह का राजा—मैं अखिल सौर-मंडल के ग्रहों का संघ स्थापित करूँगा।

नीलू—(आश्चर्यचकित) सच ?

नव-ग्रह का राजा—सब इसके सदस्य बन जायँगे, शनि, अरुण और वरुण को छोड़कर, जो अपरिमेय दूरी पर स्थित हैं।

[वह स्वाभिमान के साथ चला जाता है]

नीलू—यह तो बड़ा दिलचस्प है....

एक नील-शिशु—उसे देख लीजिए !....

नीलू—किसे ?

शिशु—वहाँ, खंभे से पीठ लगाकर जो सो रहा है....

नीलू—कौन है ?

शिशु—वह पृथ्वी पर शुद्ध आनंद ले आयगा।....

नीलू किस तरह ?

शिशु—ऐसे विचारों द्वारा जिन्हें अभी तक कोई भी सोच नहीं सका।

नीलू—और दूसरा मोटा बच्चा जो नाक में उँगली डाले है, वह क्या करेगा ?

शिशु—जब सूरज ठंढा हो जायगा तो पृथ्वी को गरमाने के लिए उसे आग का पता लगाना है।

नीलू—और उधर, जो दो बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए हैं, और आलिंगन कर रहे हैं; भाई-बहन हैं ?

शिशु—वे तो बड़े विचित्र हैं....प्रेमी हैं....

नीलू—यह क्या है ?

शिशु—मुझे क्या मालूम ?....काल उन्हें मजाक में इस नाम से पुकारा है। ये दोनों दिन-भर आँखों में आँखें डालकर एक दूसरे को देखते रहते हैं, आलिंगन करते जाते हैं और एक-दूसरे को विदा करते जाते हैं....

नीलू—क्यों ?

शिशु—ऐसा लग रहा है कि दोनों साथ-साथ यहाँ से नहीं जा सकेंगे....

नीलू—और यह गुलाबी रंग का बच्चा, जो बहुत गंभीर मालूम पड़ता है और अपना अंगूठा चूसता रहता है, वह कौन है ?

शिशु—उसे पृथ्वी का अन्याय मिटाना है....

नीलू—सच ?

शिशु कहते हैं, वह मुश्किल काम है....

नीलू—और यह लाल बालोंवाला जो अंधे के समान चलता है। क्या वह सचमुच

अंधा है ?

शिशु—अभी नहीं; लेकिन अंधा ही बन जायगा....उसे अच्छी तरह से देख लो; कहते हैं, वह मृत्यु को हटा देगा....

नीलू—इसका क्या माने है ?

शिशु—मैं ठीक से जानता नहीं, कहते हैं, बहुत महान् कार्य है।

नीलू (खंभे के नीचे, सीढ़ियों तथा आसनों पर सोये हुए बच्चों को दिखलाते हुए)—और ये सोये हुए बच्चे ? हजारों होंगे....क्या वे कुछ नहीं करते ?

शिशु—वे सोच रहे हैं ?

नीलू—क्या सोच रहे हैं ?

शिशु—अबतक उन्हें खुद मालूम नहीं है; लेकिन सबको पृथ्वी पर कुछ-न-कुछ ले आना है। यहाँ से कोई भी खाली हाथ नहीं जा सकता....

नीलू—यह किसका हुक्म है ?

शिशु—काल का, वह दरवाजे पर खड़ा है....जब दरवाजा खोलेगा तब देख लेना, वह हमलोगों को बहुत तंग करता है।

एक शिशु (भीड़ को चीरते हुए, पीछे की ओर से आता है)—नमस्कार, नीलूजी !

नीलू—अरे, यह मेरा नाम कैसे जानता है ?

शिशु (नीलू तथा नीली को उत्सुकता से छाती लगाकर)—नमस्कार !....अच्छे हो ? मुझे छाती लगाओ, और तुम भी नीलीजी !....तुम्हारा नाम जानता हूँ, इसमें क्या आश्चर्य है, मैं तो तुम्हारा भाई बननेवाला हूँ....अभी मुझे पता चला कि तुम आये हुए हो ! मैं उधर पीछे की ओर था, अपने विचारों की पोटली तैयार कर रहा था....माँ से कह देना कि मैं तैयार हूँ....

नीलू—क्या हमलोगों के यहाँ आने का विचार है ?

शिशु—और क्या ! अगले साल, वैशाख में....बचपन में मुझे अधिक तंग मत करना.... मैंने तुम दोनों को पहले ही से छाती लगाया है, इससे मैं बहुत खुश हूँ....पिताजी को पालना मरम्मत करने की याद दिलाओ....हमारे यहाँ अच्छा है न ?

नीलू—बुरा नहीं है....और माँ बड़ी अच्छी है।

शिशु—खाना कैसा है ?

नीलू खराब नहीं है....कभी-कभी पुलाव भी मिलता है ! कहो, नीली दीदी ! मिलता है न ?

नीली—हाँ, हाँ, मिलता है, माँ पकाती है....

नीलू—इस थैली में क्या है ? क्या हमलोगों के लिए कुछ ले आते हो ?

शिशु (साभिमान)—मैं तीन बीमारियाँ लाता हूँ— मोतीझरा, कुकुरखाँसी और खसरा....

नीलू—यह तो बहुत अच्छा नहीं है !....इसके बाद क्या करोगे ?

शिशु—इसके बाद चला जाऊँगा।

नीलू—तब तुम्हारा आना बेकार है।

शिशु—हमलोगों को चुनने थोड़े ही देते हैं....

[उसी समय एक गंभीर ध्वनि गूँज उठती है, वह मानों खंभों तथा द्वारों से निकलती हो]

नीलू—यह क्या है ?

शिशु—काल है ! द्वार को खोलने वाला है....

[नील-शिशुओं की भीड़ में हलचल मच जाती है। अधिकांश अपने यंत्रों तथा कामों को छोड़ देते हैं; बहुत-से जाग उठते हैं; सब-के-सब द्वार की ओर देखते हैं और उसी की ओर बढ़ते हैं]

ज्योति (नीलू के पास जाकर)—खंभों की आड़ में छिप जायँ.... काल हमें देखने न पावे....

नीलू—यह आवाज कहाँ से आती है ?

एक शिशु—उषा जाग उठती हैं....आज पैदा होनेवाले बच्चे इसी घड़ी पृथ्वी पर उतरते हैं....

नीलू—कैसे उतरेंगे ?.... सीढ़ी है ?....

शिशु—देख लोगे⋯काल द्वार खोल देगा....

नीलू—काल क्या है ?

शिशु—एक बूढ़ा है, जो जानेवालों को बुलाता है ।

नीलू—वह दुष्ट है ?

शिशु—नहीं तो, लेकिन हमारी एक भी नहीं सुनता.... कोई कितना ही विनय क्यों न करे, यदि उसकी बारी नहीं है, तो वह उसे चले जाने से रोकता है ।

नीलू—क्या तुमलोग चला जाना पसन्द करते हो ?

शिशु—यहाँ रह जाना हम पसंद नहीं करते; फिर भी चले जाते समय कुछ उदास होते हैं.... देखो, देखो.... वह दरवाजा खोल रहा है....

[विशाल नीला द्वार खुल जाता है। पृथ्वी पर की आवाजें दूर-दूर के संगीत के समान सुनाई देती हैं। लाल तथा हरा प्रकाश-भवन में प्रवेश करता है। काल, लम्बे कद का बूढ़ा, देहली पर खड़ा हो जाता है। उसकी दाढ़ी बहुत लम्बी है, एक हाथ में दँराती है और दूसरे में रेत-घड़ी। द्वार के पार एक जल-यान का उज्जवल तथा सुनहला पाल दिखाई देता है, जो उषा के गुलाबी बादलों पर स्थित है]

काल (देहली पर)—जिनकी घड़ी बज रही है, क्या वे तैयार हैं ?

नील शिशु (भीड़ को चीरते हुए, चारों ओर से दौड़ते हैं)—हम तैयार हैं ! तैयार हैं !! तैयार !!!

काल (रूखे स्वर से बाहर जानेवाले बच्चों को संबोधित करते हुए)—एक-एक करके !.... जिनकी घड़ी नहीं आई है ऐसे भी आज फिर बहुत खड़े हैं,.... क्या ऐसा ही होता रहेगा ! लेकिन कोई भी मुझे धोखा नहीं दे सकता !.... (एक बच्चे को रोकते हुए)—तुम्हारी बारी नहीं है ! वापस जाओ, कल है.... तुम भी वापस जाओ, दस वर्ष बाद आओ,... यह क्या है ? तेरह गड़ेरिए ? केवल बारह की

जरूरत है; आजकल गड़ेरिए को कौन पूछता है !.... डाक्टर आ गये ? आजकल पृथ्वी पर जरूरत से ज्यादा डाक्टर हैं; लोग इसके बारे में शिकायत करते हैं.... और इंजीनियर, कहाँ है ?.... अच्छा, अब एक ईमानदार आदमी की जरूरत है, एक ही, कौतूहल के लिए ....ईमानदार आदमी कहाँ है ?.... तुम हो ? (**शिशु सिर हिलाकर 'हाँ' कहता है**) तुम तो बहुत कमजोर मालूम पड़ते हो....जल्दी मर जाओगे !.... अरे, इतनी जल्दी क्यों ?.... और तुम, क्या है तुम्हारे पास ?.... कुछ नहीं ? खाली हाथ आये हो ?.... तब पार नहीं करोगे.... कुछ-न-कुछ तैयार करो; कोई अपराध ही क्यों न हो, या कोई बीमारी ही सही, मुझसे क्या ? लेकिन कुछ होना ही चाहिए....

[**एक शिशु से, जिसे दूसरे इसकी इच्छा के विरुद्ध आगे ढकेलते हैं**]

अरे, तुम्हें क्या हो गया ? भली-भाँति जानते हो कि तुम्हारी घड़ी आ गई है ?.... एक धर्मवीर की जरूरत है, जो अन्याय का विरोध करे, क्या तुम्हीं हो, जाना ही होगा....

नील-शिशु—महाशय, वह जाना नहीं चाहता ।

काल—क्या ? जाना नहीं चाहता !! बेचारे को क्या हो गया है ? यहाँ पर कोई भी उज्र नहीं कर सकता, इसके लिए फुरसत नहीं है....

नन्हा शिशु (**जिसे ढकेला जाता है**)—नहीं, नहीं, मैं नहीं जाऊँगा !! नहीं पैदा होना अच्छा है.... मैं यहाँ रहना पसंद करता हूँ !!

काल—इसका कोई सवाल नहीं है—घड़ी आ गई तो आ गई ! जल्दी चलो !!

एक शिशु (**आगे बढ़कर**)—मुझे जाने दीजिए !.... मैं उसी की जगह ले लूँगा !.... कहते हैं, मेरे माँ-बाप बूढ़े हो चले हैं; बहुत समय से मेरी राह देख रहे हैं !....

काल—यह नहीं हो सकता !.... घड़ी आ जाने पर ही तुम्हें जाने दूँगा। यदि तुमलोगों का वश चलता तो कुछ भी नहीं हो पाता । अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग.... कोई जल्दी जाना चाहता है, कोई देर में जाना चाहता है.... (**देहली पर आये हुए बच्चों को हटाकर**)—अरे बच्चो ! नजदीक मत आओ.... पीछे हट जाओ । जो नहीं जानेवाले हैं उन्हें बाहर देखना भी नहीं चाहिए । अब तो जल्दी में हो; और जब तुम्हारी बारी आ जायगी, तब डर के मारे पीछे हट जाओगे.... देखो, ये चारों पीपल के पत्तों के समान थर-थर काँप रहे हैं....

[**एक बच्चे से, जो देहली पर पहुँच कर, अचानक वापस जाता है**]

क्या है ? तुम्हें क्या हो गया है जी ?....

शिशु—मैं अपना संदूक भूल गया हूँ; इसमें मेरे दो अपराध हैं ।

दूसरा शिशु—मैं तो वह शीशी ही भूल गया हूँ जिसमें जनता को प्रकाश देनेवाला विचार है ....

तीसरा शिशु—मैं अपनी सबसे-अच्छी नासपाती की कलम ही भूल गया हूँ ।

काल—जल्दी दौड़ कर ले आओ ! हमारे लिए केवल छः सौ बारह सेकेंड बाकी रह गये हैं.... उषा का जलयान प्रस्थान करनेवाला है....देर से आओगे तो फिर कभी

पैदा नहीं हो सकोगे.... चले आओ, जल्दी, जल्दी ! नौका पर चढ़ जाओ.... [एक बच्चे को पकड़ते हुए जो उसके पैरों से होकर बाहर निकलना चाहता है] अरे ! फिर आये हो ! यह तीसरी बार है कि अपनी बारी से पहले ही जन्म लेना चाहते हो.... फिर ऐसा करोगे तो तुम्हें महाशय अनन्तकाल के हवाले कर दूँगा, वहाँ सदा-सर्वदा के लिए रहना पड़ जायगा; और वहाँ मन बहलाने का भी कोई उपाय नहीं है.... अच्छा, सब तैयार हैं न ? (बच्चों पर दृष्टि दौड़ाते हुए) एक नहीं आया....वह अपनेको भले ही छिपाय, मैं उसे भीड़ में देख रहा हूँ.... मुझे कोई भी धोखा नहीं दे सकता....अरे तुम, जिसे सब प्रेमी कहते हैं, अपनी प्रेमिका से विदा लो....

[दो शिशु, जो 'प्रेमी-प्रेमिका' के नाम से पुकारे जाते हैं, एक-दूसरे से लिपटकर, काल की ओर बढ़ते हैं और निराशापूर्ण मुद्रा से उसके सामने घुटने टेकते हैं]

पहला शिशु—काल महाशय ! मुझे उसके साथ जाने दीजिए !!

दूसरा शिशु—काल महाशय ! मुझे उसके साथ रहने दीजिए !!

काल—यह नहीं हो सकता !....अब केवल तीन सौ चौरानवे सेकण्ड रह गये हैं।

दूसर शिशु—मैं पैदा होना नहीं चाहता।

काल—यह तुम्हारे वश की बात नही है।

पहला शिशु (गिड़गिड़ाते हुए)—काल महाशय ! मैं देर से पृथ्वी पर जाऊँगी....

दूसरा शिशु—उसके आने के पहले ही मैं मर जाऊँगा।....

पहला शिशु—मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी।

दूसरा शिशु—पृथ्वी पर हम एक-दूसरे से नहीं मिल सकेंगे।

काल—मुझसे क्या ?.... जीवन महाशय से शिकायत करो....मैं तो उसकी आज्ञानुसार जोड़ देता हूँ और फिर उसीकी आज्ञा से अलग भी कर देता हूँ....[एक शिशु को पकड़ते हुए] आओ....

दूसरा शिशु—न ! न ! न !....उसे भी पकड़.... ....

पहला शिशु (दूसरे के कपड़ों को पकड़ते हुए)—उसे यहाँ रहने दीजिए ! रहने दीजिए !!....

काल—आओ न ! मरने के लिए नहीं बुलाता हूँ, बल्कि जीने के लिए (शिशु को खींचते हुए) आओ न !

पहला शिशु—(जाते हुए शिशु की ओर बाँहों को फैलाते हुए) निशान ! निशान !! बताओ, तुम्हें कैसे पहचान सकूँगी ?

दूसरा शिशु—तुम्हें हमेशा प्यार करूँगा।....

पहला शिशु—मैं सबसे अधिक विरहिणी रहूँगी, इससे मुझे पहचान सकोगे।

[वह फर्श पर गिरकर निश्चेष्ट पड़ी रहती है]

काल—तुम्हें आशा रखनी चाहिए.... अच्छा, सब हो गया है.... [रेत-घड़ी की ओर देखते हुए [हमारे लिए अब केवल तिरसठ सेकंड बच गये....

[जानेवाले और रहनेवाले बच्चों के दोनों दलों में हलचल। एक दूसरे को विदाई

देते हैं—' नमस्ते मोहन.... नमस्ते विजय।.... सब सामान तुम्हारे पास है, न? जनता को मेरे विचारों के लिए तैयार करो!.... कुछ भूल नहीं गये ?.... मुझे पहचानने की कोशिश करोगे न ? तुमसे जरूर ही मिल जाऊँगा.... अपने विचारों को मत खो देना.... सँभल जाओ, नौका से गिर जाओगे.... खबर भेजते रहो!.... सुना है कि ऐसा करना मना है···· अरे, कोशिश करो, न।.... वहाँ अच्छा है कि नहीं, उसकी खबर भेज देना···· तुम्हारा स्वागत करूँगा···· मैं तो राजकुमार बनने वाला हूँ.... ' आदि-आदि।]

काल (चाभियाँ तथा दराँती हिलाते हुए)—बस, बस! लंगर खुल गया है! [जलयान का पाल द्वार के सामने से धीरे-धीरे ओझल हो जाता है। बच्चों की आवाजें कम होती जारही हैं—' पृथ्वी! पृथ्वी!!.... देखते हो न ?.... कितनी सुन्दर है! उजली है! ....विशाल है!.... । ' दूर-दूर से उल्लासपूर्ण स्वागत-गान सुनाई देता है]

नीलू (ज्योति से)—यह क्या है ?.... यह बच्चों की आवाज नहीं है ....कौन गाता है ?

ज्योति—उनकी माताएँ स्वागत-गान गाती हुई उनसे मिलने आती हैं....

[इतने में काल नील-द्वार बंद करनेवाला ही था कि भीतर में दृष्टि दौड़ाकर वह अचानक नीलू, नीली और ज्योति को देख लेता है]

काल (आश्चर्य-चकित तथा क्रुद्ध)—यह क्या है ? यहाँ क्या करते हो ?.... कौन हो, तुम ? पृथ्वी पर क्यों नहीं हो ?....किस रास्ते से भीतर आये ? (वह दराँती से धमकाते हुए उनकी ओर बढ़ता है)

ज्योति—(नीलू से) जवाब मत दो! नील-पंछी मेरे पास है.... मेरे कपड़ों में छिपा है.... भाग निकलें....मणि घुमाओ, वह हमारा पीछा नहीं कर पायगा।

[वे आगे के खंभों में से, बाईं ओर निकल जाते हैं]

[पटाक्षेप]

षष्ठ अंक

प्रथम दृश्य

विदाई

[रंगमंच पर एक दीवाल खड़ी है, जिसमें एक छोटा-सा द्वार है। उषा का समय है। नीलू, नीली, ज्योति, रोटी, चीनी, अनल और दूध का प्रवेश]

ज्योति—जानते हो, हम कहाँ आ पहुँचे हैं ?

नीलू—जी नहीं, ज्योतिजी ! बिलकुल नहीं जानता हूँ....

ज्योति—तुम यह दीवाल और यह छोटा-सा दरवाजा नहीं पहचानते हो ?

नीलू—दीवाल लाल है और दरवाजा हरा।

ज्योति—वह तुम्हें कुछ भी याद नहीं दिलाता, क्या ?

नीलू—इतना ही याद दिलाता है कि काल ने हमें उस दरवाजे से भगा दिया था।

ज्योति—स्वप्न कितना विचित्र है....लोग अपना हाथ भी नहीं पहचान पाते....

नीलू—कौन स्वप्न देख रहा है, मैं ?

ज्योति—शायद मैं ही ! कौन जाने ? जो कुछ भी हो, इस दीवाल के पीछे एक मक़ान है, जिसे तुमने जीवन में अक्सर देखा है।

नीलू—एक मकान जिसे मैंने अक्सर देखा है।

ज्योति—हाँ, हाँ, कुंभकर्ण जी ! यह वही मकान है, जिसे आज से ठीक एक वर्ष पहले हमने संध्या समय छोड़ दिया था।

नीलू—ठीक एक वर्ष पहले !....तब ?

ज्योति—अरे, इस प्रकार आँख फाड़-फाड़कर देखते क्यों हो ?....यह तुम्हारा ही मकान है....

नीलू (दरवाजे के पास जाकर)—मैं सोच रहा था....हाँ, हाँ,....मुझे जान पड़ रहा है.... यह छोटा सा दरवाजा....हाँ, हाँ, पहचानता हूँ....माँ-बाप यहाँ है ? क्या हम माँ के पास आ पहुँचे हैं ! मैं अभी भीतर जाना चाहता हूँ....अभी उसे छाती से लगाना चाहता हूँ....

ज्योति—जरा-सा रुक जाना !....तुम्हारे मा-बाप गाढ़ी नींद सो रहे हैं, उन्हें एकाएक जगाना ठीक नहीं है....फिर जबतक घड़ी न आय, दरवाजा खुलेगा ही नहीं....

नीलू—कौन-सी घड़ी ?....देरतक इन्तजार करना होगा क्या ?

ज्योति—हाय, हाय ! केवल कुछ ही मिनट....

नीलू—लौटने की खुशी नहीं है आपको ? ज्योतिजी ! आपको हो क्या गया है ?.... पीली हैं, बीमार तो नहीं हैं ?

ज्योति—कुछ नहीं है, बेटा....इसीलिए उदास हूँ कि मुझे तुम्हें छोड़ देना पड़ेगा....

नीलू—हमें छोड़ देंगी ?

ज्योति—हाँ, छोड़ देना पड़ेगा....मेरा काम पूरा हो चुका है; एक वर्ष बीत गया है, परी वापस आयँगी और तुमसे नील-पंछी माँग लेंगी।

नीलू—लेकिन नील-पंछी मेरे पास है ही नहीं !....स्मृति-प्रदेशवाला बिलकुल काला बन गया है, भविष्य-प्रदेश-वाला बिलकुल लाल, रात्रि-प्रासाद के सब पत्ती मर गये हैं और अरण्य का पत्ती पकड़ ही नहीं सका....कोई पत्ती रंग बदल देता है, कोई मर जाता है, कोई उड़कर भाग जाता है—इसमें तो मेरा कसूर नहीं है,....क्या परी मुझ पर गुस्सा करेंगी ? वह मुझसे क्या कहेंगी ?

ज्योति—हमलोगों ने भरसक कोशिश की है....मालूम होता है कोई नील-पंछी होता ही नहीं; या पिंजरे में रखते ही उसका रंग बदल जाता है....

नीलू—पिंजरा कहाँ है ?

रोटी—यहाँ पर, स्वामी जी....हमारी इस लम्बी तथा जोखिम-भरी यात्रा में यह पिंजरा मेरे संरक्षण में रहा, आज मेरा कर्तव्य पूरा हो चुका है और उसे आपके कर-कमलों में ज्यों-का-त्यों प्रत्यार्पित कर देती हूँ....(**वक्ता की तरह भाषण प्रारंभ करते हुए**) इस शुभावसर पर मैं सबके नाम से कुछ कहने की आज्ञा चाहती हूँ।

अनल—उसे बोलने की आज्ञा कौन देता है ?

जल—शांति ! शांति !!

रोटी—एक तुच्छ शत्रु तथा ईर्ष्यालु प्रतिद्वन्द्वी कितनी भी आपत्ति क्यों न करे....(**ऊँचे स्वर से**) इससे अंततक अपना कर्त्तव्य निबाहने से मैं विचलित नहीं हो सकती.... इसलिए सबके नाम से....

अनल—मेरे नाम से नहीं....मैं खुद बोल सकता हूँ....

रोटी—इसलिए सबके नाम से मैं इन दो सौभाग्यशाली बच्चों से विदा लेती हूँ, जिनका महत्वपूर्ण कार्य आज समाप्त हो रहा है। भावावेश के कारण मेरी वाणी रुँधी हुई है, भावी वियोग के कारण हृदय में करुणा और ममता की लहरें....

नीलू—क्या ? विदा ?....तुम भी चली जाओगी।

रोटी—हाय ! विवशता है....मैं तो ऊपरी तौर से जा रही हूँ; असल में रहूँगी ही। एक बात जरूर है, आज से तुम मेरी वाणी नहीं सुन सकोगे....

अनल—इसमें तो कोई भी हानि नहीं है....

जल—शांति ! शांति !

रोटी (**स्वाभिमान**)—उसे बकने दो....मैं कह रही थी—तुम मुझे नहीं सुन सकोगे, मुझे जीवित रूप में नहीं देख सकोगे....वस्तुओं के अदृश्य जीवन के प्रति तुम्हारी आँखें बंद हो जायँगी; लेकिन मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे साथ रहूँगी। मैं तो मनुष्य का सबसे ईमानदार भोजन हूँ और उसका सबसे पुराना मित्र....

अनल—क्या कहा ! और मैं ?

ज्योति—शांति ! समय बीत रहा है। घड़ी बजनेवाली है, जब हमें मौन रहना पड़ेगा

....बच्चों से विदा लो....

अनल (तेजी से आगे बढ़कर)—मैं पहले, मैं पहले !....(वह आवेग से बच्चों को गले लगाता है) नमस्कार नीलू ! नमस्कार नीली, विदा !....अगर किसी समय कहीं आग लगाना चाहो तो मुझे याद करना ।

नीली—हाय ! मुझे जलाता है !....

नीलू—हाय ! हाय !! मेरी नाक जलाता है !....

ज्योति—सँभल जाओ ! अनलजी ! अबतक चूल्हे में नहीं पहुँच गये हो....

जल—मूर्ख है !

रोटी—गँवार है !....

जल (बच्चे के पास आकर)—मैं तुम्हें बड़े प्रेम से गले लगाता हूँ, तुम्हें चोट नहीं लगेगी....

अनल—खबरदार ! भींग जाओगे !....

जल—मैं प्रेममय और कोमल हूँ; मनुष्यों की सेवा करता हूँ....

अनल—और जो डूबकर मर जाते हैं ?

जल—बच्चो ! झरनों को प्यार करो । सोताओं की ध्वनि पर ध्यान दो....इनमें मेरा निवास है....

अनल—देखो, उसने चारों तरफ पानी बहा दिया है ।

जल—शाम को जब किसी झरने के पास बैठे हुए होगे—पास के जंगल में अनेक झरने हैं—तब ध्यान लगाकर उसकी ध्वनि समझने की कोशिश करो....और कुछ कहते नहीं बनता....आँखें डबडबा आई और गला रुँधा हुआ है....

अनल—ऐसा तो मालूम नहीं होता....

जल—सुराही देखकर मुझे याद करो....इसके अलावा तालाब में, बावली में, कुएँ में, नल आदि में मुझे देख सकोगे....

चीनी (मीठे-मीठे शब्दों में)—यदि तुम्हारी स्मृति में थोड़ी-सी जगह रह गई, तो इतना ही याद रखो कि मैं तुम्हें अच्छी लगती थी....और कुछ नहीं कह सकूँगी....आँसू तो मेरी अपनी प्रकृति के विरुद्ध हैं, मेरे पैरों पर गिरने पर चोट करते हैं....

रोटी—धूर्त्त कहीं की !

नीलू—कुत्ता और बिल्ली कहाँ गये ? क्या कर रहे हैं ? [उसी समय बिल्ली की चिल्लाहट सुनाई देती है]

नीली (घबराकर)—बिल्ली रो रही है !....उसे तंग किया जाता है ।....

[चिल्लाती हुई बिल्ली का दौड़कर प्रवेश । उसके कपड़े अस्त-व्यस्त और फट-चिट कर चिथड़े हो गये हैं । वह अपना रूमाल गालों पर रखी हुई है, मानों दाँत में दर्द हो । कुत्ता उसका पीछा करता हुआ घूँसा और लात मारता हुआ आता है]

कुत्ता (बिल्ली को मारते हुए)—लो, पेट भर गया कि नहीं ? और चाहती हो ? यह लो ! और लो !! यह भी लो !!

ज्योति, नीलू और नीली—(दोनों को अलग करने दौड़ते हैं) मानो ! पागल हो

गये हो क्या ?···· बस ! बस !! बंद करो ! बंद करो !!

[दोनों को अलग करते हैं]

ज्योति—यह क्या है ? क्या हुआ ?

बिल्ली (रोती और आँखें पोंछती हुई)—ज्योति देवि ! यह कुत्ते की करतूत है .... उसने मेरा अपमान किया है, मेरे खाने मे काँटे रख दिये, पूँछ पकड़ कर मुझे घसीट लिया, लात मारता रहा, और मैंने कुछ नहीं किया, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं !!....

कुत्ता (इसकी नकल करते हुए)—कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं ! (धीमे स्वर में) खैर, तुम्हे मिल गया न, खूब मिल गया, दूसरे मौके पर और मिल जायगा !....

नीली (बिल्ली को छाती लगाती हुई)—क्यों दर्द करता है, मेरी अच्छी बिल्ली !.... मैं भी रोनेवाली हूँ !....

ज्योति (रुखाई से कुत्ते को संबोधित करती हुई)—तुम्हारा नीच व्यवहार इसलिए और बुरा लगता है, कि इस समय बच्चों से विदा लेते समय हम वैसे ही सब-के-सब बहुत दुखी हैं....

कुत्ता (अचानक घबराकर)—बच्चों से विदा लेते समय ?....

ज्योति—हाँ, घड़ी बजनेवाली है.... हम सब मौन हो जायँगे.... फिर किसीसे बातचीत नहीं कर सकेंगे....

कुत्ता (निराशा से चीखने लगता है; बच्चों को बार-बार छाती लगाते हुए)—नहीं, नहीं ! मैं चुप नहीं रहना चाहता हूँ !···· हमेशा उनसे बातचीत करता रहूँगा !.... स्वामी जी ! अबसे आप मुझे समझेंगे न ?.... हाँ, हाँ, हाँ !.... हम एक दूसरे से सब कुछ कहेंगे.... मैं बड़ी अच्छी तरह से रहूँगा.... मैं लिखना-पढ़ना सीख लूँगा.... सफाई का भी खयाल करूँगा.... रसोईघर से चोरी नहीं करूँगा.... कोई चमत्कार करके दिखला दूँ ? बिल्ली को गले लगाऊँ ?....

नीली (बिल्ली से)—और तुम ?.... तुम्हें कुछ नहीं कहना है ?

बिल्ली (रहस्यमय बनकर)—मैं तुम दोनों को प्यार करती हूँ, जहाँतक तुम इसके योग्य हो....

ज्योति—प्यारे बच्चो ! मैं तुम दोनों को अंतिम बार छाती लगाती हूँ....

नीलू और नीली (ज्योति से लिपट कर)—नहीं, नहीं !.... ज्योतिजी !.... हमारे साथ रहिए !.... पिता जी तुम्हें रहने देंगे.... हम माताजी से कह देंगे कि आपने हमारे साथ बड़ा अच्छा बरताव किया है....

ज्योति—हाय ! यह हो ही नहीं सकता···· यह दरवाजा हमारे लिए बंद है, मुझे तुम्हें छोड़ ही देना है....

नीलू—अकेली कहाँ जायँगी, आप ?

ज्योति—दूर नहीं जाना है, प्यारे बच्चो; उधर, वस्तुओं के मौन प्रदेश में....

नीलू—नहीं, नहीं; यह नहीं होने को.... हम आपके साथ जायँगे.... माँ से कह दूँगा....

ज्योति—प्यारे बच्चो ! रोओ मत !!.... जल के समान मेरी कोई ध्वनि नहीं है; मेरे

पास केवल प्रकाश है, जिसे मनुष्य सुनता ही नहीं.... लेकिन मैं समय के अंततक उसकी रक्षा करती रहूँगी.... अच्छी तरह से याद रखो—चाँदनी की प्रत्येक किरण में प्रत्येक मुस्कराते तारे में, प्रत्येक नवीन उषा में, प्रत्येक जलते दीपक में, तुम्हारी आत्मा की प्रत्येक सच्ची और स्वच्छ भावना में मैं ही बोल रही हूँ.... (दीवाल के उसपार छः बजते हैं) सुनो !....घड़ी आ गई है.... विदा !.... दरवाजा खुल रहा है !.... भीतर जाओ !....भीतर जाओ !....भीतर जाओ !....

[वह बच्चों को दरवाजे में घुसाती है ! द्वार बंद हो जाता है। रोटी अपने आँसू पोंछ लेती है; चीनी, जल आदि रोते हुए चारों ओर दौड़कर लुप्त हो जाते हैं। नेपथ्य से कुत्ते के भूँकने की आवाज। रंगमंच एक क्षण खाली रह जाता है; इसके अनन्तर दीवाल बीच से खुलकर अंतिम दृश्य प्रस्तुत करती है]

द्वितीय दृश्य

जागरण

[प्रथम अंक का प्रथम दृश्य। लेकिन समस्त वातावरण परिवर्तित है—शांति, मुस्कराहट और आनंद का मानों साम्राज्य है। उषा का प्रकाश खिड़की की दरारों से होकर प्रवेश कर रहा है। दाईं ओर नीलू और नीली, अपनी-अपनी खाट पर गहरी नींद सो रहे हैं। बिल्ली, कुत्ता और अन्य सब वस्तुएँ परी के आगमन के पहले की तरह, अपने-अपने स्थान पर हैं। नीलू की माँ का प्रवेश।]

माँ (प्रेम और आनंद से कुड़कुड़ाती हुई)—उठो ! अरे ! उठो ! कितने आलसी बन गये हो ! शर्म नहीं आती क्या ? छः बज चुके हैं ! सूर्य वन के ऊपर उग गया है ! देखो ! अबतक सो रहे हैं ! (बच्चों पर झुककर चुम्बन देती है) कितने स्वस्थ मालूम होते हैं....फूलों की तरह महकते हैं। (पुनः चुम्बन देती हुई) बच्चे बड़े अच्छे होते हैं !.... खैर, वे तो दिन भर नहीं सो सकते हैं.... वे आलसी न बन जायँ.... फिर कहते हैं, दिन चढ़ने तक सोना तंदुरुस्ती के लिए अच्छा नहीं है....

(नीलू को हौले-हौले हिलाती हुई) उठो, नीलू, उठो....

नीलू (जागकर)—क्यों ? ज्योति ?.... कहाँ है ? नहीं, नहीं, मत चली जाना....

माँ—ज्योति ?.... जरूर आ गई है.... काफी देर से यहाँ है.... खिड़की बंद होने पर भी, यहाँ पर कितना प्रकाश है.... अच्छा खोल देती हूँ।

[वह खिड़की खोल देती है; दिन के उजले प्रकाश से कमरा भर जाता है]

देखो, है न ज्योति.... अरे, तुम्हें क्या हो गया है ?.... आँखों को चकाचौंध लग गई है, क्या ?

नीलू (आँखें मलते हुए)—माँ ! माँ !!.... तुम्हीं हो....

माँ—और क्या !.... कौन हो ही सकता है ?....

नीलू—तुम्हीं हो !.... हाँ, तुम्हीं हो !

माँ—और क्या ? जरूर मैं हूँ !.... एक ही रात में मेरा चेहरा नहीं बदल गया है.... आँख फाड़-फाड़ कर क्यों देख रहे हो ?.... मेरी नाक उल्टी-सीधी हो गई है, क्या ?

नीलू—ओ हो, तुम्हें फिर देखकर कितनी खुशी हो रही है।.... इतने लम्बे अरसे के बाद !.... मुझे जल्दी ही गले लगाओ.... और ! और !! और !!! यह तो मेरी ही खाट है ?.... घर ही आ गया हूँ !....

माँ—तुम्हें क्या हो गया है ? जागते हो कि सोते हो ?.... बीमार तो नहीं हो ?.... जरा-सा जीभ निकालकर देखला दो .... उठो; कपड़े पहन लो....

नीलू—अरे, केवल कमीज पहना हूँ !!

माँ—और क्या !.... पाजामा और कुरता पहन लो.... वहाँ, कुरसी पर पड़े हैं....

नीलू—क्या मैं केवल कमीज पहने अपना लंबा सफर करता रहा ?

माँ—कौन सफर ?

नीलू—पिछले साल-भर का सफर !....

माँ—पिछले साल ?

नीलू—अरे, तुम्हें मालूम नहीं है क्या ?.... बड़े दिन को चला गया था....

माँ—चले गये थे तुम ?.... अरे, इस कमरे से बाहर तक नहीं निकले.... कल शाम को तुम्हें सुलाया है मैंने, और आज सुबह तुम यहीं हो.... स्वप्न देखते रहे, क्या ?

नीलू—तुम नहीं समझती हो !.... पिछले साल मैं चला गया था, नीली, परी और ज्योति के साथ.... ज्योति बड़ी अच्छी है ! रोटी, चीनी, जल और अनल, ये तो झगड़ा करते रहते हैं.... तुम्हें गुस्सा तो नहीं हुआ था ?.... क्या बहुत उदास रहीं ?.... पिताजी ने क्या कहा था ?.... मैं जाने से इनकार नहीं कर सकता था.... जाने के पहले चिट्ठी लिखकर छोड़ दिया था....

माँ—तुम क्या-क्या बक रहे हो ?.... जरूर बीमार हो, शायद अबतक सो रहे हो.... (उसे प्रेम से झकझोरते हुए) अरे, होश में आ जाओ.... अभी ठीक है न ?

नीलू—माँजी, सच कहता हूँ.... तुम्हीं अबतक सो रही होगी....

माँ—क्या ! मैं अबतक सो रही हूँ ?.... चार बजे से जागती हूँ.... घर का सारा काम कर लिया, आग जलाई........

नीलू—नीली से पूछ लो न,.... हमलोगों ने क्या-क्या नहीं देखा !!

माँ—नीली ? यह सब क्या है ?

नीलू—नीली मेरे साथ थी.... हम दादा और दादी से मिले ....

माँ (घबराकर)—दादा और दादी से ?

नीलू—हाँ, स्मृति-प्रदेश में.... हमें उधर जाना ही था.... मर गये हैं, लेकिन अच्छी

तरह से हैं.... दादी ने हमारे लिए अच्छा खाना पकाया था.... और भाई-बहनों से मिले हम—रवि, मोहन, विजय, उसकी फिरकी, मंजुला, सुधा, आशा और रेखा....

नीली—रेखा, आजकल भी घुटरूँ चलती है।

नीलू—आशा की नाक पर अब भी वहीं मसा है।

नीली—कल शाम को तुम्हें भी देख लिया, हमलोगों ने....

माँ—कल शाम को ? इसमें क्या अचरज है ? तुम दोनों को सुलाया है मैंने....

नीलू—यहाँ पर नहीं, सुखों के उद्यान में। तुम ज्यादा खूबसूरत थीं, फिर भी मिलता-जुलता चेहरा था....

माँ—सुखों का उद्यान ? मैं उसे जानती भी नहीं....

नीलू (उसे ध्यान से देखते हुए, तब गले लगाते हुए)—हाँ, तुम ज्यादा खूबसूरत थीं, परन्तु तुम्हें ऐसे ही और अधिक प्यार करता हूँ।

नीली (उसे भी छाती लगाती हुई)—मैं भी, मैं भी।

माँ (प्रेम विह्वल, लेकिन घबराती हुई)—हे परमेश्वर ! इन्हें क्या हो गया है ?....ये दूसरे बच्चों के सामान मर ही जायँगे !! (अचानक बहुत ही घबराकर पति को पुकारती है) ऐ जी, सुनते हैं !! जल्दी आइए, बच्चे बीमार हैं।

[कुल्हाड़ी हाथ में लिये बच्चों के पिता का प्रवेश]

पिता—(शांत मुद्रा में) बात क्या है ?

नीलू और नीली (पिता को गले लगाने के लिए खुशी से दौड़ते हुए)—पिताजी ! पिताजी !! प्रणाम !.... इस वर्ष का काम सब ठीक रहा ?

पिता—यह क्या है ? आखिर क्या बात है ? वे तो बीमार नहीं हैं, उल्टे तन्दुरुस्त ही मालूम होते हैं....

माँ (रुँआसी होकर)—इससे क्या ?....दूसरे बच्चे ऐसे ही थे....वे भी अंततक तन्दुरुस्त मालूम पड़ते थे; फिर भी ईश्वर उन्हें ले गया है.... न जाने उन्हें क्या हो गया है.... कम शाम को बिलकुल ठीक थे और आज सुबह उनका दिमाग ठिकाने नहीं है.... उन्हें मालूम नहीं है कि क्या कह रहे हैं, एक सफर की बात करते जाते हैं.... उन्होंने ज्योति को देख लिया, दादा और दादी से भी मिले, जो मर गये, लेकिन अच्छी तरह से हैं....

नीलू—लेकिन दादा अब भी लँगड़ाता है;

नीली—और दादी को गठिया की तकलीफ है....

माँ—सुनते हो न ? दौड़कर डाक्टर को बुलाओ !

पिता—नहीं, नहीं.... अरे, ये अभी थोड़े ही मरे जा रहे हैं.... जरा-सा देख लें.... (घर के दरवाजे पर खटखटाहट) आइए !

[पड़ोसिन का प्रवेश। बुढ़िया है, जो प्रथम अंक की परी से कुछ समानता रखती है और लाठी के सहारे चलती है]

पड़ोसिन—नमस्ते, बड़े दिन की बधाइयाँ !

नीलू—यह तो वैजयन्ती परी है !

पड़ोसिन—परब का खाना तैयार करने के लिए आग लेने आई हूँ.... आज सुबह काफी जाड़ा है न ?.... अरे, बेटा ! सब ठीक है न !

नीलू—परी वैजयन्ती महोदया ! मुझे नील-पंछी मिल ही नहीं सका....

पड़ोसिन—यह क्या कह रहा है ?

माँ—श्रीमती विजया, परेशानी है.... वे दोनों जानते ही नहीं कि क्या कह रहे हैं.... आज जाग उठने के बाद ही दोनों को ऐसा पा रही हूँ....कल शाम को उन्होंने कुछ खाया होगा, जो पचा नहीं....

पड़ोसिन—क्यों नीलू मुझे पहचानते नहीं ? मैं तुम्हारी पड़ोसिन हूँ, विजया दादी....

नीलू—पहचानता हूँ, श्रीमतीजी.... आप परी वैजयन्ती हैं.... आप तो नाराज नहीं हैं ?

पड़ोसिन—क्या कहा ?.... वैज....

नीलू—वैजयन्ती।

पड़ोसिन—तुम्हारा मतलब है विजया, से न ?

नीलू—वैजयन्ती या विजया, जैसा आप चाहती हैं, लेकिन नीली खूब अच्छी तरह से जानती है....

माँ—यह तो और भी बुरा है कि नीली भी....

पिता—अरे, कोई बात नहीं है; दो एक थप्पड़ मारकर उन्हें ठीक कर दूँगा....

पड़ोसिन—जाने दीजिए, कुछ नहीं है.... मैं समझ गई; दोनों ने स्वप्न देखा होगा .... चाँदनी लग गई होगी.... मेरी बच्ची जो बीमार है अक्सर ऐसी ही बातें करती है।

माँ—कहिए, आपकी बच्ची कैसी है ?

पड़ोसिन—सख्त बीमार नहीं है.... किन्तु पलंग से उठ नहीं सकती.... डाक्टर साहब कहते हैं, स्नायु की बीमारी हैं.... फिर भी मैं इसकी दवा जानती हूँ.... आज सुबह वह उसे माँग रही थी, बड़े दिन के उपहार के लिए; वह समझती है....

माँ—हाँ, हाँ, जानती हूँ; वही होगा, नीलू का पच्छी....सुनो, नीलू, आखिर तुम इस बेचारी को अपना पच्छी दे क्यों नहीं देते।

नीलू—क्या दे दूँ, मा ?

माँ—अपना पच्छी....वह तुम्हारे लिए किसी काम का नहीं रह गया है। आँख उठा कर उसकी ओर देखते भी नहीं....वह बेचारी कबसे इसके लिए तरस रही है....

नीलू—मेरा पच्छी ?....वह कहाँ है ?....ओ ! पिंजरा वहाँ है ! नीली, पिंजरा देखती हो ?....वही तो रोटी के पास था....हाँ, हाँ, बिलकुल वही है; केवल एक ही पच्छी रह गया है....उसने दूसरों को खाया होगा—देखो, देखो....वह तो नीला है !....फिर भी मेरा ही है !....लेकिन पहले से बहुत अधिक नीला है !.... यही नील-पंछी, जिसे हम खोजते रहे !....हम दूर-दूर भटक गये और वह यहीं था !....वाह ! आश्चर्य की बात है !....नीली, पच्छी को देखती हो ?....अगर ज्योति यहाँ होती तो क्या कहती ?....पिंजरा उतारता हूँ....[कुरसी पर चढ़कर वह

पिंजरा उतारता और पड़ोसिन को देता है]—लीजिए, श्रीमती विजया....अबतक पूरी तरह नीला नहीं है, लेकिन जरूर बन जायगा....उसे जल्दी ही अपनी पुत्री के पास ले जाइए....

पड़ोसिन—सच ? तुम उसे यों ही मुफ्त में देते हो ?....ओ, वह कितनी खुश होगी !....(नीलू को छाती लगाती हुई) तुम्हें गले लगाती हूँ ! अब जाती हूँ !....

नीलू—हाँ, आप जल्दी जाइए....कुछ पक्षियों का रंग बदल जाता है।

पड़ोसिन—बाद में तुम्हें बताने आऊँगी कि बच्चों ने क्या-क्या कहा है....(जाती है)

नीलू—(देर तक अपने चारों ओर निहारते हुए) पिताजी ! माताजी !....आपलोगों ने हमारे मकान का क्या किया है ?....वही तो है, लेकिन पहले से कहीं अधिक सुंदर है....

पिता—क्यों ? अधिक सुंदर ?

नीलू—और क्या ! रंग नया है, सब चीजें नई हैं, सब कुछ चमकता है, सब कुछ साफ है....पिछले साल ऐसा नहीं था....

पिता—पिछले साल ?

नीलू—(खिड़की के पास जाकर) देखो, वन का दृश्य ! कितना बड़ा है, कितना सुन्दर ! बिलकुल नया मालूम होता है !....हम यहाँ कितने खुश हैं !....(आलमारी खोलते हुए) रोटी कहाँ है ?....अरे, ये तो बहुत चुप हैं.... और मोती ! नमस्ते, मोती ! खूब लड़ाई हुई न, जंगल में ? याद है न ?

नीली—बिल्ली को देख लो !....वह मुझे पहचानती तो है, लेकिन बोलती नहीं !....

नीलू—रोटीजी ! नमस्कार !! (सिर पर हाथ रखकर) ओ, मणि नहीं रह गई ! मेरी हरे रंग की टोपी कहाँ है ?....खैर, इसकी मुझे जरूरत नहीं रह गई है....अरे, अनल !....वह बड़ा अच्छा है !....जल को चिढ़ाने के लिए वह मुस्कराते हुए चिरकता है....(नल के पास जाकर)और, जल ! नमस्कार !.... वह क्या कह रहा है ?....वह बोलता ही जाता है लेकिन अब उसे समझ नहीं पा रहा हूँ....

नीली—चीनी कहाँ है ?

नीलू—ओ ! ओ ! मैं खुश हूँ ! खुश हूँ !!

नीली—मैं भी, मैं भी।

माँ—आखिर, इन्हें क्या हो गया है ?

पिता—जाने दो, घबराओ मत,....खुश होने का तमाशा दिखला रहे हैं।

नीलू—मैं खास करके ज्योति को पसन्द करता था....उसका दीपक कहाँ है ?....उसे जलाया जाय, क्या ?

(अपने चारों ओर देखते हुए) ओ, यह सब कितना अच्छा लग रहा है और मैं कितना खुश हूँ !....

[घर के द्वार पर खटखटाहट]

पिता—आइए !....

[**अपनी पुत्री का हाथ पकड़े, पड़ोसिन का प्रवेश। बच्ची गोरी और सुन्दर है; गोद में नीलू का पक्षी है**]

पड़ोसिन—करामात देख लीजिए !....

माँ—अरे !! वह चल-फिर सकती है।

पड़ोसिन—चल फिर सकती है !....दौड़ती है, नाचती है ! उड़ती है !....पक्षी को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और खिड़की के पास जाकर अच्छी तरह देख लिया, नीलू का पक्षी है कि नहीं....इसके बाद !....झटपट घर से निकली.... उसके पीछे-पीछे दौड़ती हुई यहाँ आई....

नीलू (**आश्चर्यचकित उसके पास आकर**)—ओ ! वह बिलकुल ज्योति के समान मालूम होती है....

नीली—उससे बहुत छोटी है....

नीलू—जरूर, लेकिन बढ़ेगी न !

पड़ोसिन—ये क्या कह रहे हैं !....उनका दिमाग अबतक ठिकाने नहीं है ?

माँ—कम होता जा रहा है....नाश्ता करने के बाद ठीक हो जायगा....

पड़ोसिन (**अपनी पुत्री को नीलू के पास ले जाती हुई**)—अरे, बच्ची, नीलू का शुक्रिया अदा करो....

[**नीलू अचानक एक कदम पीछे हट जाता है**]

माँ—नीलू! यह क्या है ?....तुम्हें बच्ची से तो डर नहीं है ?....उसका चुम्बन करो.... हाँ, ठीक है....तुम तो संकोच करनेवाले नहीं हो....और एक बार !....अरे, तुम्हें क्या हो गया है ? ऐसा लग रहा है कि तुम सोने लगोगे....

[**नीलू बेढंगे तौर पर बच्ची का चुम्बन करने के बाद उसके सामने खड़ा रह जाता है; दोनों एक दूसरे को मौन रूप से देखते रहते हैं; बाद में नीलू पक्षी पर हाथ फेरते हुए कहता है**]

नीलू—उसका नीला रंग ठीक है न ?

बच्ची—ठीक है, मैं बहुत खुश हूँ....

नीलू—इससे और नीले पक्षियों को देख लिया, मैंने....लेकिन जो बिलकुल नीले हैं, उन्हें किसी भी तरह से नहीं पकड़ा जा सकता है।

बच्ची—कोई हर्ज नहीं, यह बड़ा अच्छा है....

नीलू—उसे खिलाया है ?

बच्ची—अबतक नहीं....वह खाता क्या है ?

नीलू—बहुत चीजें खाता है, गेहूँ, रोटी, मकई, झींगुर....

बच्ची—बताओ, यह कैसे खाता है ?

नीलू—चोंच से, देखो, दिखलाता हूँ....

[**वह बच्ची के हाथों से पक्षी को लेने के लिए उसकी ओर बढ़ता है; वह देने से इनकार करती है। इसी छीनाझपटी में पक्षी उड़कर कमरे से बाहर निकल**

जाता है]

बच्ची (निराशपूर्ण चीख मारकर)—माताजी !....चला गया। (फूट-फूटकर रोने लगती है)

नीलू—अरे, इससे क्या ....रोओ मत....उसे फिर पकड़ लूँगा....(रंगमंच के किनारे तक पहुँच कर दर्शकों को संबोधित करते हुए) अगर आपलोगों में से कोई उसे पकड़ सका, तो उसे हमें वापस कर देने की कृपा करें....आगे की खुशी के लिये हमें इसकी जरूरत है....

[पटाक्षेप]

शुद्धि-पत्र

निम्नलिखित पंक्तियों में चिह्नित शब्द शुद्ध पाठ हैं।

पृष्ठ	पंक्ति	
५	४	या उस मार्ग से या इधर से चले जाओगे ?
२४	९	मेरी अधिकांश बीमारियों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है....
२४	२४-२५	मैंने रात्रि को आपके आने का समाचार दे दिया है।
२७	७	वे अस्वस्थ और निरुत्साह हैं।
२७	१०	आपकी बीमारियाँ बहुत कमजोर मालूम पड़ती हैं....
२८	४	अवश्य....बीमारियों की तरह वे....
३०	२९	आसानी से पकड़ में आ रहे हैं।
३२	७-८	वह नील-पंछी की खोज में है, जिसे आपलोगों ने सृष्टि के आरंभ से मनुष्य से छिपा रखा है वह नीलू हमारा रहस्य जानता है।
३२	१६-१७	कहिए, नील-पंछी आपके पास है, न ? (पत्तों का मर्मर) क्या कहा ?....
३२	उपांतिम	हाँ सब खरगोश के ढोल की आवाज
३८	१४-१५	आपको हमें मुक्त करने का श्रेय मिलना चाहिए
४१	१७	मैंने कहा था न कि मेरे न रहने पर
४१	२८	अब कुछ नहीं दिखाई देता है।
४७	१६	चुप रहो तुम ! तुम्हें कौन पूछता है।
५०	२६	इतने अच्छे मेजवानों को अचानक....
५६	२	स्वप्न में भी नहीं सोचा था मैंने
६६	२६	एक हाथ में दराँती है
६७	१२	जो अन्याय का विरोध करे; तुम्ही हो ! जाना ही होगा
७१	१५	ज्यों का त्यों प्रत्यर्पित कर देती हूँ।
७५	११	जीभ निकालकर दिखला दो
७८	२४	मुस्कराते हुए थिरकता है
७९	२१	ऐसा लग रहा है कि तुम रोने लगोगे।

निम्नलिखित सामग्री छूट गई है

९	५ के बाद	परी—वह तो दूध है। इसका वर्त्तन टूट गया है।
३४	१५ के बाद	नीम—मुझे याद नहीं है कि उन्हें देखा है। सेमर—जरूर पहचानते होगे।....तुम सब मनुष्यों को पहचानते हो। तुम तो उनके घरों के आस पास रहते ही हो।